राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

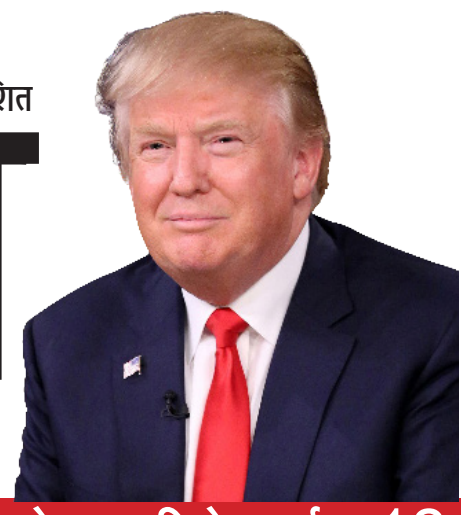

10 एलन मस्क ने एक्स यूजर्स के लिए भारत और वैश्विक स्तर पर ...

ट्रंप ने पनामा नहर वापस लेने की धमकी दी, पनामा के राष्ट्रपति ने जताई ... 12

वर्ष : 15 | अंक : 248 | नई दिल्ली, मंगलवार, 24 दिसंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 21°C

न्यूनतम तापमान 30.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 79,005

चांदी 92,500

सेंसेक्स 81,786

निफ्टी 24,668

भारतीय वायुसेना में पायलटों की भारी कमी, कैग की रिपोर्ट से हुआ खुलासा

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय वायुसेना में इन दिनों पायलटों की भारी कमी है। इससे ऑपरेशनल रेडिनेस की तैयारी में दिक्कत होगी। यानी अचानक से कई फ्रंट पर जरूरत पड़ जाए, वायुसेना के पास पायलट कम हैं। इसका खुलासा किया है कॉम्पट्रोलर एंड ऑडिटर जनरल (कैग) ऑफ इंडिया ने किया है। इस पर रक्षा मामलों की संसदीय समिति ने भी अपनी चिंता जाहिर की है। कैग ने अपनी रिपोर्ट में इंडियन एयरफोर्स में पायलटों की कमी के आंकड़ें बताए हैं। फरवरी 2015 में 486 पायलटों की कम थी। जो 2021 के अंत तक 596 हो गई।

जबकि 2016 से 2021 के बीच 222 ट्रेनी पायलटों को भर्ती करने का प्लान था। लेकिन वायुसेना टारगेट पूरा नहीं कर सकी। अब स्थिति गंभीर हो गई है। जानकार का मानना है कि पायलटों की भर्ती में कई प्रकार की चुनौतियां होती हैं। इसलिए ये कमी महसूस की जा रही है।

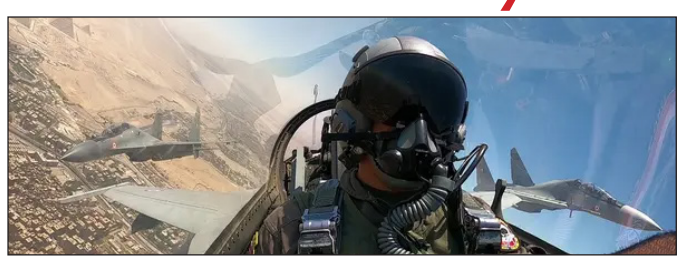

कॉमर्शियल एविएशन सेक्टर तेजी से बढ़ रहा है। घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों में पैकेज ऑफर बहुत ज्यादा हैं। लाइफस्टाइल संतुलित और स्थिर है। अनुभवी मिलिट्री पायलट्स सर्विस से निकल कर वहां जा रहे हैं।

42 स्क्वॉड्रन चाहिए, हैं सिर्फ 31 ही

संसदीय समिति ने देखा कि पायलट-टू-सीट रेशियो 1.25:1 प्रत्येक फाइटर जेट के लिए हैं। शांति के समय ये आंकड़ा ठीक है। लेकिन जब जंग की स्थिति होगी तब ये स्थिति गंभीर हो सकती है। इसके साथ ही वायुसेना वर्तमान में 31 स्क्वॉड्रन्स के साथ अपनी ड्यूटी परफॉर्म कर रही है। नए एयरक्राफ्ट्स के आने और पुराने को हटाने में समय लग रहा है। इसकी वजह से भारतीय वायुसेना की एरियल कॉम्बैट कैपेबिलिटी कमतर होती चली जाएगी। कैग और संसदीय समिति की रिपोर्ट ने तत्काल और तेजी से इन दोनों दिशाओं की तरफ मोदी सरकार को कदम उठाने को कह चुकी है। वायुसेना ने एयरफोर्स कॉमन एडमिशन टेस्ट (एफसीएटी) और एयर फोर्स सेलेक्शन बोर्ड (एएफएसबी) ने रिक्रूटमेंट प्रोसेस को तेज किया है। इस डिजिटल कैंपने दिशा के तहत नई शुरूआत दी गई है।

संक्षिप्त खबरें

उपराष्ट्रपति धनखड़, प्रधानमंत्री मोदी, केंद्रीयमंत्री जयंत, भाजपा ने किसान नेता चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि दी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीयमंत्री जयंत चौधरी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने आज पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की। धनखड़ और जयंत ने नई दिल्ली के किसान घाट पहुंचकर पूर्व प्रधानमंत्री को पुष्पांजलि अर्पित की। भाजपा ने भी एक्स हैंडल पर चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि दी। भाजपा ने लिखा, ''किसानों की आवाज बुलंद करने वाले प्रखर नेता, भारत रत्न से अलंकृत पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती 'किसान दिवस' पर शत-शत नमन।'' प्रधानमंत्री मोदी ने पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण और सेवाभाव हर किसी को प्रेरित करता रहेगा।

महत्वपूर्ण खबर

'नो डिटेंशन पॉलिसी' खत्म, अब कक्षा 5 और 8वीं की परीक्षा में असफल छात्र होंगे फेल

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने सोमवार को नो डिटेंशन पॉलिसी को खत्म कर दिया है। इस फैसले के तहत अब कक्षा 5 और 8 की वार्षिक परीक्षा में असफल छात्रों को फेल किया जाएगा। स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सचिव संजय कुमार ने केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के फैसले की जानकारी दी है। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बताया कि आज हमने यह निर्णय लिया है कि पांचवीं और आठवीं में प्रयास करने के बाद भी डिटेंशन की जरूरत पड़े तो उसी के बाद डिटेन किया जाए। इसमें यह भी प्रावधान किया है आठवीं कक्षा तक के स्कूलों से बच्चों को निष्कासित नहीं किया जाए। उन्होंने आगे कहा, हम चाहते हैं कि हर एक बच्चे के अंदर सीखने की इच्छा बढ़े और इसको प्रयास में लाने के लिए उन बच्चों पर ध्यान दिया जाएगा।

दिव्यांगजनों के दिव्य कला मेला में 3.5 करोड़ रुपये के सामान की बिक्री: सरकार

नईदिल्ली। दिव्यांग लोगों (पीडब्ल्यूडीएस) द्वारा संचालित दिव्य कला मेला में 3.5 करोड़ रुपये के सामान की बिक्री हुई है। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय ने यह जानकारी दी। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (डीईपीडब्ल्यूडी) द्वारा आयोजित 11 दिवसीय कार्यक्रम दिव्यांगजनों की रचनात्मकता और उद्यमशीलता की भावना का उत्सव था। रविवार को 22वें दिव्य कला मेले के समापन दिवस पर राष्ट्रीय दिव्यांगजन वित्त एवं विकास निगम (एनडीएफडीसी) द्वारा दिव्यांग उद्यमियों और व्यक्तियों को ऋण तक निर्बाध पहुंच प्रदान करने के लिए एक मोबाइल एप्लीकेशन लॉन्च किया गया।

डेढ़ साल में 10 लाख युवाओं को दी गई पक्की सरकारी नौकरियां : प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री रोजगार मेले में 71 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश अब उस दिशा में आगे बढ़ चुका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के युवाओं के सामर्थ्य और प्रतिभा का भरपूर उपयोग सरकार की प्राथमिकता है। रोजगार मेलों के जरिए लगातार इस दिशा में काम किया जा रहा है। पिछले 10 वर्षों से सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और संस्थानों में सरकारी नौकरी देने का अभियान चल रहा है।

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को रोजगार मेले में 71 हजार से अधिक युवाओं को वर्चुअली नियुक्ति पत्र सौंपने के बाद कहा कि उनकी सरकार ने पिछले एक-डेढ़ साल में लगभग 10 लाख युवाओं को पक्की सरकारी नौकरियां प्रदान की हैं। प्रधानमंत्री आज नवनियुक्त अभ्यर्थियों के नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को उनकी जयंती पर नमन करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि ये हमारी सरकार का सौभाग्य है कि हमें इसी साल चौधरी साहब को भारत रत्न से सम्मानित करने का अवसर मिला। आज के दिन को हम किसान दिवस के रूप में मनाते हैं। प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के लिए युवा प्रतिभा को और निखारने की जरूरत बताते हुए कहा कि भारत ने 2047 तक विकसित भारत के निर्माण का संकल्प लिया है। देश में सही मायने में विकास सुनिश्चित करने के लिए हमें युवा प्रतिभा को और निखारना होगा। यह जिम्मेदारी वास्तव में शिक्षा व्यवस्था पर है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश अब उस दिशा में आगे बढ़ चुका है। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश के युवाओं के सामर्थ्य और प्रतिभा का भरपूर उपयोग सरकार की प्राथमिकता है। रोजगार मेलों के जरिए लगातार इस दिशा में काम किया जा रहा है। पिछले 10 वर्षों से सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों और संस्थानों में सरकारी नौकरी देने का अभियान चल रहा है। आज भी 71 हजार से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। बीते एक डेढ़ साल में करीब 10 लाख युवाओं को हमारी सरकार ने पक्की सरकारी नौकरी दी है और ये अपने आप में बहुत बड़ा रिकॉर्ड है। पहले की किसी भी सरकार के समय इस तरह मिशन मोड में युवाओं को भारत सरकार में पक्की नौकरी नहीं मिली है लेकिन आज देश में न केवल लाखों युवाओं को सरकारी नौकरियां मिल रही हैं बल्कि ये नौकरियां पूरी ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ दी जा रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि वह कल देररात ही कुवैत से लौटे है और वहां उनकी भारत के युवाओं और प्रोफेशनल्स से काफी बातें हुईं। अब यहां आने के बाद पहला कार्यक्रम देश के नौजवानों के साथ हो रहा है। उन्होंने इसे एक सुखद संयोग बताया। उन्होंने कहा कि रोजगार मेले युवाओं को सशक्त बना रहे हैं और उनकी क्षमता को उजागर कर रहे हैं। आज देश के हजारों युवाओं के लिए जीवन की एक नई शुरूआत हो रही है। आपका वर्षों का सपना पूरा हुआ है, वर्षों की मेहनत सफल हुई है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 2024 का गुजरता साल आपको और आपके परिवार को नई खुशियां देता हुआ जा रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले दशक की नीतियों को देखें। मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत अभियान, स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, डिजिटल इंडिया, हर योजना युवाओं को केंद्र में रखकर बनाई गई है। भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी नीतियों में बदलाव किया। भारत ने अपने रक्षा क्षेत्र में मैन्यूफैक्चरिंग को बढ़ावा दिया और इसका सबसे ज्यादा लाभ युवाओं को हुआ। आज भारत का युवा नए आत्मविश्वास से भरा हुआ है। आज हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम बन गया है। आज जब कोई युवा अपना स्टार्टअप शुरू करने का फैसला करता है, तो उसे समर्थन देने के लिए पूरा इकोसिस्टम मिल जाता है। आज जब कोई युवा खेलों में अपना करियर बनाने की योजना बनाता है, तो उसे विश्वास होता है कि वह असफल नहीं होगा। आज खेलों में प्रशिक्षण से लेकर टूर्नामेंट तक हर कदम पर युवाओं के लिए आधुनिक व्यवस्थाएं की जा रही हैं। आज हम कितने ही क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन देख रहे हैं। आज भारत मोबाइल मैन्यूफैक्चरिंग में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। आज अक्षय ऊर्जा से लेकर जैविक खेती तक, अंतरिक्ष क्षेत्र से लेकर रक्षा क्षेत्र तक, पर्यटन से लेकर वेलनेस तक, हर क्षेत्र में देश नई ऊंचाइयों को छू रहा है। उल्लेखनीय है कि रोजगार मेला रोजगार सृजन को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता को पूरा करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह युवाओं को राष्ट्र निर्माण और आत्मसशक्तीकरण में उनकी भागीदारी के लिए सार्थक अवसर प्रदान करता है। रोजगार मेला देशभर में 45 स्थलों पर आयोजित किया गया। केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के लिए भर्तियां हो रही हैं। देशभर से चयनित नए कर्मचारी गृह मंत्रालय, डाक विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग सहित विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में शामिल होंगे।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 'प्रगति यात्रा' पर हुए रवाना

मुख्यमंत्री इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में जाएंगे और लोगों की राय भी जानेंगे। इस दौरान वह करोड़ों की योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन भी करेंगे। इस बीच वह विकास कार्यों को लेकर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक भी करेंगे।

प्रात : किरण/ एजेंसी

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सोमवार को अपनी प्रगति यात्रा पर रवाना हो गए। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपनी यात्रा की शुरूआत वाल्मीकिनगर से करेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार प्रगति यात्रा के लिए पटना से रवाना हुए। उनके साथ कई मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी भी बेतिया गए हैं। बताया गया कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपनी यात्रा की शुरूआत बेतिया के वाल्मीकि नगर के घोटवा टोला से करेंगे।

मुख्यमंत्री इस दौरान विभिन्न क्षेत्रों में जाएंगे और लोगों की राय भी जानेंगे। इस दौरान वह करोड़ों की योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन भी करेंगे। इस बीच वह विकास कार्यों को लेकर अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक भी करेंगे। मुख्यमंत्री अपनी यात्रा के क्रम में जीविका समूह की महिलाओं से भी संवाद करेंगे। मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर इलाके में सुरक्षा के तगड़े प्रबंध किए गए हैं। क्षेत्र में अतिरिक्त पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है। यात्रा के पहले चरण में मुख्यमंत्री 23 से 28 दिसंबर तक छह जिलों में जाएंगे। कार्यक्रम के अनुसार मुख्यमंत्री नीतीश 24 दिसंबर को पूर्वी चंपारण, 26 को शिवहर-सीतामढ़ी, 27 को मुजफ्फरपुर और 28 दिसंबर को वैशाली का दौरा करेंगे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा के दौरान समीक्षा बैठक में 23 और 24 दिसंबर को नौ विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचिव और सचिव उपस्थित रहेंगे। इन विभागों में शिक्षा, राजस्व एवं भूमि सुधार, पथ निर्माण, ग्रामीण कार्य, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण, ऊर्जा, स्वास्थ्य, सहकारिता और ग्रामीण विकास विभाग शामिल हैं। कई अधिकारी वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए भी बैठक में शामिल होंगे। अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के पूर्व मुख्यमंत्री की इस यात्रा को एनडीए के लिए काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

आयोग ने यह भी कहा है कि राज्य में पहले भी ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं

एनएचआरसी ने बिजली का झटका लगने से दो श्रमिकों की मौत को लेकर तमिलनाडु सरकार से मांगा जवाब

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने त्रिची में बिजली का झटका लगने से दो श्रमिकों की मौत पर तमिलनाडु के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी कर दो सप्ताह के अंदर इस मामले में विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। आशा व्यक्त की गई है कि रिपोर्ट में इस घटना के संबंध में दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) की स्थिति और दोनों पीड़ितों के परिजनों को दिए गए मुआवजे (यदि कोई हो) के बारे में विवरण को शामिल किया जाएगा।

आयोग ने यह भी जानकारी मांगी है कि राज्य सरकार और तमिलनाडु उत्पादन एवं वितरण निगम (टैंगेडको) ने वे कौन-से कदम उठाए व प्रस्तावित किए हैं ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। प्रारंभिक जांच के अनुसार, मरम्मत कार्य के दौरान केबल की विद्युत आपूर्ति पूरी तरह से बंद नहीं की गई थी। कर्मचारी सुरक्षात्मक उपकरणों के बिना ही काम कर रहे थे। पिछले साल तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में इसी तरह की एक घटना में ट्रांसफार्मर की मरम्मत करते समय एक कर्मचारी की करंट लगने से मृत्यु हो गई थी। आयोग ने तमिलनाडु के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी कर दो सप्ताह के अंदर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। आशा व्यक्त की गई है कि रिपोर्ट में इस घटना के संबंध में दर्ज प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) की स्थिति और दोनों पीड़ितों के परिजनों को दिए गए मुआवजे (यदि कोई हो) के बारे में विवरण को शामिल किया जाएगा।

आयोग ने यह भी जानकारी मांगी है कि राज्य सरकार और तमिलनाडु उत्पादन एवं वितरण निगम (टैंगेडको) ने वे कौन-से कदम उठाए व प्रस्तावित किए हैं ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। प्रारंभिक जांच के अनुसार, मरम्मत कार्य के दौरान केबल की विद्युत आपूर्ति पूरी तरह से बंद नहीं की गई थी। कर्मचारी सुरक्षात्मक उपकरणों के बिना ही काम कर रहे थे। पिछले साल तमिलनाडु के थूथुकुडी जिले में इसी तरह की एक घटना में ट्रांसफार्मर की मरम्मत करते समय एक कर्मचारी की करंट लगने से मृत्यु हो गई थी।

मध्य प्रदेश : रीवा के जल प्रबंधन में मदद करेगा इजरायल

प्रात : किरण/ एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश के रीवा नगर निगम में बेहतर जल प्रबंधन में इजरायल मदद करेगा। राज्य के उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल से सोमवार को यहां अपने आवास पर इजरायली प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की और बेहतर जल प्रबंधन तथा वितरण नेटवर्क सुदृढीकरण पर अपने अनुभव साझा किए। उपमुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि जल प्रबंधन के मामले में इजरायल का नाम विश्व में विख्यात है। उनके अनुभव, प्रयासों और सुझावों से रीवा नगर निगम क्षेत्र में बेहतर जल प्रबंधन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि रीवा शहर में जल वितरण प्रणाली को लीकेज प्रूफ बनाने के साथ हर घर में शुद्ध जल पहुंचना सुनिश्चित करना है। जल संग्रहण के साथ जल का संवर्धन भी भविष्य की मांग पूरी करने के लिए आवश्यक है। जल को उपचारित कर पुनः प्रयोग करना समय की मांग है और पर्यावरण अनुसंगत है। इजरायली प्रतिनिधिमंडल ने बेहतर जल प्रबंधन और वितरण नेटवर्क को मजबूत बनाने पर अपने अनुभव साझा किए। उसने बताया कि जल संसाधन प्रबंधन के लिए कृत्रिम और प्राकृतिक संसाधनों की पहचान महत्वपूर्ण है। अपशिष्ट जल का पुन उपयोग शामिल है। प्राकृतिक तरीकों में वर्षा जल संग्रहण, भूजल पुनर्भरण, झील और भूजल निगरानी, और बाढ़ जल संग्रहण शामिल हैं। प्रभावी प्रबंधन के लिए संरक्षण और पुनः प्राप्ति सुनिश्चित कर जल संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित किया जा सकता है। बताया गया है कि इजरायल वॉटर अटैशे दोनों देशों के बीच जल संसाधन प्रबंधन, तकनीकी सहयोग और अनुसंधान में साझेदारी मजबूत करने का कार्य करते हैं। जल संरक्षण, पुनर्चक्रण और कुशल सिंचाई तकनीकों जैसे क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान का आदान-प्रदान करते हैं। इसके साथ ही, जल सुरक्षा, जल प्रदूषण नियंत्रण और नीति निर्माण में सहयोग प्रदान करते हैं।

मानवाधिकार आयोग ने तमिलनाडु के मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक को नोटिस किया जारी

प्रात : किरण/ एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने त्रिची में बिजली लाइनों की मरम्मत करते समय तमिलनाडु उत्पादन एवं वितरण निगम के दो श्रमिकों की बिजली का झटका लगने से हुई मृत्यु की घटना का स्वतः संज्ञान लेते हुये, राज्य के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी किया है। आयोग की ओर से सोमवार को जारी विज्ञप्ति के अनुसार, मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को इस मामले में दो सप्ताह के अंदर विस्तृत रिपोर्ट देने के लिये कहा गया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, गत 18 दिसंबर, 2024 को तमिलनाडु उत्पादन एवं वितरण निगम (टैंगेडको) के दो श्रमिक त्रिची के के.के. नगर में ओलैयूर रिंग रोड के पास एक हाई टेंशन ओवरहेड बिजली लाइन की मरम्मत कर रहे थे और बिजली आपूर्ति भी पूरी तरह बंद नहीं थी। उसी दौरान, दोनों श्रमिकों की बिजली का झटका लगने से मृत्यु हो गयी।

सुधार एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम मनरेगा कार्यों के निरीक्षण कार्यों में उत्तर प्रदेश सबसे आगे

तकनीक के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यों की गुणवत्ता में सुधार पर जोर दे रही योगी सरकार

2024-25 में अब तक हुए 1.25 लाख से अधिक निरीक्षण

प्रात : किरण/ एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन के लिए चल रही महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) योजनाओं की सटीक निगरानी सुनिश्चित करने हेतु अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रही है। योगी सरकार के इस प्रयास के तहत एरिया ऑफिसर ऐप की शुरूआत की गई है। इस ऐप के माध्यम से मनरेगा योजनाओं के प्रगतिशील कार्यों की गुणवत्ता और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सीएम योगी के नेतृत्व में प्रदेश न केवल मनरेगा के तहत रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास में आगे है, बल्कि एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम से कार्यों के निरीक्षण में यह देशभर में अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श मॉडल बन रहा है।

एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम से मनरेगा योजनाओं की निगरानी को सशक्त बनाया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से निरीक्षण के दौरान अधिकारी कार्यस्थलों की तस्वीरें और अन्य आवश्यक विवरण तुरंत अपलोड करते हैं। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित होता है कि योजनाओं के तहत हो रहे कार्य सही समय पर और निर्धारित मानकों के अनुरूप पूरे हो रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर इस ऐप का उपयोग प्रभावी तरीके से किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पारदर्शिता और कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि हो रही है। मनरेगा के अंतर्गत प्रदेश में लाखों मजदूर कार्यरत हैं, और यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत है। योजना के तहत विभिन्न प्रकार के विकास कार्य जैसे तालाब निर्माण, सड़क निर्माण, और वृक्षारोपण आदि चल रहे हैं। इन कार्यों की नियमित निगरानी के लिए एरिया ऑफिसर ऐप एक क्रांतिकारी पहल साबित हो रही है।

एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम से निरीक्षण में उत्तर प्रदेश सबसे आगे

ग्राम्य विकास विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश ने मनरेगा योजनाओं के निरीक्षण के मामले में देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रदेश ने 1.50 लाख से अधिक निरीक्षण कर अपने निर्धारित लक्ष्य को पार किया। वहीं, इस वर्ष अब तक 1.25 लाख निरीक्षण किए जा चुके हैं, जो कि निर्धारित लक्ष्य 99,480 से कहीं अधिक हैं। देशभर में उत्तर प्रदेश मनरेगा निरीक्षण में अग्रणी है। आंध्र प्रदेश दूसरे और बिहार तीसरे स्थान पर हैं। वित्तीय वर्ष 2022-23 99,504 निरीक्षण किये गये थे। वर्ष 2023-24 में 1.50 लाख से ज्यादा निरीक्षण किये गये थे। यह उपलब्धि सरकार के उच्च मानकों और विकास कार्यों की सटीक निगरानी की दिशा में किए गए प्रयासों का परिणाम है।

किसानों के लिए 2014 से प्रारंभ हुए प्रयास को मॉडल के रूप में ले रही दुनिया: सीएम योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का जन्मदिवस उत्तर प्रदेश में 2002 से 'किसान सम्मान दिवस' के रूप में मनाया जाता है। चौधरी साहब कहा करते थे कि किसान गरीब होगा तो भारत अमीर नहीं हो सकता। भारत को समृद्ध बनाने के लिए अन्नदाता किसान को समृद्ध बनाना पड़ेगा। इसे ध्यान में रखकर पीएम मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार द्वारा किसानों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य हो रहे हैं। किसानों के लिए 2014 से जो प्रयास प्रारंभ हुआ, दुनिया उसे मॉडल के रूप में ले रही है। मुख्यमंत्री सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती 'किसान सम्मान दिवस' पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने विधानसभा स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।

राष्ट्रीय दैनिक **प्रातःकिरण**

नई दिल्ली, मंगलवार, 24 दिसंबर, 2024

संक्षिप्त समाचार

प्रॉपर्टी डीलर की हत्या में फरार तीसरा आरोपी नहीं चढ़ा हत्थे

रूड़की, एजेंसी। आठ दिसंबर को खानपुर से गुमशुदा हुए देहरादून के प्रॉपर्टी डीलर रामशंकर का शव पुलिस ने 14 दिसंबर को रोबिन और अक्षय की निशानदेही पर खानपुर थानाक्षेत्र के चंद्रपुरी गांव के पास से बरामद किया था। दोनों ने बताया था कि उन्होंने अपने एक साथी अंकित के साथ मिलकर प्रॉपर्टी डीलर की लूट करने के इरादे से हत्या की थी। पुलिस ने दोनों को जेल भेज दिया था। तीसरा आरोपी अंकित पुलिस के हत्थे नहीं चढ़ पाया था। अब भी पुलिस उसकी तलाश में जुटी है। खानपुर थाना प्रभारी रविंद्र शाह ने बताया कि फरार चल रहे आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। जल्द गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

छात्र की पिटाई से आक्रोशित अभिभावकों ने किया स्कूल का घेराव

ऋषिकेश, एजेंसी। स्कूल में छात्र की पिटाई से आक्रोशित अभिभावकों ने स्कूल का घेराव किया। स्कूल प्रबंधन की ओर से माफी मांगने पर मामला शांत हुआ। बृहस्पतिवार को शहर के एक निजी स्कूल में शिक्षिका ने कक्षा सात के एक छात्र की पिटाई कर दी। अभिभावकों ने बताया कि छात्र को शिक्षिका ने 20 से 25 थप्पड़ मारे। जिससे छात्र डर का स्कूल से भाग गया। छात्र स्कूल से भाग कर त्रिवेणी घाट की ओर जा रहा था। इसी दौरान उसके भाई ने उसे देख लिया। छात्र के पीछे स्कूल के शिक्षक भी उसे ढूंढते हुए आ रहे थे। पीड़ित छात्र के भाई ने घटना की जानकारी परिजनों को दी। लेकिन दूसरे दिन शुक्रवार को स्कूल में अवकाश होने के कारण अभिभावक स्कूल नहीं आए। शनिवार को सुबह करीब साढ़े 10 बजे छात्र के अभिभावक कुछ लोगों के साथ स्कूल पहुंचे और घटना पर आक्रोश जताया। इस दौरान अभिभावकों की शिक्षकों से बहस भी हुई। बाद में स्कूल प्रबंधन के लिखित में माफी मांगने के बाद मामला शांत हुआ।

दुर्लभ प्रजाति के उल्लू को रेस्क्यू कर जंगल में छोड़ा

ऋषिकेश, एजेंसी। शहर की आबादी क्षेत्र में हीरालाल मार्ग पर पुराने बस अड्डे के पास स्थित एक होटल में एक दुर्लभ प्रजाति का उल्लू भटक कर आ गया। उल्लू को पकड़ने के लिए होटल संचालक ने वन विभाग से संपर्क करने का प्रयास किया। लेकिन संपर्क नहीं हो सका। जिसके बाद जीव प्रेमी पंकज गुप्ता को कॉल करके बुलाया गया। पंकज गुप्ता ने सुरक्षित रेस्क्यू करने में सफलता हासिल की। इसके बाद उल्लू को देहरादून रोड स्थित वन विभाग चौकी में वन कर्मचारियों की उपस्थिति में सकुशल जंगल में छोड़ दिया गया। उल्लू बार्न प्रजाति का है।

देहरादून रूट पर चली सिर्फ एक बस

अल्मोड़ा, एजेंसी। देहरादून रूट पर अल्मोड़ा डिपो की दो सेवाओं में से एक सेवा का संचालन ठप रहा। बस नहीं चलने से यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। स्टेशन से देहरादून को दो सेवाओं का संचालन किया जाता है। डिपो में चालकों की कमी है। इस कारण शनिवार को दो सेवाओं में से एक एक सेवा का संचालन स्थगित रहा। अल्मोड़ा और आसपास के कई क्षेत्रों से काफी संख्या में लोग देहरादून आवाजाही करते हैं, लेकिन एक मात्र बस होने से यात्रियों को दिक्कतें होती है। यात्रियों ने बसों का नियमित संचालन करने की मांग की है। इधर, अल्मोड़ा डिपो के एजीएम विजय तिवारी ने बताया कि स्थगित सेवा का जल्द संचालन किया जाएगा।

विधायक निधि से किया सड़क निर्माण कार्य का शुभारंभ

मौलेखाल, एजेंसी। सल्ट विधानसभा क्षेत्र में विधायक निधि से झिमार-भीताकोट मोटर मार्ग से भट्ट बाखली तक संपर्क सड़क का निर्माण कार्य शुरू कर दिया गया है। भाजपा के मंडल अध्यक्ष विधायक प्रतिनिधि सुजीत चौधरी ने सड़क के निर्माण कार्य का शुभारंभ कराया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार और क्षेत्रीय विधायक महेश जीना लगातार क्षेत्र के विकास के लिए काम कर रहे हैं। सदस्य संजय सत्यवली, विरेंद्र रावत, मोहन सिंह, सुरेंद्र गुसाई, सुभाष कोटनाला मौजूद थे।

कार्बेट नेशनल पार्क में झुंड से बिछड़ा टस्कर हाथी, बाघ ने दौड़ा-दौड़ाकर मार डाला

रामनगर, एजेंसी।
कार्बेट नेशनल पार्क के बिजरानी पर्यटन जोन में एक बाघ ने टस्कर हाथी को दौड़ा-दौड़ाकर मार डाला। बाघ तीन दिन से टस्कर का पीछा कर रहा था। गश्ती दल ने उसे भगाने का प्रयास भी किया, पर उसकी आक्रामकता के आगे कोशिश काम नहीं आई। बाघ ने हाथी को इतना दौड़ाया कि आखिर में वह निढाल होकर जंगल में गिर पड़ा और दम तोड़ दिया।

कार्बेट पार्क प्रशासन ने पोस्टमार्टम के बाद हाथी का शव दफना दिया है। अधिकारियों के अनुसार पोस्टमार्टम के दौरान भी आसपास बाघ की दहाड़ सुनाई दी। कार्बेट पार्क प्रशासन के अनुसार बिजरानी पर्यटन जोन के कक्ष नंबर 12 में बीते गुरुवार से बाघ टस्कर के पीछे पड़ा था और बार-बार उस पर हमला कर रहा था। ट्रैप कैमरों में यह संघर्ष कैद हुआ।

गश्त पर निकले वनकर्मियों ने शुक्रवार को बाघ व हाथी के बीच संघर्ष को देखा तो उन्होंने जख्मी हाथी को बचाने के लिए बाघ को भगाने का प्रयास किया, मगर सफल

नहीं हुए। शनिवार सुबह सफारी पर निकले पर्यटकों व जिप्सी चालक ने हाथी का शव जंगल में पड़ा होने की सूचना दी।

जिसके बाद निदेशक डा. साकेत बडोला, उपनिदेशक राहुल मिश्रा, पार्क वार्डन अमित ग्वासाकोटी, रेंजर भानु प्रकाश हर्बोला मौके पर पहुंचे। पशु चिकित्साधिकारी डा. दुष्यंत शर्मा, डा. राजीव सिंह ने मौके पर ही हाथी के शव का पोस्टमार्टम किया।

हाथी के शरीर के पिछले हिस्से में बाघ के दांत व नाखून के निशान हैं। पार्क वार्डन के अनुसार माना जा रहा है कि हाथी बाघ से बचने के लिए दौड़ता रहा और काफी थक गया। जिस वजह से जमीन पर गिरकर उसकी मौत हो गई। बीमारी का पता लगाने के लिए फोरेंसिंक जांच को सैंपल आइवीआरआइ बरेली भेजे जा रहे हैं। पार्क वार्डन के अनुसार यह हाथी अपने झुंड से अलग हो गया था। उसके दांत व अंग सुरक्षित हैं।

रामनगर॰ कार्बेट नेशनल पार्क में वीवीआइपी के पहुंचने का सिलसिला जारी है। बीते दिनों देश के मुख्य न्यायाधीश के भ्रमण पर आने के बाद शनिवार को भारत में इजरायली दूतावास के राजदूत रूवेन अजार जंगल सफारी के लिए कार्बेट पार्क पहुंचे हैं।

भारी सुरक्षा के बीच इजरायल के राजदूत का काफिला आमडंडा स्थित बिजरानी गेट पर पहुंचा। यहां से उन्होंने बिजरानी पर्यटन जोन में जिप्सी सफारी की। शाम को सफारी करने के बाद राजदूत रामनगर के पाटकोट स्थित रिसार्ट लौट गए। रात्रि विश्राम पाटकोट में है। यहां कार्बेट पार्क व स्थानीय प्रशासन के अधिकारियों ने उनका स्वागत किया।

किशोरी को फुसलाकर ले जाने के बाद दुष्कर्म, आरोपी गिरफ्तार

लालकुआं, एजेंसी। किशोरी को फुसलाकर ले जाने के बाद युवक ने उससे दुष्कर्म किया। रिपोर्ट लिखाए जाने पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। लालकुआं कोतवाली प्रभारी दिनेश सिंह फर्त्याल ने बताया कि हल्दूचौड़ की एक महिला ने विगत दिवस तहरीर दी थी। इसमें कहा था कि उसकी बेटी को कुछ समय पूर्व बिंदुखत्ता के संजयनगर निवासी 23 वर्षीय युवक बहला फुसलाकर ले गया था। गुमशुदगी दर्ज कराने पर बेटी कुछ समय बाद बरामद भी कर ली गई थी। बाद में बेटी को युवक प्रताड़ित करने लगा। उसके अंतरंग वीडियो और फोटो वायरल करने की धमकी दी। परेशान होकर बेटी ने परिजनों को युवक की यह हरकत बताई। तब मां ने तहरीर दी। पुलिस ने जांच के बाद पीड़िता की चिकित्सकीय जांच कराते हुए मजिस्ट्रेट के सामने उसके बयान दर्ज कराए। मामले में लालकुआं कोतवाली में बीएनएस और पॉक्सो एक्ट की विभिन्न धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस ने आरोपी को बिंदुखत्ता में गौला नदी किनारे से गिरफ्तार कर लिया।

वार्ड दो में आरक्षण बदलने की आई आपत्ति

भीमताल, एजेंसी। नगर पालिका के नौ वार्डों के लिए आरक्षण जारी किया गया है। आरक्षण जारी होने के बाद से अभी तक नगर पालिका के वार्ड नंबर दो डाकबंगला से एक ही आपत्ति दर्ज कराई गई है। आपत्तिकर्ता की ओर से डाकबंगला वार्ड में जारी अनुसूचित जाति महिला के आरक्षण को बदलकर अनुसूचित जाति पुरुष करने की मांग की गई है। ईओ उदयवीर सिंह ने बताया कि भीमताल नगर पालिका के नौ वार्डों में से सिर्फ वार्ड नंबर दो डाकबंगला से ही एक आपत्ति आरक्षण बदलने को लेकर आई है। उन्होंने कहा कि रविवार तक वार्डों के आरक्षण को लेकर आपत्ति दर्ज की जाएगी। उन्होंने बताया कि नगर पालिका अध्यक्ष पद के लिए ओबीसी महिला आरक्षण को लेकर ऑनलाइन आपत्ति दर्ज की जा रही है।

निगम की पार्किंग खाली, गांधी पार्क के बाहर वाहनों का जमावड़ा

रुद्रपुर, एजेंसी। नगर निगम की ओर से नैनीताल हाईवे के एक हिस्से में खाली पड़ी जमीन पर अस्थायी पार्किंग बनवाकर वाहनों से शुल्क लिया जा रहा है। शुल्क से बचने के लिए गांधी पार्क के बाहर हाईवे किनारे खाली जमीन पर वाहनों की कतारें लग रही हैं। इससे कई बार हाईवे पर यातायात प्रभावित हो रहा है। निगम को भी नुकसान हो रहा है।

शहर में पार्किंग की दिक्कतों को देखते हुए नगर निगम ने सिंचाई विभाग परिसर के बाहर खाली पड़ी 500 मीटर जमीन पर अस्थायी पार्किंग को विकसित किया था। 500 से अधिक वाहन क्षमता वाली पार्किंग में वाहनों से शुल्क वसूलने का जिम्मा दो महिला स्वयं सहायता समूहों को दिया गया था। हाईवे पर पार्किंग से दिक्कत न हो, इसके लिए सड़क और पार्किंग के बीच बेरिकेडिंग लगाए गए हैं। पार्किंग में वाहन खड़े होने से 1500 से 2000 रुपये की आय हो रही है लेकिन जी-20 के दौरान गांधी पार्क के हटाई गई राममनोहर लोहिया मार्केट की खाली जगह का इस्तेमाल वाहन खड़े करने के लिए हो रहा है। निगम की पार्किंग में शुल्क देने से बचने के लिए बड़ी संख्या में मुफ्त की पार्किंग में वाहन खड़ा कर रहे हैं। बेतरतीब ढंग से वाहन खड़े हो रहे हैं।

तीन साल से नहीं खुले आईसीयू वार्ड के ताले

काशीपुर, एजेंसी। तीन साल बाद भी स्टाफ और फिजिशियन के अभाव में आईसीयू वार्ड के दिन नहीं बहुर सके। सुविधाओं के अभाव में अस्पताल मरीजों के लिए रेफरल सेंटर बनकर रह गया है। विभाग इस ओर कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है।

एलडी भट्ट राजकीय उप जिला चिकित्सालय में कोविड के दौरान चार बेड का आईसीयू वार्ड बनाया गया था। तीन साल बाद भी अस्पताल में फिजिशियन एवं अन्य स्टाफ की तैनाती नहीं हो सकी। 16 नवंबर 2020 को तत्कालीन स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. अमिता उप्रेती ने उद्घाटन किया था। इसके बाद से वार्ड में ताला लगा दिया गया। अस्पताल में आग से झुलसे एवं गंभीर मरीजों को हायर सेंटर रेफर कर दिया जा रहा है। गरीब मरीजों को हायर सेंटर हल्द्वानी करीब 80 किमी की दौड़ लगानी पड़ रही है। विभाग अस्पताल में व्यवस्थाएं को दुरुस्त करने की जहमत नहीं उठा पा रहा है जिसका खामियाजा मरीजों को भुगतना पड़ रहा है।

28 जनवरी से होंगे राष्ट्रीय खेल : गेम्स में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों को धार्मिक स्थलों के दर्शन कराए जाएंगे

नैनीताल, एजेंसी।
राष्ट्रीय खेल के लिए प्रस्तावित स्थलों पर तैयारियां जोरों पर हैं। इस आयोजन की खास बात है कि राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों को जागेश्वर धाम सहित अन्य धार्मिक स्थलों के दर्शन भी कराए जाएंगे।

युवा प्रदेश उत्तराखंड को 24 वर्षों में पहली बार राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी मिली है। राष्ट्रीय खेल के लिए प्रस्तावित स्थलों पर तैयारियां जोरों पर हैं। इस आयोजन की खास बात है कि राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों को जागेश्वर धाम सहित अन्य धार्मिक स्थलों के दर्शन भी कराए जाएंगे।

28 जनवरी से उत्तराखंड में राष्ट्रीय खेल प्रस्तावित हैं। 31 जनवरी से सात फरवरी तक सीमांत जिले पिथौरागढ़ में राष्ट्रीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन होना है। यहां बॉक्सिंग के आयोजन के लिए खेल विभाग और ओलंपिक संघ उत्साहित है। प्रतियोगिता को

लेकर स्पोर्ट्स स्टेडियम पिथौरागढ़ और स्पोर्ट्स कॉलेज लेलू में तैयारियां जोरों पर हैं। अल्मोड़ा में 31 जनवरी से चार फरवरी तक योगासन प्रतियोगिता का भी आयोजन भी होना है। यहां प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ियों को विश्वविख्यात जागेश्वर मंदिर के दर्शन भी कराए जाएंगे। इसके अलावा नेपाल सीमा से लगे चंपावत जिले में 29 जनवरी से राफ्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन होना है।

राफ्टिंग में हिस्सा लेने वाले खिलाड़ी गोल्जयू और पूर्णागिरी मंदिर के दर्शन भी करेंगे। टिहरी जिले में 11 फरवरी से 13 फरवरी तक क्याकिंग प्रतियोगिता और तीन फरवरी से पांच फरवरी तक रोईंग प्रतियोगिता होनी है। नैनीताल जिले में नौ जनवरी से 11 फरवरी तक माउंटेन बाइकिंग का आयोजन होना है। खेलों में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ी, कोच यहां मौजूद धार्मिक स्थलों के दर्शन भी करेंगे।

सरकार राष्ट्रीय खेलों की भव्यता में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ना चाहती है। आयोजन स्थल से लेकर शहरों को चकाचक करने का कार्य शुरू हो गया है। इसके लिए आयोजन वाले जिलों में विशेष सफाई अभियान चलाने के साथ उन सड़कों को ठीक करने कार्य किया जा रहा है, जहां से खिलाड़ी गुजरेंगे।

टॉकीज की संपत्ति में पार्टनरशिप के नाम पर एक करोड़ की धोखाधड़ी

हरिद्वार, एजेंसी। ज्वालापुर कोतवाली क्षेत्र स्थित संगीता टॉकीज में पार्टनरशिप करने के नाम पर उद्योगपति से एक करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने एसएसपी के आदेश पर दिल्ली निवासी व्यक्ति खिलाफ धोखाधड़ी, अमानत में खयानत सहित संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है। पुलिस के अनुसार, नितिन जैन पुत्र स्व. पवन जैन निवासी शिवलोक कॉलोनी रानीपुर ने एसएसपी प्रमेंद्र सिंह डोबाल को शिकायत दी। बताया कि धर्मेंद्र चावला निवासी हनुमान रोड शहादरा दिल्ली और उसके बीच संगीता टॉकीज ज्वालापुर को लेकर 25 मई 2023 को समझौता हुआ था। 3.70 करोड़ में सम्पत्ति का सौदा किसी तीसरे व्यक्ति को दोनों की सहमति से बेचने की बात तय हुई। उसने एक करोड़ रुपये अलग-अलग माध्यमों से दिए थे।

मुस्लिम छात्रों को नमाज के लिए दी आधे दिन की छुट्टी, स्पष्टीकरण के बाद शिक्षक निलंबित

रामनगर, एजेंसी।
राजकीय इंटर कालेज खताड़ी में शुक्रवार को नमाज के लिए विद्यार्थियों को एक-दो घंटे अवकाश दिए जाने के मामले में शिक्षा निदेशालय ने सीधी कार्रवाई की है। स्पष्टीकरण मांगने के बाद स्कूल के शिक्षक को निलंबित कर दिया है।विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को राइंका खताड़ी पहुंचकर शुक्रवार को आधे दिन बाद मुस्लिम छात्रों को अवकाश दिए जाने को लेकर एतराज जताया था। साथ ही इसे शिक्षा विभाग के नियमों का उल्लंघन करार दिया था।इस पर उस दिन प्रभारी प्रधानाचार्य व रसायन विज्ञान के प्रवक्ता तिलक चंद्र जोशी ने कार्यकर्ताओं को बताया था कि कई बच्चे शुक्रवार को स्कूल नहीं आते थे। इसलिए कुछ बच्चे शुक्रवार को दोपहर बाद एक घंटे के लिए घर जाकर वापस भी आ जाते हैं। शिक्षक के इस कथन का वीडियो भी प्रचारित हुआ था। रविवार को माध्यमिक शिक्षा के अपर निदेशक डा. मुकुल सती की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि कर्मचारियों की आचरण नियमावली 2002 के विपरीत आचरण करने के दृष्टिगत तत्काल प्रभाव से शिक्षक तिलक चंद्र को निलंबित किया जाता है। निलंबन अवधि तक वह मुख्य शिक्षा अधिकारी नैनीताल कार्यालय से संबंद्ध होंगे। इधर, मामले में सवाल यह भी उठ रहा है कि प्रधानाचार्य बलवंत सिंह के अवकाश पर जाने के कारण तिलक चंद्र जोशी को केवल एक दिन के लिए प्रभारी बनाया गया था। यदि स्कूल में कुछ माह पूर्व से नियमों को दरकिनार करते हुए यह व्यवस्था चल रही थी तो उसके लिए दोषी कौन होगा। राइंका अध्यापक अभिभावक एसोसिएशन के अध्यक्ष शाहनाज गुल व विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष फयाज हुसैन व तारा दत्त सुयाल ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर सफाई दी है। पदाधिकारियों ने बताया कि विद्यालय में पढ़ने वाले मुस्लिम छात्रों के अभिभावकों ने समय-समय पर अभिभावक संघ व विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में शुक्रवार को आधे दिन अवकाश देने की मांग की गई थी।

काशीपुर स्टेडियम के शौचालयों से मिलीं सिरिंज

काशीपुर, एजेंसी। राष्ट्रीय खेलों की तैयारियां जोर-शोर से चल रही हैं। इस बीच, काशीपुर के स्पो[illegible] शौचालयों में सिरिंज और खाली इंजेक्शन बरामद हुए हैं। अंदेशा है कि स्टाडयम म भता की तैयारी के लिए आने वाले युवा अपना बल बढ़ाने के लिए या फिर नशेड़ी इस्तेमाल करते होंगे।

रविवार को संवाद न्यूज एजेंसी की टीम पड़ताल के लिए स्टेडियम पहुंची थी। इस दौरान टीम ने शौचालयों का निरीक्षण किया तो पांच में से एक शौचालय बंद था। चार शौचालयों की सीट के ऊपर स्थित रोशनदानों में टीम को खाली सिरिंज मिलीं। एक शौचालय में खाली इंजेक्शन भी बरामद हुआ।

स्टेडियम कर्मचारियों ने बताया कि यहां करीब 300 खिलाड़ी पंजीकृत हैं। इसके अलावा भर्ती की तैयारी करने वाले युवा बिना अनुमति के स्टेडियम में प्रवेश करते हैं। उनका कहना है कि एकेडमी के तहत भर्ती की तैयारी करने वाले युवा ही इन इंजेक्शनों का इस्तेमाल भर्ती पास करने के लिए करते हैं। इसकी ताकत कुछ समय के लिए होती है। कहा कि स्टेडियम का खिलाड़ी इंजेक्शन का प्रयोग नहीं करता है। उन्होंने कहा कि खेल प्रतियोगिताओं में लंबा समय लगता है, ऐसे में खिलाड़ियों को इन इंजेक्शनों से कुछ लाभ नहीं हो सकता। राष्ट्रीय स्तर की स्पर्धा में डोप टेस्ट होता है और पकड़े जाने पर खिलाड़ी पर प्रतिबंध लगता है, जबकि भर्ती में डोप टेस्ट नहीं होता है।

पड़ताल के लिए जब टीम स्टेडियम पहुंची तो मुख्य गेट खुला था। दूसरे गेट पर एक सुरक्षाकर्मी तैनात मिला लेकिन कोई रोक-टोक नहीं की गई। खिलाड़ी व अन्य लोग भी बेरोकटोक आवाजाही करते मिले। शौचालय के दरवाजों की कुंडी और यूरीनल के टूटे होने के साथ-साथ बिजली के बोर्ड भी क्षतिग्रस्त थे। पानी की सप्लाई भी नहीं थी।

समग्र शिक्षा अभियान के तहत सीआरसी में लगा शिविर, 50 दिव्यांग बच्चों को सहायता उपकरण बांटे

हल्द्वानी, एजेंसी। हल्द्वानी में समग्र शिक्षा अभियान के तहत 50 दिव्यांग बच्चों को सहायता उपकरण बांटे गए। शिक्षा विभाग दिव्यांग बच्चों की दिनचर्या को सुगम बनाने के लिए हर वर्ष कैंप आयोजित करता है। जेल रोड हीरानगर स्थित सीआरसी नगर परिसर में रविवार को सहायता उपकरण वितरण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ बीईओ तारा सिंह व अभियान के जिला समन्वयक मदन मोहन जोशी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस दौरान अलीमको कानपुर से आए विशेषज्ञ डॉ.अब्दुल रहमान व डॉ.ओमवीर सिंह ने दिव्यांग बच्चों को सहायता उपकरण के प्रयोग और उनके रखरखाव के बारे में जानकारी दी। जिला समन्वयक जोशी ने अभिभावकों को समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत दिव्यांग बच्चों के लिए बनीं योजनाओं से लाभान्वित होने के लिए प्रेरित किया। विद्यालय में पढ़ने वाले दिव्यांग बच्चों के लिए गृह आधारित शिक्षण के साथ-साथ बच्चों को आने जाने का खर्च भी विभाग वहन करता है। दिव्यांग बच्चों को मिलने वाली छूट और आरक्षण के बारे में बताते हुए कहा कि शिक्षा अधिकार अधिनियम के तहत उन्हें सामान्य बच्चों के साथ विद्यालय में पढ़ने का अधिकार भी प्राप्त है। कोआर्डिनेटर हरीश बिष्ट ने बताया कि विद्यालयों में पढ़ रहे दिव्यांग बच्चों को जांच के उपरांत सहायता उपकरण वितरित किए जाते हैं। कार्यक्रम में गीता आर्य, भावना कांडपाल, राजीव लॉरेंस, मुकुल जोशी, दिव्या रावत, विनीता दिवाकर, लक्ष्मी गुप्ता, मंजू देवी, प्रीति दानी, नितेश कुमार काजल आदि थे।

जश्न मनाने के लिए पर्यटकों का आना शुरू, जाम में फंसे वाहन, हल्द्वानी-भीमताल में रेंगती रही गाड़ियां

नैनीताल, एजेंसी।
नया साल आने में अब कुछ ही दिन शेष बचे हुए है। ऐसे में नैनीताल में नए साल का जश्न मनाने के लिए पर्यटकों का आना शुरू हो गया है। इस कारण जाम की स्थिति पैदा होने लगी है

नैनीताल में नए साल का जश्न मनाने के लिए पर्यटकों का आना शुरू हो गया है। इस कारण जाम की स्थिति पैदा होने लगी है। रविवार को हल्द्वानी की मुख्य सड़कों पर कई बार रूक-रूककर जाम लगा। इससे स्थानीय लोगों के साथ पर्यटकों को भी आफत झेलनी पड़ी।

एक साल से अधिक समय में भी बरेली रोड का चौड़ीकरण नहीं हो पाया है। इस कारण सड़क पर जाम और विकराल रूप धारण कर रहा है। रविवार को रामपुर रोड, बरेली रोड, कालाढूंगी रोड, मुखानी चौराहे, लालडांठ, जेल रोड आदि सड़कों पर वाहनों का दबाव बढ़ गया। इससे वाहन रेंगते रहे।

कालाढूंगी स्टेट हाईवे से होकर हल्द्वानी आने वाले लोगों को कसमखेडा पर पहंचते ही जाम का सामना करना पड़ रहा है। वहीं सबसे अधिक खराब स्थिति मंगलपडाव से कोतवाली तक है। फुटपाथ पर अतिक्रमण कर फड़-ठेली लग रहे हैं। सड़क पर वाहनों का दबाव बढ़ रहा है। सिंधी चौक के पास टेंपो व ई-रिक्शे प्रतिबंधित होने के बावजूद दौड़ रहे हैं। रोजाना लोगों व पर्यटकों को जाम का सामना करना पड़ रहा है।

ट्रांसपोर्टनगर से दमकल विभाग की ओर जाने वाले मार्ग पर सुबह 11 बजे से लेकर साढ़े 11 बजे और शाम को तीन से चार बजे के बीच जाम लगा। इसी तरह जेल रोड पर एक बाइक सवार कार से टकरा गया। इससे सड़क पर लंबा जाम लग गया। कुसुमखेड़ा के पास जाम में वाहन रेंगते रहे। दोपहर 12 बजे काठगोदाम में रेलवे स्टेशन रोड के पास जाम रहा। एसपी (यातायात) जगदीश चंद ने बताया कि थर्टी फर्स्ट व नए साल को लेकर पर्यटक पहुंचने लगे हैं। वाहनों का दबाव बढ़ने से जाम रहा, लेकिन समय से जाम खुलवाकर यातायात को सुचारू करा दिया गया था।

संक्षिप्त खबरें

दिल्ली नगर निगम साउथ एक्सटेंशन भाग 2 विद्यालय में मनाया गया विंटर कार्निवल

नई दिल्ली, । क्रिसमस विंटर कार्निवल थीम पर एमसीडी विद्यालय साउथ एक्सटेंशन 2 मध्य क्षेत्र में भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन की मुख्य अतिथि डॉक्टर ओल्गा गौची पत्नी रूबन गौची हाई कमिश्नर माल्टा, अतिरिक्त आयुक्त (शिक्षा) अमित कुमार शर्मा, एनका वर्मा ट्रस्टी श्रीकांत वर्मा ट्रस्ट थीं। सुभाष मानव निदेशक ग्रामालय, हर्षित गुप्ता, अपर आयुक्त दिल्ली नगर निगम, उपनिदेशक शिक्षा मध्य क्षेत्र, स्कूल इंस्पेक्टर मध्य क्षेत्र ने भी कार्निवल में उत्साह पूर्वक भाग लिया। स्कूली छात्रों ने कार्निवल में बहुत से फन गेम्स, फन एक्टिविटीज, आर्ट एंड क्राफ्ट के विभिन्न स्टाल लगाए गए, सांस्कृतिक गतिविधियां तथा क्रिसमस कैरोल पर नन्हे मुन्ने बच्चों ने डांस भी किया। विआर तकनीक द्वारा गीला और सूखा कूड़ा अलग करने का खेल भी सिखाया गया जिससे छात्र बहुत प्रेरित हुए। श्रीमती एनका वर्मा ट्रस्टी श्रीकांत वर्मा ट्रस्ट ने विद्यालय छात्रों के लिए 11000 रुपए की राशि भेंट की तथा समस्त गणमान्य अतिथियों ने छात्रों हेतु चॉकलेट्स और गिफ्ट भी बांटे। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य श्रीमती नीलम कुजूर ने सभी का आभार व्यक्त किया।

निगम की आम आदमी पार्टी हर मोर्चे पर विफल साबित हुई : राजा इकबाल सिंह

नई दिल्ली, । दिल्ली नगर निगम में नेता प्रतिपक्ष एवं पूर्व महापौर सरदार राजा इकबाल सिंह ने दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा रंगपुरी पहाड़ी पर स्थित इंदिरा कैंप का दौरा कर वहां के निवासियों की समस्याओं पर कार्रवाई करने पर उनका धन्यवाद किया। सरदार राजा इकबाल सिंह ने कहा कि दिल्ली नगर निगम की आम आदमी पार्टी सरकार के शासन काल में इंदिरा कैंप के निवासी नरकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली के माननीय उपराज्यपाल द्वारा इंदिरा कैंप के निवासियों की समस्याओं का जायजा लेने के पश्चात दिल्ली के मेयर साहब का दौरा यह दर्शाता है कि आम आदमी पार्टी केवल दिखावे में यकीन करती है और उनका मकसद माननीय उपराज्यपाल महोदय द्वारा किए गए कार्यों का श्रेय लेना है। सरदार राजा इकबाल सिंह ने कहा कि पिछले दो वर्षों में इंदिरा कैंप में साफ सफाई से संबंधित कोई कार्य नहीं हुए एवं माननीय उपराज्यपाल के दौरे के बाद आम आदमी पार्टी की नींद टूटी है। सरदार राजा इकबाल सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी के शासनकाल में दिल्लीवासी नरकीय जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। जनता से बड़े बड़े वादे करके दिल्ली नगर निगम की सत्ता पर काबिज हुई आम आदमी पार्टी के सभी वादे झूठे साबित हुए हैं।

अटल जी की 100वीं जयंती पर भव्य नृत्य नाटिका रामायण का होगा मंचन : गोयल

नई दिल्ली, । 25 दिसंबर युगपुरुष भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए पूर्व केन्द्रीय मंत्री विजय गोयल ने बताया कि जहां सवेरे सदैव अटल पर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री अटल जी की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करेंगे, वहीं शाम को लोक अभियान संस्था की ओर से एक भव्य कार्यक्रम दिल्ली के डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित किया जाएगा, जिसमें लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं जम्मू-कश्मीर के महाराजा रहे डॉ. कर्ण सिंह, असम के राज्यपाल श्री लक्ष्मण आचार्य, अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल कैवल्य त्रिविक्रम परनाईक उपस्थित रहेंगे। गोयल ने कहा कि हर वर्ष अटल जी के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है।

चिल्ला बॉर्डर से फिल्म सिटी तक सड़क होगी चौड़ी, ग्रेनो-दिल्ली के बीच यात्रा करने

नोएडा, । नोएडा-दिल्ली के यातायात में जल्द ही बड़ा बदलाव देखने को मिलेगा। चिल्ला बॉर्डर से फिल्म सिटी फ्लाईओवर तक सड़क चौड़ीकरण का कार्य प्रारंभ हो गया है। इस महत्वपूर्ण परियोजना से क्षेत्र में लगने वाले जाम से निजात मिलने की उम्मीद है। नोएडा प्राधिकरण के अनुसार, एपीजे स्कूल से फिल्म सिटी फ्लाईओवर तक लगभग 800 मीटर क्षेत्र में सड़क को चौड़ा किया जाएगा। पहले यह योजना मात्र 300 मीटर तक सीमित थी, लेकिन बढ़ते यातायात दबाव को देखते हुए इसका विस्तार किया गया है। अब तक इस परियोजना का 30 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है, जिसमें फुटपाथ को हटाने का काम शामिल है। इन चुनौतियों के बीच पूरा होगा काम हालांकि, इस परियोजना को कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। एपीजे स्कूल के पास गैस रिहाइश पाइपलाइन (ग्रेप-4) और डीएनडी फ्लाईओवर के नीचे सीवर लाइन की शिफ्टिंग जैसी तकनीकी बाधाएं हैं।

एक सीटिंग मुख्यमंत्री को बगैर गृह मंत्रालय की मंजूरी के नहीं गिरफ्तार किया जा सकता, जेल में गुजारे उनके छह महीने कौन वापस करेगा : संजय सिंह

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की छह माह पहले हुई गिरफ्तारी को लेकर पार्टी ने बड़ा खुलासा किया है। ह्लआपह्व के वरिष्ठ नेता एवं सांसद संजय सिंह का कहना है कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पूरी तरह से अवैध और गैर कानूनी थी, क्योंकि इसके लिए केंद्रीय गृह मंत्रालय और एलजी से कोई मंजूरी नहीं ली गई थी। अब गृह मंत्रालय से उनके खिलाफ केस चलाने की मंजूरी ली जा रही है। इससे साफ है कि भाजपा की जांच एजेंसियों ने बिना मंजूरी के उनको गिरफ्तार किया था। उन्होंने कहा कि एक सीटिंग मुख्यमंत्री को बगैर गृह मंत्रालय की मंजूरी के गिरफ्तार नहीं किया जा सकता, अब जेल में गुजारे उनके छह महीने कौन वापस करेगा? अब हमारा ये आरोप भी सच साबित हो गया है कि अरविंद केजरीवाल व ह्लआपह्व की राजनीति को खत्म करने और दिल्ली सरकार को गिराने के लिए एक झूठा केस कर उनको गिरफ्तार किया गया था। दिल्लीवाले इस अवैध गिरफ्तारी का जवाब इस चुनाव में देंगे। आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि आम आदमी पार्टी बार-बार यह बात कहती रही है कि भाजपा और नरेंद्र मोदी की सरकार को लोकतंत्र में यकीन नहीं है। इनको संघीय ढांचे में यकीन नहीं है। जांच एजेंसियों का दुरुपयोग करके सरकारों को गिराना, खरीद फरोख्त करना और लोकतंत्र का गला घोंटना भाजपा और नरेंद्र मोदी सरकार की असलियत है। अब जिस मामले का खुलासा हुआ है देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पूरी तरह से अवैध थी, गैरकानूनी थी और बगैर सेंक्शन के थी। ये एक प्रचंड बहुमत से निर्वाचित मुख्यमंत्री को, देश के सबसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री को बगैर सेंक्शन के गिरफ्तार कर लेते हैं। अब केंद्रीय गृह मंत्रालय (एमएचए) का सेंक्शन मिल रहा है। इसका मतलब है कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी दिल्ली सरकार को गिराने के लिए की गई थी। आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल की राजनीति को खत्म करने के लिए की गई थी। यह सच अब सबके सामने आ चुका है। ये एक सीटिंग सीएम बगैर केजरीवाल के अरेस्ट कैसे कर सकते हैं? इन्होंने देश के अंदर तानाशाही और गुंडागर्दी मचा रखी है। ये कहीं भी किसी को भी झूठे मामले बनाकर जेल में डाल देंगे। अरविंद केजरीवाल की जिंदगी के वह 6 महीने कौन वापस करेगा? छह महीने जो जेल में यातनाएं दी गई, जान से मारने तक की कोशिश की गई, वह कौन वापस करेगा। यह एक अवैध गिरफ्तारी, गैर-कानूनी और बगैर सेंक्शन के गिरफ्तारी है। संजय सिंह ने कहा कि मैं समझता हूं कि एक बार फिर से जो हमारा आरोप था कि अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी की राजनीति को खत्म करने के लिए झूठा और बेबुनियाद मामला बनाकर उनको गिरफ्तार किया गया था, यह बात सच साबित होती है क्योंकि उनकी गिरफ्तारी बगैर एमएचए और एलजी के सेंक्शन की थी। यह बात अब खुद एमएचए के लोग स्वीकार कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि दिल्ली और देश की जनता यह सब कुछ देख रही है।

दिल्ली नगर निगम ने की भारतीय स्टेट बैंक के साथ साझेदारी

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली, । दिल्ली नगर निगम ने भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस) को लागू करने के लिए भारतीय स्टेट बैंक के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। यह साझेदारी भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र को आधुनिक बनाने और करदाताओं के लिए सुविधा बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बीबीपीएस प्लेटफॉर्म नागरिकों को दिल्ली नगर निगम के ऑनलाइन पोर्टल पर जाए बिना नगर निगम करों और बकाया राशि का भुगतान करने की अनुमति देता है। दिल्ली नगर निगम द्वारा जारी किए गए एक विशिष्ट संपत्ति पहचान कोड या किसी अन्य पहचान का उपयोग करके, करदाता आसानी से एपीआई के माध्यम से अपना विवरण प्राप्त कर सकते हैं और यूपीआई, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड और इंटरनेट बैंकिंग सहित कई डिजिटल तरीकों से अपना भुगतान पूरा कर सकते हैं। सफल भुगतान होने पर करदाताओं को तुरंत एक पुष्टिकरण संदेश और एक आधिकारिक दिल्ली नगर निगम की रसीद (जी8) प्राप्त होगी। यह तेज, सुरक्षित और उपयोगकर्ता के अनुकूल प्रणाली भुगतान प्रक्रिया को सरल बनाने के साथ-साथ उच्च कर अनुपालन और संग्रह को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन की गई है। दिल्ली नगर निगम निकट भविष्य में बीबीपीएस प्रणाली को अन्य राजस्व-उत्पादक विभागों, जैसे कि फैक्ट्री लाइसेंसिंग, सामान्य लाइसेंसिंग और पशु चिकित्सा सेवाओं तक विस्तारित करने की योजना बना रही है। यह विस्तार सभी नगरपालिका सेवाओं में एकीकृत, निर्बाध भुगतान अनुभव प्रदान करेगा, जिससे नागरिकों और संगठन दोनों को लाभ होगा। दिल्ली नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त (वित्त) वीर सिंह यादव ने इस पहल के बारे में कहा कि बीबीपीएस भुगतान व्यवस्था लागू करने से कर भुगतान सरल एवं नागरिक सहयोगी सहयोगी होगा। उन्होंने कहा कि तकनीक के इस्तेमाल से पारदर्शिता, दक्षता एवं कर भुगतान व्यवस्था का सरलीकरण हो पाएगा। उन्होंने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक के साथ सहयोग से नागरिकों एवं संस्था की भलाई के लिए नवाचारों को अपनाने की हमारी प्रतिबद्धता परिलक्षित होगी। दिल्ली नगर निगम पारदर्शिता, दक्षता और करदाता सुविधा को बढ़ाने वाले अभिनव समाधानों को अपनाने की अपनी प्रतिबद्धता में दृढ़ है।

भाजपा के पास न कोई सीएम चेहरा और ना कोई एजेंडा, वह केवल मुझे गालियां देकर चुनाव लडना चाहती है : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि दिल्ली चुनाव में भाजपा के पास न कोई मुख्यमंत्री चेहरा है और ना कोई एजेंडा है। वह केवल केजरीवाल को गालियां देकर चुनाव लडना चाहती है। दिल्ली में आधी सरकार हमारी है और आधी सरकार भाजपा की है। हमारी सरकार ने दिल्ली में बिजली, पानी, महिलाओं के लिए मुक्त बस का सफर, सड़कें समेत काफी काम किए, भाजपा ने क्या कम किया? आज दिल्ली की कानून व्यवस्था चरमराई हुई है, गैंगस्टर्स खुलेआम घूम रहे हैं, गोलियां चल रही हैं। लोगों ने इन्हें कानून व्यवस्था संभालने का काम दिया था, लेकिन यह भी संभाल नहीं पाए। इनका एक ही मेनिफेस्टो है कि केजरीवाल को आने वाले 5 साल में गालियां देंगे। दिल्लीवाले बताएं कि क्या गालियों से दिल्ली का विकास हो सकता है? भाजपा के आरोप पत्र वाले सवाल पर आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा के पास दिल्ली का चुनाव लड़ने के लिए कोई एजेंडा नहीं है, कोई प्लानिंग नहीं है। भाजपा दिल्ली के लोगों को यह बताएं कि पिछले 5 साल में इन्होंने दिल्ली के लिए क्या काम किया? दिल्ली में दो सरकारें हैं। दिल्ली में आधी सरकार आम आदमी पार्टी की है और आधी सरकार केंद्र की भाजपा सरकार की है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने बिजली, पानी, महिलाओं के लिए मुक्त बस का सफर, सड़कें और सीवर से लेकर काफी काम किए। इन लोगों ने क्या काम किया? अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज पूरी दिल्ली की कानून व्यवस्था चरमराई हुई है। गैंगस्टर्स खुलेआम घूम रहे हैं, गोलियां चल रही हैं। लोगों ने दिल्ली के अंदर इन्हें कानून व्यवस्था संभालने का एक ही काम दिया था, लेकिन इन्होंने यह भी नहीं किया। दिल्ली में सातों सांसद इनके हैं, एलजी साहब इनके हैं। इनकी केंद्र सरकार के पास करोड़ों-अरबों रुपए हैं। चार सड़कें ही बना देते। दिल्ली में कुछ नए अस्पताल बना देते। भाजपा वाले कुछ तो करते, लेकिन इन्होंने कोई काम नहीं किया। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अब दिल्ली विधानसभा के चुनाव में आए हैं तो कभी चार्ज शीट निकालते हैं, कभी मुझे गालियां देते हैं। इन्हें केवल गालियां देना आता है। इनका केवल एक ही मेनिफेस्टो है कि केजरीवाल को आने वाले 5 साल में गालियां देंगे। मैं दिल्ली के लोगों से पूछना चाहता हूं कि क्या गालियों से दिल्ली का विकास हो सकता है? आज मैं आपसे वोट मांगने आया हूं तो मैं अपने काम गिना रहा हूं कि मैंने क्या काम किए? मैं यह गिना रहा हूं कि अगले 5 साल में क्या काम करूंगा? भाजपा के पास न सीएम का चेहरा है, न टीम है, न कोई नैरेटिव है और न ही दिल्ली के लिए कोई एजेंडा है।

भाजपा के पास न कोई मुख्यमंत्री चेहरा और ना कोई एजेंडा : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली, । आम आदमी पार्टी (आआपा) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को भाजपा पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि दिल्ली चुनाव में भाजपा के पास न कोई मुख्यमंत्री चेहरा है और ना कोई एजेंडा है। वह केवल केजरीवाल को गालियां देकर चुनाव लडना चाहती है। दिल्ली में आधी सरकार हमारी है और आधी सरकार भाजपा की है। हमारी सरकार ने दिल्ली में बिजली, पानी, महिलाओं के लिए मुफ्त बस का सफर, सड़कें समेत काफी काम किए, भाजपा ने क्या काम किया। आज दिल्ली की कानून व्यवस्था चरमराई हुई है, गैंगस्टर्स खुलेआम घूम रहे हैं, गोलियां चल रही हैं। लोगों ने इन्हें कानून व्यवस्था संभालने का काम दिया था, लेकिन यह भी संभाल नहीं पाए। उन्होंने कहा कि इनका एक ही मेनिफेस्टो है कि केजरीवाल को आने वाले 5 साल में गालियां देंगे। दिल्लीवाले बताएं कि क्या गालियों से दिल्ली का विकास हो सकता है? भाजपा के आरोप पत्र वाले सवाल पर केजरीवाल ने कहा कि भाजपा के पास दिल्ली का चुनाव लड़ने के लिए कोई एजेंडा नहीं है, कोई योजना नहीं है। भाजपा दिल्ली के लोगों को यह बताएं कि पिछले 5 साल में इन्होंने दिल्ली के लिए क्या क्या काम किया?। उन्होंने कहा कि लोगों ने दिल्ली के अंदर इन्हें कानून व्यवस्था संभालने का एक ही काम दिया था, लेकिन इन्होंने यह भी नहीं किया। दिल्ली में सातों सांसद इनके हैं, एलजी इनके हैं। इनकी केंद्र सरकार के पास करोड़ों-अरबों रुपये हैं। चार सड़कें ही बना देते। दिल्ली में कुछ नए अस्पताल बना देते। भाजपा वाले कुछ तो करते, लेकिन इन्होंने कोई काम नहीं किया। अंत में अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अब दिल्ली विधानसभा के चुनाव में आए हैं तो कभी चार्ज शीट निकालते हैं, कभी मुझे गालियां देते हैं। इन्हें केवल गालियां देना आता है।

हमने पहले ही महिला सम्मान राशि योजना के लिए बजट में प्रावधान कर दिया है : केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

दिल्लीवालों को बधाई। सोमवार को दिल्ली में मुख्यमंत्री महिला सम्मान राशि योजना के तहत रजिस्ट्रेशन का आगाज हो गया। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल खुद सीएम आतिशी के साथ नई दिल्ली विधानसभा के ईस्ट किदवई नगर की साउथ मार्केट में पहुंचे और कई महिलाओं का रजिस्ट्रेशन करके इसकी शुरूआत की। इस दौरान कुछ महिलाओं के पास वोटर आईडी कार्ड तो था, लेकिन उनका वोटर लिस्ट में नाम नहीं था। अरविंद केजरीवाल ने इनके नाम वोटर लिस्ट में जुड़वाने का भरोसा दिया, ताकि योजना का लाभ ले सकें। उन्होंने दिल्ली की सभी माताओं-बहनों से अपील करते हुए कहा कि आप सभी अपना वोट चेक कर लें। इस योजना का लाभ लेने के लिए वोटर लिस्ट में नाम होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमने पहले ही महिला सम्मान योजना के लिए बजट में प्रावधान के दिया है। सोमवार को दोपहर 12 बजे आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी के साथ नई दिल्ली विधानसभा के ईस्ट किदवई नगर की साउथ मार्केट पहुंचे। यहां से उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए शुरू की गई मुख्यमंत्री महिला सम्मान राशि योजना के लिए रजिस्ट्रेशन की शुरूआत की। अरविंद केजरीवाल ने खुद कई महिलाओं के रजिस्ट्रेशन किए। उन्होंने रजिस्ट्री के लिए जरूरी वोटर आईडी कार्ड लेकर पहले चुनाव आयोग की वेबसाइट पर जारी वोटर लिस्ट से मिलान किया। जिन महिलाओं का नाम वोटर लिस्ट में था, उनका हाथों हाथ रजिस्ट्रेशन कर दिया गया, जबकि जिन महिलाओं का नाम वोटर लिस्ट में नहीं था, उनका रजिस्ट्रेशन नहीं हो सका, क्योंकि महिला सम्मान योजना का लाभ लेने के लिए लाभार्थी महिला को दिल्ली का निवासी और वोटर लिस्ट में उसका नाम होना जरूरी है। हालांकि ऐसी महिलाओं को अरविंद केजरीवाल ने भरोसा दिया कि वह उनका वोटर लिस्ट में नाम जुड़वा देंगे। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज से पूरी दिल्ली में महिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना का रजिस्ट्रेशन शुरू हो रहा है। महिला सम्मान योजना के तहत हर रजिस्ट्रेशन करने वाली महिला को 2100-2100 रुपए हर महीने दिए जाएंगे और संजीवनी योजना में रजिस्ट्रेशन करने वाले 60 साल से ऊपर के लोगों का पूरा इलाज का खर्चा सरकार देगी, चाहे उसका इलाज प्राइवेट अस्पताल में हो या सरकारी अस्पताल में हो। नई दिल्ली विधानसभा में मैंने खुद और आतिशी ने इन योजनाओं के रजिस्ट्रेशन का आरंभ किया। मैंने और आतिशी ने कई महिलाओं का रजिस्ट्रेशन किया। महिलाओं के लिए एक पीला कार्ड है, जिसे सब संभालकर रखें। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि हम लोगों ने पहले ही इसका प्रावधान बजट में किया हुआ है। दिल्ली बीजेपी झूठ बोल रही है और वह लोगों को बहका रही है। जब मैंने 2015 में कहा था कि हमारी सरकार आएगी तो बिजली मुफ्त करूंगा। तब भी भाजपा वाले यही बात बोलते थे। लेकिन मैंने बिजली मुफ्त की। 2015 में मैंने कहा था कि पानी मुफ्त करूंगा तो भाजपा वाले गालियां देते थे। मैंने पानी मुफ्त किया। महिलाओं की बसों में यात्रा मुफ्त की। ऐसे ही जब मैं कह रहा हूं कि महिलाओं को हर महीने 2100 रुपए दूंगा, तो 2100 रुपए देंगे। कहीं से भी बजट लाएं। आप चिंता मत करो। वह मेरी जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि सभी महिलाएं रजिस्ट्रेशन कराएं, चुनाव के बाद सबके खाते में 2100-2100 रुपए आएंगे। अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि आज नई दिल्ली विधानसभा में कुछ महिलाओं का खुद रजिस्ट्रेशन करके आतिशी जी के साथ महिला सम्मान योजना के रजिस्ट्रेशन का शुभारंभ किया। एक अन्य ट्वीट में अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज जब हम ह्लमहिला सम्मान योजनाह्व का रजिस्ट्रेशन शुरू करने गए तो एक बहन ने मुझे बताया कि किसी ने उनका वोट कटवा दिया। हम उनका वोट फिर से बनवा देंगे। लेकिन मैं दिल्ली की अपनी सभी माताओं बहनों से कहना चाहता हूँ कि आप सभी अपना वोट चेक कर लें। हर महीने 2100 लेने के लिए वोटर लिस्ट में नाम होना जरूरी है। उधर, दिल्ली की सीएन आतिशी ने एक्स पर कहा कि दिल्ली में ह्लमहिला सम्मान योजनाह्व के रजिस्ट्रेशन के साथ महिला सशक्तिकरण के एक नए दौर की शुरूआत हो रही है। आज अरविंद केजरीवाल के साथ इस योजना के शुरूआती लाभार्थियों का रजिस्ट्रेशन किया। दिल्ली में अब हमारी बहनों-बेटियों को अपने छोटे-छोटे खर्चों के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा क्योंकि अरविंद केजरीवाल जी की इस योजना से हर महीने उनके खाते में 2100 आयेंगे। महिलाओं ने कहा, आप हमारे लिए बहुत सोचते हैं महिला सम्मान राशि योजना के लिए रजिस्ट्रेशन करने पहुंचे अरविंद केजरीवाल का लोगों ने बड़ी गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान महिलाओं ने अरविंद केजरीवाल जिंदाबाद के नारे भी लगाए। महिलाओं ने अरविंद केजरीवाल से कहा कि आप हमारे लिए बहुत सोचते हैं। आपने बहुत काम किए हैं और हमें उम्मीद है कि आप आगे भी काम करेंगे। वोटर कार्ड था, लेकिन वोटर लिस्ट से नाम था गायब रजिस्ट्रेशन के दौरान कई ऐसे भी केस मिले, जिसमें महिला के पास उसका वोटर आईडी कार्ड था लेकिन वोटर लिस्ट से उसका नाम गायब मिला। इस पर अरविंद केजरीवाल ने कहा कि भाजपा वालों ने इनका वोट कटवा दिया। इनके पास वोटर कार्ड है और भाजपा वाले बोलते हैं कि ये रोहिंग्या हैं। इसके बाद अरविंद केजरीवाल ने महिला को भरोसा दिलाया कि उनका नाम वोटर लिस्ट में जुड़वा देंगे।

अवैध तरीके से हुई थी अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी, संजय सिंह का बड़ा आरोप

नई दिल्ली आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने सोमवार को कहा कि अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पूरी तरह से अवैध और गैरकानूनी थी। उन्होंने आरोप लगाया कि बिना किसी सैंशन (अनुमति) के अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किया गया था। यह गिरफ्तारी केवल आम आदमी पार्टी को कमजोर करने, दिल्ली सरकार को गिराने

कड़ाके की ठंड में प्रदूषण से फेफड़े हो रहे लाचार

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली, । उत्तर भारत में बढ़ती ठंड के बीच हवा की गुणवत्ता लगातार खराब बनी हुई है। इस कारण फेफड़ों से संबंधित बीमारियों के बढ़ने की आशंका है। इंडियन जर्नल ऑफ चेस्ट डिजीज एंड एलाइड साइंसेज के अध्ययन में यह जानकारी सामने आई है। शोधार्थियों ने बताया, सर्दियों के मौसम में देश में खराब वायु गुणवत्ता फेफड़ों के लिए घातक हो रही है। कम तापमान और प्रदूषण से वायरल संक्रमण श्वसन रोगियों के लिए मुसीबत बन रहा है। अब तक करीब 40 फीसदी अस्थमा रोगी खांसी और सांस की तकलीफ के लक्षण लेकर अस्पतालों तक पहुंचे हैं। भारतीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, सर्दियों के दौरान निमोनिया के मामलों में 30 फीसदी से अधिक की वृद्धि होती है। खासकर बुजुर्गों और फेफड़ों की बीमारियों से पीड़ित लोगों में यह डर अधिक है। मंत्रालय के अनुसार, सर्दियों के दौरान वायरल संक्रमण देश के उन हिस्सों में अधिक समस्याएं पैदा कर सकता है, जहां तापमान में भारी बदलाव दर्ज किए जा रहे हैं। दिल्ली-लखनऊ में दिक्कतें ज्यादा केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, देश में सर्दियों के मौसम में वायु गुणवत्ता लगातार खराब होती जा रही है। दिल्ली, लखनऊ और कानपुर जैसे शहरों में स्थिति अधिक बिगड़ने लगी है। इन शहरों में तापमान में उतार-चढ़ाव के कारण प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों में वृद्धि कर रहा है। हालात बुरे भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में हर साल लगभग 20 लाख लोग वायु प्रदूषण के कारण मर रहे हैं। इनमें से अधिकांश मौतें श्वसन संबंधी बीमारियों से संबंधित होती हैं। सर्दियों में सबसे अधिक मौतें रिकॉर्ड की जाती हैं। इस तरह मुश्किल झेल रहे रोगी

लगभग 30 फीसदी अस्थमा के मरीजों को ठंडे तापमान के कारण सांस फूलने का अनुभव होता है।

सर्दियों में ब्रोंकाइटिस-निमोनिया के मरीज बढ़ जाते हैं, खराब वायु बीमारी को अधिक घातक बनाती है। पीएम-2.5 का उच्च स्तर फेफड़ों में सूजन-जलन पैदा करता है।

इस तरह बचाव संभव

1. मास्क लगाएं
2. गर्म कपड़े पहनें
3. मिडिफायर का उपयोग करें
4. घर के अंदर ही व्यायाम करें
5. घर की वायु गुणवत्ता जांचते रहें
6. डॉक्टरों से संपर्क रखें

दोनों योजनाओं के प्रति लोगों में भारी उत्साह है, महिला सम्मान योजना के तहत कुछ घंटों में ही ढाई लाख महिलाएं रजिस्ट्रेशन करा चुकी हैं - केजरीवाल

दिल्ली में सोमवार से संजीवनी योजना के लिए भी रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया की शुरूआत हो गई। इस योजना के तरह पंजीकरण कराने वाले बुजुर्गों को मुफ्त इलाज कराने का एक और सुरक्षा कवच मिल गया है। पूर्व उप-मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और मुख्यमंत्री आतिशी के साथ खुद आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने जंगपुरा विधानसभा में कई बुजुर्गों का रजिस्ट्रेशन करके इसकी शुरूआत की। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि संजीवनी योजना के तहत 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों के इलाज का सारा खर्चा दिल्ली सरकार उठाएगी। महिला सम्मान राशि और संजीवनी योजना को लेकर लोगों में जबरदस्त उत्साह है। महिला सम्मान योजना के तहत कुछ घंटों में ही ढाई लाख महिलाएं रजिस्ट्रेशन करा चुकी हैं। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अभी हमने जंगपुरा विधानसभा में कुछ बुजुर्गों का रजिस्ट्रेशन किया है। आज महिला सम्मान और संजीवनी योजना का रजिस्ट्रेशन शुरू हुआ है। संजीवनी योजना में जो 60 साल से ऊपर के बुजुर्ग हैं, सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों में उनके पूरा इलाज का सारा खर्चा दिल्ली सरकार उठाएगी। दिल्ली में 20-25 लाख बुजुर्ग हैं। जितने लोग रजिस्ट्रेशन करेंगे, उन सभी को इसका लाभ मिलेगा। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली सरकार के अस्पतालों सारा इलाज मुफ्त है, लेकिन संजीवनी योजना के तहत बुजुर्ग अपना इलाज प्राइवेट अस्पतालों में भी करा पाएंगे और सारा इलाज का खर्च दिल्ली सरकार उठाएगी। उन्होंने कहा कि महिला सम्मान राशि और संजीवनी योजना, दोनों को लेकर लोगों का बहुत अच्छा रिस्पॉन्स है। शुरू होने से कुछ ही घंटों के अंदर महिला सम्मान योजना के तहत लगभग ढाई लाख महिलाएं अपना रजिस्ट्रेशन करा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि हम घर-घर जा रहे हैं। जब तक पूरी दिल्ली के सारे घर कवर नहीं कर लेते, तब तक रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया चलती रहेगी। यह दोनों योजनाएं लोगों की जिंदगी में गेम चेंजर साबित होंगी। अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर पोस्ट कर कहा कि जंगपुरा विधानसभा से संजीवनी योजना के रजिस्ट्रेशन की शुरूआत की। सीएम आतिशी और मनीष जी के साथ यहाँ कुछ बुजुर्गों का इस योजना के लिए रजिस्ट्रेशन किया। दिल्ली के सभी बुजुर्ग मेरे माता-पिता समान हैं, उनका इलाज हमारी ज़िम्मेदारी है। हमारी टीम सभी बुजुर्गों का घर-घर जाकर रजिस्ट्रेशन करेगी। वहीं, आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि अरविंद केजरीवाल जिस तरह से लोगों की जिंदगी में बदलाव लाने के बारे में सोचते हैं, वहीं उनकी राजनीति है और वही उनका सरकार में आने का मकसद है। कोई भी व्यक्ति पूरी जिंदगी करोड़ों रुपए के टैक्स देता है। करोड़ों रुपए टैक्स देने के बाद जैसे ही वह 60 साल का होता है, वह प्राइवेट कंपनी से रिटायर हो जाए, सरकारी नौकरी से रिटायर हो जाए या अपना बिजनेस बच्चों को देकर घर पर बैठे कि अब मैं 60 साल का हो गया हूं। तो उसके सामने सबसे बड़ा संकट यही रहता है कि मेरा इलाज कहां से होगा? उसको कोई पूछता ही नहीं है। अभी तक तो वह सरकारों को करोड़ों रुपए का टैक्स दे रहा था। लेकिन आज 2-4 लाख रुपए के इलाज के लिए भी लोगों को तरसना पड़ता है। अरविंद केजरीवाल का मानना है कि हमें लोगों की जिंदगी में यही आसानी लानी है। इसलिए हम यह संजीवनी स्कीम लेकर आए हैं। और मुझे खुशी है कि आज जंगपुरा विधानसभा से वह इसका रजिस्ट्रेशन लॉन्च करने के लिए आए। लोगों में इसे लेकर बहुत उत्साह है। हमारे कार्यकर्ता हर विधानसभा में इसके रजिस्ट्रेशन के लिए लगे हुए हैं। उधर, दिल्ली की सीएम आतिशी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि बेटा हो तो अरविंद केजरीवाल जैसा।अब दिल्ली के बुजुर्गों को महंगे इलाज की चिंता नहीं करनी होगी क्योंकि अपने बेटे अरविंद केजरीवाल से उन्हें संजीवनी का कवच मिलेगा। प्राइवेट हो या सरकारी अस्पताल 60 साल से ऊपर के सभी बुजुर्गों का इलाज बिल्कुल फ्री होगा। उनके इलाज का सारा खर्च हम उठायेंगे। आज अरविंद केजरीवाल जी और मनीष सिसोदिया जी के साथ इस योजना के शुरूआती लाभार्थियों का रजिस्ट्रेशन किया। केजरीवाल ने घर-घर जाकर बुजुर्गों का किया रजिस्ट्रेशन दिल्ली में 60 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों के मुफ्त इलाज के लिए शुरू की गई संजीवनी योजना के तहत सोमवार को रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू हो गई। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया और सीएम आतिशी ने जंगपुरा विधानसभा में घर-घर जाकर बुजुर्गों का रजिस्ट्रेशन किया और उनको संजीवनी कार्ड सौंपे। रजिस्ट्रेशन से पहले बुजुर्गों के वोटर आईडी कार्ड को चुनाव आयोग की वेबसाइट पर जाकर चेक किया गया की कहीं उनका नाम किसी ने कटवा तो नहीं दिया है। केजरीवाल को बुजुर्गों का मिला आशीर्वाद संजीवनी योजना शुरू होने से दिल्ली के बुजुर्गों में काफी उत्साह है। जब अरविंद केजरीवाल जंगपुरा में रजिस्ट्रेशन करने पहुंचे तो वहां बड़ी संख्या में बुजुर्ग एकत्र हो गए। इस दौरान अरविंद केजरीवाल ने बुजुर्गों का पैर छूकर उनका आशीर्वाद भी लिया और उनका रजिस्ट्रेशन कर उन्हें संजीवनी योजना का जिला कार्ड सौंपा। इस दौरान बुजुर्गों ने अरविंद केजरीवाल के साथ फोटो भी खिंचाई और उनको आशीर्वाद दिया।

कार बैटरी चोर गिरोह का पदार्फाश, तीन गिरफ्तार

नई दिल्ली, । दक्षिणी जिला एएटीएस ने कार की बैटरी चुराने वाले गिरोह का पदार्फाश कर तीन गुर्गों को गिरफ्तार किया है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि पुलिस ने उनके पास से चोरी की एक कार व 19 बैटरी बरामद की है। बदमाशों की पहचान गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश निवासी 34 वर्षीय प्रदीप कुमार, शाहदरा निवासी 26 वर्षीय समीर और न्यू मुस्तफाबाद निवासी 30 वर्षीय जीशान उर्फ भतीजा के रूप में हुई है। जांच में जीशान पर पहले से 21 आपराधिक मामले दर्ज मिले हैं। पुलिस के मुताबिक, हौज खास थाने में कार की बैटरी चोरी की शिकायत मिली थी। जांच के दौरान एएटीएस टीम ने वारदातस्थलों की सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू की। सीसीटीवी फुटेज में तीन संदिग्ध एक कार समेत दिखाई पड़े।

उत्तर रेलवे

ई–निविदा (ई–प्रोक्यूर्मेंट) के माध्यम से निविदा आमंत्रण

निम्नलिखित कार्य के लिये वरिष्ठ मंडल अभियंता/III, उत्तर रेलवे, दिल्ली मंडल में ई–निविदा आमंत्रण।

1	कार्य का नाम	सहायक मंडल अभियंता/ दिल्ली के तहत वरिष्ठ अनुभाग अभियंता/पी.वे./ दिल्ली के अनुभाग में विशेष गैर–मानक डायमंड (प्रति डायमंड दो कुंठित और दो तीव्र) की डिजाइन, विनिर्माण, आपूर्ति सहित दिल्ली यार्ड में गैर मानक डायमंड क्रॉसिंग का प्रतिस्थापन।
2	कार्य की अनुमानित लागत (रुपये)	रु. 15,83,37,727.80 (पंद्रह करोड़ तिरासी लाख सैंतीस हजार सात सौ सत्ताईस और अस्सी पैसे मात्र)।
3	बयाना राशि (रुपये)	रु. 9,41,700.00 (नौ लाख इकतालीस हजार सात सौ रुपये मात्र।)
4	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रुपये)	रु. 0.00
5	निविदा बोली प्रस्तुत करने और निविदा खोलने की तिथि और समय	14.01.2025 को 15:00 बजे तक।
6	वेबसाइट विवरण जहाँ निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है	निविदा www.ireps.gov.in वेबसाइट पर उपलब्ध।
7	आवंटन	26314103

• ठेकेदारों को ई–टेंडर प्रणाली में भाग लेने के लिए भारतीय रेलवे ई–प्रोक्योरमेंट सिस्टम (IREPS) साइट यानी www.ireps.gov.in के अंतर्गत पंजीकृत होना चाहिए। • सभी नियमों और शर्तों के लिए कृपया निविदा दस्तावेज देखें। • मैनुअल निविदायें स्वीकृत नहीं की जायेगी। • निविदा दस्तावेज और बयाना की लागत केवल नेट बैंकिंग या भुगतान गेटवे के माध्यम से स्वीकार्य होगी।

सं.: 128–W/280/ई–निविदा सूचना/39/2024–25/W–3 दिनांक: 23.12.2024

3922/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

10 साल दिल्ली बेहालः आप के खिलाफ भाजपा का आरोप पत्र, अनुराग ठाकुर बोले- पाप धोते-धोते यमुना काली हो गई

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली,। दिल्ली में विधानसभा चुनाल होने वाले हैं। चुनावी माहौल के बीच भाजपा और आम आदमी पार्टी एक दूसरे पर आरोप लगा रही हैं। सोमवार को दिल्ली में भाजपा ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ भाजपा का आरोप पत्र जारी किया। भाजपा नेता अनुराग ठाकुर में एक बार फिर अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी पर निशाना साधा है। उन्होंने कई मुद्दों पर केजरीवाल को घेरा और सवाल पूछे हैं। दिल्ली में प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या है। दिल्ली में भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने आरोप पत्र जारी करने के बाद कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने यमुना नदी को इतना प्रदूषित कर दिया है कि यह इतनी बदबूदार, झागदार और जहरीली हो गई है। आगे कहा कि मुझे याद है, 2022 में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान केजरीवाल ने कहा था कि अगले चुनाव से पहले, वह लोगों के साथ यमुना नदी में डुबकी लगाएंगे, यानी 2025 के चुनाव से पहले। केजरीवाल को उनका वादा याद दिलाते हुए अनुराग ठाकुर ने कहा कि 10 साल बीत गए हैं और 2025 में जाने के लिए केवल 10 दिन बचे हैं। क्या यमुना की सफाई हुई? क्या यमुना साफ हो गई है?, इतना ही नहीं उन्होंने कई सवाल भी पूछे हैं। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल सहित दिल्ली सरकार के अनेक मंत्री और दर्जनों विधायक जेल जा चुके हैं। जो केजरीवाल सोनिया गांधी और शीला दीक्षित को जेल में डालने की बात करते थे, वे गंभीर आरोप लगने के बाद भी अपना पद छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे। केजरीवाल ने शराब घोटाला करने का कामः वीरेंद्र सचदेवा दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने केजरीवाल पर बेहद गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि लोगों को शिक्षा और स्वास्थ्य का सपना दिखाने वाले केजरीवाल ने शराब घोटाला करने का काम किया है। उन्होंने कहा कि उत्तर पूर्वी दिल्ली के दंगों का दाग अब तक लोगों की स्मृतियों से गायब नहीं हुआ है। अरविंद केजरीवाल पर दिल्ली दंगे करवाने का बेहद गंभीर आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि इन्हीं दंगों में आइबी अफसर अंकित शर्मा को मारा गया था। अरविंद केजरीवाल ने अंकित शर्मा को मारने का आरोपी ताहिर हुसैन आम आदमी पार्टी का ही पार्षद था। दिल्ली में घर-घर पहुंचेगा भाजपा का आरोप पत्रः विजेंद्र गुप्ता भाजपा नेता विजेंद्र गुप्ता आरोप पत्र कमेटी के अध्यक्ष थे जिनके नेतृत्व में पार्टी ने यह आरोप पत्र तैयार किया। यह पत्र दिल्ली की सभी विधानसभा में जनता को दिया जायेगा। पार्टी ने दिल्ली की सभी 62 सीटों के लिए, जहां पर आम आदमी पार्टी के विधायक चुनाव जीते थे, अलग-अलग आरोप पत्र भी तैयार किये हैं। आगे कहा कि केजरीवाल की सरकार नवीं और 11वीं के 1.5 लाख बच्चों को हर साल फेल कर देती है जिससे वह दिल्ली के सरकारी स्कूलों का रिकॉर्ड बेहतर दिखाया जा सके। भाजपा ने चार्जशीट में लगाए ये आरोप दिल्ली में चुनाव के बीच भाजपा ने आम आदमी पार्टी के खिलाफ आरोप पत्र जारी किया। इस चार्जशीट में भाजपा ने कई आरोप लगाए हैं। जिसमें दो लाख छात्र शिक्षा से वंचित हैं। दिल्ली सरकार ने अपने स्कूलों का रिकॉर्ड बेहतर दिखाने के लिए 1.5 लाख छात्रों को फेल कर दिया। हजारों परिवार पानी के टैंकर से पानी पीते हैं। दस साल में दिल्ली के लोगों का एक भी राशन कार्ड नहीं बना है। प्रधानमंत्री आयुष्मान योजना दिल्ली में नहीं लागू की गई। जिससे लोगों को पांच लाख रुपये का मुफ्त इलाज नहीं मिल पाया। इसके अलावा दिल्ली में प्रदूषण के कारण लोगों के जीवन में 17 वर्ष तक की कमी हुई। सफाई न होने के कारण बारिश का पानी सड़कों पर फैला और इसमें डूबकर छात्रों की दर्दनाक मौत हुई। देशविरोधी संगठन से आर्थिक लाभ लेने का आरोप भी लगाया है। आम आदमी पार्टी के एक सांसद ने विदेश में भारत विरोधी मुहिम चलाने वाले व्यक्ति से मुलाकात की। संसद पर हमले के दोषसिद्ध व्यक्ति के बचाव किया। इसके अलावा महंगे टैक्स लगाकर जनता को महंगाई दी।

देशी तमंचा लेकर निकला वारदात करने, पेट्रोलिंग में दबोचा

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

मोहन गार्डन थाना की पुलिस टीम ने एक शातिर बदमाश को गिरफ्तार किया है। उसके पास से कंट्री मेड पिस्टल, जिंदा कारतूस बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान चंदन के रूप में हुई है यह भगवती गार्डन एक्सटेंशन, मोहन गार्डन का रहने वाला है। पहले से यह 26 आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। जो इसके ऊपर कनॉट प्लेस, क्राइम ब्रांच, रन्होला, मॉडल टाउन, विकासपुरी, द्वारका साउथ, मोहन गार्डन, रेलवे स्टेशन थाना में दर्ज हैं। डीसीपी अंकित सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि एसएचओ मुकेश अंटील की देखरेख में हेड कांस्टेबल जितेंद्र, राकेश, रमेश की टीम ने पेट्रोलिंग के दौरान रात के समय विपिन गार्डन इलाके के 55 फुटा रोड पर इस बदमाश को संदिग्ध हालत में जाते हुए देखा था। पुलिस को इसकी एक्टिविटी पर कुछ शक हुआ, इसे रोका गया। जब पूछताछ हुई और तलाशी ली गई तो इसके पास से पिस्टल और जिंदा कारतूस बरामद किया गया। इसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज कर लिया गया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है।

दिल्ली में बूंदाबांदी हुई, वायु गुणवत्ता गंभीर स्थिति में दर्ज की गई

नई दिल्ली, । राष्ट्रीय राजधानी में सोमवार को सुबह बूंदाबांदी हुई और कोहरा छाया रहा तथा न्यूनतम तापमान 8.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो इस मौसम के सामान्य तापमान से एक डिग्री कम है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, सुबह साढ़े आठ बजे दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 402 यानी ह्यगंभीरह्व श्रेणी में दर्ज किया गया। संभावना है कि बारिश की वजह से वायु गुणवत्ता में सुधार होगा। दिल्ली में सुबह साढ़े आठ बजे आर्द्रता का स्तर 95 प्रतिशत दर्ज किया गया। आईएमडी ने बताया कि अधिकतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है।

बम की धमकियों से निपटने के लिए दिल्ली के स्कूलों के शिक्षकों को प्रशिक्षित करेगी पुलिस

नई दिल्ली,। दिल्ली के स्कूलों को लगातार मिल रही बम की धमकियों से स्कूल प्राधिकारियों में दहशत फैल रही है, इसलिए दिल्ली पुलिस ने इस तरह के संकट से निपटने के लिए शिक्षकों और स्कूल कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का निर्णय लिया है। एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पुलिस शिक्षा विभाग के सहयोग से सभी सरकारी और निजी स्कूलों के शिक्षकों के लिए एक सेमिनार का आयोजन करेगी। पुलिस उपायुक्त (शाहदरा) प्रशांत गौतम ने कहा, ह्यह्यहम स्कूलों में बम की धमकी के दौरान बिना घबराए शांत रहने, प्रतिक्रिया करने और पुलिस के साथ समन्वय करने का तरीका सिखाएंगे।ह्वह्व उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण सत्र से साइबर अपराधों के बारे में जागरूकता भी फैलेगी। पिछले 10 दिनों में दिल्ली के कई स्कूलों को बम की धमकियां मिली हैं। इन धमकियों के कारण कक्षाएं बाधित हुईं और कई जांच एजेंसियों ने तलाशी अभियान चलाया। जांच में कुछ भी संदिग्ध नहीं पाया गया।

प्लेसमेंट सीजन 2024-25: आईआईटी दिल्ली के छात्रों को मिले 1200 से अधिक जॉब ऑफर

नई दिल्ली,। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) दिल्ली के छात्रों को

शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के लिए जारी प्लेसमेंट सीजन में प्री-प्लेसमेंट ऑफर (पीपीओ) सहित 1200 से अधिक जॉब ऑफर मिले हैं। अब तक लगभग 1150 व्यक्तिगत छात्रों का चयन किया गया है, जो संस्थान के मजबूत प्लेसमेंट रिकॉर्ड को दर्शाता है। इस वर्ष अब तक कैंपस में डबल डिजिट में ऑफर देने वालों में अमेरिकन एक्सप्रेस, बार्कलेज, बीसीजी, ब्लूस्टोन ज्वेलरी एंड लाइफस्टाइल प्राइवेट लिमिटेड, ड्यूश इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गोल्डमैन सैक्स, गूगल, ग्रेविटन रिसर्च कैपिटल, इंटेल इंडिया, मीशो, माइक्रोन टेक्नोलॉजी, माइक्रोसॉफ्ट, ओला, ओरेकल, पेयू, क्वाअई, क्वालकॉम, रोबस्ट रिजल्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, शिपरॉकेट, स्क्वायरपॉइंट कैपिटल, टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स, ट्राइडेंट ग्रुप और ट्यूरिंग ग्लोबल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड शामिल हैं। इस सत्र में, छात्रों को जापान, नीदरलैंड, दक्षिण कोरिया, ताइवान, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई वैश्विक क्षेत्रों के 15 से अधिक प्रतिष्ठित संगठनों से 50 से अधिक अंतरराष्ट्रीय प्रस्ताव भी प्राप्त हुए हैं। मौजूदा प्लेसमेंट सीजन पर टिप्पणी करते हुए, ऑफिस ऑफ करियर सर्विसेज (ओसीएस) के प्रोफेसर-इन-चार्ज, प्रोफेसर नरेश वर्मा दातला ने कहा कि आईआईटी दिल्ली की भर्ती प्रक्रिया बहुत अच्छी रही है और अब तक यह बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। हमारा मानना है कि आने वाले दिनों में भी इसी तरह का रुझान जारी रहेगा। ऑफिस ऑफ करियर सर्विसेज आने वाले दिनों में प्लेसमेंट के लिए आने वाले छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए कंपनियों और जॉब प्रोफाइल की रेंज का विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। आईआईटी दिल्ली के ओसीएस के सह-प्रभारी प्रोफेसर सुरेश नीलकांतन ने कहा कि हम अपने छात्रों की प्रतिभा और क्षमता को पहचानने के लिए अपने भर्तीकताओं की ईमानदारी से सराहना करते हैं और हम छात्रों को उनकी दृढ़ता और उत्कृष्ट प्रयासों के लिए बधाई देते हैं। अगले सेमेस्टर के अंत तक चलने वाला प्लेसमेंट सीजन आईआईटी दिल्ली के स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के प्लेसमेंट पर केंद्रित है।

भाजपा विधायकों ने विधानसभा में कैग रिपोर्ट पेश करने के मामले पर फिर किया उच्च न्यायालय का रुख

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली,। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सात विधायकों ने शहर के प्रशासन से संबंधित नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की 14 रिपोर्ट विधानसभा में पेश किए जाने के अनुरोध को लेकर सोमवार को दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया। याचिकाकर्ताओं के वरिष्ठ वकील ने कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश विभु बाखरू और न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ के समक्ष मामले का उल्लेख किया, जिसने निर्देश दिया कि इसे ह्यसामान्य प्रक्रियाह्व के तहत सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाए। कैग रिपोर्ट के संबंध में विधायकों द्वारा दायर की गई यह दूसरी याचिका है। याचिकाकर्ताओं की ओर से पेश वरिष्ठ वकील ने कहा कि इस मुद्दे पर पहले दायर की गई रिट याचिका के बावजूद सरकार ने अभी तक 14 कैग रिपोर्ट विधानसभा के समक्ष पेश नहीं की हैं। जब पीठ ने पूछा कि इस मामले में जल्द सुनवाई की आवश्यकता क्यों है तो वरिष्ठ वकील ने कहा कि चुनाव की घोषणा हो जाने के बाद विधानसभा का सत्र नहीं बुलाया जाएगा। अदालत ने कहा, सामान्य प्रक्रिया है। विपक्ष के नेता विजेंद्र गुप्ता और भाजपा विधायकों मोहन सिंह बिष्ट, ओम प्रकाश शर्मा, अजय कुमार महावर, अभय वर्मा, अनिल कुमार बाजपेयी और जितेंद्र महाजन ने विधानसभा के समक्ष कैग रिपोर्ट पेश करने के मामले पर पहले भी याचिका दायर की थी। वकीलों नीरज और सत्य रंजन स्वैन के माध्यम से दायर नई याचिका में याचिकाकर्ताओं ने कहा कि पहले के मामले में पारित आदेश के बावजूद अध्यक्ष को अभी तक रिपोर्ट नहीं मिली है। याचिका में कहा गया है, माननीय अध्यक्ष ने याचिकाकर्ताओं को सूचित किया कि उन्हें कैग रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है। जब 20 दिसंबर 2024 को याचिकाकर्ता संख्या एक ने कैग रिपोर्ट प्राप्त करने के बारे में फिर से पूछताछ की, तो दिल्ली विधानसभा के माननीय अध्यक्ष ने बताया कि उन्हें अभी तक यानी उस दिन 12 बजकर 51 मिनट तक कैग रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई। इसमें कहा गया है, यह माननीय न्यायालय के समक्ष जीएनसीटीडी (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार) की ओर से वरिष्ठ वकील द्वारा दिए गए बयान/वचन का स्पष्ट उल्लंघन है। याचिका में कहा गया है कि इसलिए उन्होंने दिल्ली सरकार और मुख्यमंत्री/वित्त मंत्री को निर्देश दिए जाने का अनुरोध किया है कि वे 14 कैग रिपोर्ट को समयबद्ध तरीके से दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष को भेजें ताकि सभी आवश्यक कदम उठाए जा सकें।

डिप्टी कमिश्नर बादल कुमार ने छतरपुर व खानपुर इलाकों में चुनाव पूर्व तैयारियों का जायजा लिया

नई दिल्ली, । दिल्ली नगर निगम के दक्षिण क्षेत्र के उपायुक्त बादल कुमार ने आज आगामी विधान सभा चुनावों की तैयारियों का जायजा लेने के लिए कई स्थलों का निरीक्षण किया। इसके तहत, बादल कुमार ने दिल्ली नगर निगम प्रतिभा विद्यालय, छतरपुर, निगम प्राथमिक विद्यालय, जे जे कॉलोनी, खानपुर आदि केंद्रों पर बुनियादी सुविधाओं का निरीक्षण किया। ये स्कूल आगामी विधान सभा चुनावों के लिए मतदान केंद्रों के तौर पर चिन्हित किए गए है। बादल कुमार ने कहा की चुनाव आयोग के निर्देशों के अनुरूप क्षेत्राधिकार में यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि मतदान केंद्रों पर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हों। बादल कुमार ने कहा दिव्यांग मतदाताओं के लिए भी अधिक से अधिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयास किए जा रहे हैं ताकि उन्हें मतदान करने में किसी परेशानी का सामना ना करने पड़े।

बादल कुमार ने कहा कि चुनाव आयोग द्वारा समय समय पर जारी निर्देशों को गंभीरता से लागू किया जा रहा है।

पश्चिमी जिला में 252 लोकेशन पर 1162 पोलिंग स्टेशन

चुनाव को लेकर तैयारी, राजनीतिक पार्टी के साथ मीटिंग

● 85 की उम्र से ज्यादा और दिव्यांग कर सकेंगे घर से वोट

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

राजधानी दिल्ली में नए साल में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर पश्चिमी दिल्ली जिला में भी वोटिंग को लेकर तैयारी अंतिम चरण में है। वेस्ट दिल्ली डिस्ट्रिक्ट की जिला निर्वाचन अधिकारी डीएम किन्नी सिंह के अनुसार लगातार कई मीटिंग पॉलिटिकल पार्टियों के साथ हो चुकी है। मतदाता पुनर्निरीक्षण लगातार किया जा रहा है, इइड (बूथ लेवल ऑफिसर) घर-घर जाकर इस प्रक्रिया को पूरी करने में जुटे हुए हैं। अभी तक 13 लाख 24645 मतदाता हैं, आगे और भी मतदाताओं के तय समय में जुड़ने की संभावना है, जिससे उनकी संख्या में बढ़ोतरी हो सकती है। इस बार पश्चिमी जिला निर्वाचन क्षेत्र के सात विधानसभा में 252 लोकेशन पर कुल 1162 पोलिंग स्टेशन होंगे। अभी तक के मतदाताओं की डिटेल के अनुसार महिलाओं की संख्या 6 लाख 24 हजार 263 है और पुरुष मतदाताओं की संख्या 7 लाख 298 पहुंच चुकी है। जबकि थर्ड जेंडर की संख्या अभी तक कुल 84 है। किन्नी सिंह ने कहा कि वेस्ट दिल्ली जिला में चुनाव की तैयारी जोरों पर चल रही है। इलाके में जाकर लोगों के बीच एप्प अवेयरनेस कैंपेन को लेकर भी जानकारी दी जा रही है। कम वोटिंग वाले क्लस्टर एरिया में अलग से कैंपेन हो रहा है। भारतीय निर्वाचन आयोग और मुख्य चुनाव अधिकारी के आदेश पर कई तरह के कार्यक्रम वेस्ट दिल्ली में किया जा रहा है। चुनाव की घोषणा के साथ ही जिला में फ्लाइंग स्क्वाड और नाका एक्टिव हो जाएगा। कुल 63 फ्लाइंग स्क्वाड की तैनाती अलग अलग शिफ्ट में होगी। यह मोबाइल टीम होगी निगरानी रखने और जांच के लिए। इसके अलावा 21 जगहों पर अलग से नाका लगाया जाएगा।

सड़कों पर अवैध कट बंद करने के निर्देश

नोएडा,। सूरजपुर कलेक्ट्रेट में सोमवार को जिला सड़क सुरक्षा समिति की समीक्षा बैठक हुई। बैठक की में अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) मंगलेश दुबे ने जिले के 29 दुर्घटनास्थल पर सुधार और अवैध कट बंद करने के निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) ने कहा कि बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं चिंता का विषय है। जिले में वर्ष 2023 से 29 ब्लैकस्पॉट हैं। इससे पहले इनकी संख्या 11 थी। उन्होंने कहा कि सभी वाहन चालकों को यातायात नियमों के बारे में जागरूक किया जाए, ताकि सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के साथ-साथ सड़क दुर्घटना में मृत्यु दर में कमी आ सके। उन्होंने परिवहन विभाग, यातायात पुलिस, शिक्षा और प्राधिकरण समेत संबंधित विभाग के अधिकारियों से कहा कि बस, टेंपो और टैक्सी स्टैंड के निर्माण के लिए गंभीरता से काम किया जाए। उनके निर्माण के लिए स्थान चिह्नित कर अवैध स्टैंड और अतिक्रमण पर अंकुश लगाई जाए। अवैध स्टैंड, अनाधिकृत पार्किंग, तेज गति वाहन, क्षमता से अधिक सामान ढोने और अन्य यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले चालकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

संक्षिप्त खबरें

शाहदरा पुलिस ने बम की धमकियों से निपटने के लिए स्कूली शिक्षकों को दिया प्रशिक्षण

नई दिल्ली, । शाहदरा जिला पुलिस की ओर से स्कूलों में मिल रही बम की धमकियों से निपटने के लिए एक शिक्षक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिला पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम ने बताया कि आनंद विहार स्थित गुरु गोविंद सिंह विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में साइबर अपराधों व नशीली दवाओं के दुरुपयोग से निपटने को लेकर भी जरूरी प्रशिक्षण दिया गया। इसके तहत यमुनापार स्थित स्कूलों के 247 से ज्यादा शिक्षकों जागरूक किया गया। इस दौरान कार्यक्रम में शाहदरा जिला पुलिस उपायुक्त प्रशांत गौतम, क्राइम ब्रांच के पुलिस उपायुक्त संजय जैन व क्राइम ब्रांच के एसीपी नारकोटिक्स संजय जैन व अन्य मौजूद रहे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि सोमवार को दिल्ली के उपराज्यपाल के संवाद कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए शाहदरा जिला पुलिस ने क्राइम ब्रांच व शिक्षा निदेशालय के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

लूट के आठ घंटों के भीतर तीन लुटेरे दबोचे

नई दिल्ली, । ज्योति नगर पुलिस ने लूट के एक मामले को वारदात के आठ घंटों के अंदर सुलझाते हुए रविवार को तीन लुटेरों को गिरफ्तार किया है। उत्तर पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त राकेश पावरिया ने बताया कि उनके कब्जे से तमंचा, मोटरसाइकिल व लूट की रकम बरामद हुई है। पकड़े गये आरोपियों की पहचान अश्वनी कुमार, अंकुर त्यागी और मयंक के रूप में हुई है। अश्वनी पर लूट व चोरी के तीन और मयंक पर चार आपराधिक मामले दर्ज मिले हैं। पुलिस लुटेरों से पूछताछ कर रही है। पुलिस के मुताबिक, रविवार तड़के 05.27 बजे ज्योति नगर थाने में हथियार के बल पर किराना स्टोर में छह हजार रुपये की लूट की पीसीआर कॉल मिली। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि तड़के पांच बजे वह अशोक नगर स्थित अपनी दुकान खोल रहे थे। इसी बीच बाइक पर आए तीन बदमाश उनकी दुकान में घुस गए और पीड़ित पर तमंचा तान कर दुकान से छह हजार रुपये लूटकर फरार हो गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की तो सीसीटीवी कैमरों की फुटेज में बाइकसवार तीनों बदमाश दिखे।

प्रथम पोद्दार 11 क्रिकेट मैच में दिल्ली ठउफसे पहुंचे लोग

● दिल्ली के अलग क्षेत्रों सहित नोएडा, फरीदाबाद से शामिल

● युवाओं और सीनियर का क्रिकेट मैच और साथ में भोज भी

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

पूर्वी दिल्ली के सोनिया विहार स्थित क्रिकेट ग्राउंड में प्रथम पोद्दार 11 क्रिकेट मैत्री मैच का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली और एनसीआर से काफी संख्या में पोद्दार समाज के लोग पहुंचे। क्रिकेट ग्राउंड पर आयोजित कार्यक्रम में दो मैच खेला गया। दिल्ली में हुए इस नई शुरूआत को लेकर संचालक अशोक पोद्दार ने बताया की युवा खिलाड़ियों की टीम के बीच पहला मैच खेला गया। जिसमें ए टीम ने बी टीम पर भरी अंतर से जीत दर्ज की। दूसरा मैच सीनियर लोगों के बीच खेला गया। कार्यक्रम का आयोजन दिल्ली में रहने वाले पोद्दार समाज के द्वारा मिलकर किया गया था। बदरपुर से पहुंचे अशोक पोद्दार ने कहा कि इस तरह के आयोजन से युवाओं में एक नई उमंग देखने को मिलती है। द्वारका से पहुंचे संजय पोद्दार ने कहा युवाओं और बुजुर्गों का मिश्रण इस मैत्री क्रिकेट मैच का अनूठा संगम रहा। नंगली विहार से आए शशि भूषण पोद्दार ने कहा कि आगे भी इस तरह के आयोजन होने से क्रिकेट खेल के क्षेत्र में युवाओं को आगे बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी। सत्यनारायण पोद्दार ने मैच के दौरान बीच बीच में कमेंट्री करके लोगों को आंखों देखा हाल बताया। बवाना से पहुंचे राजकुमार पोद्दार ने मैच का वीडियो ग्राफी के जरिए लोगों तक पहुंचाया। मयूर विहार से आए गणेश पोद्दार और दीपक पोद्दार ने अंपायरिंग करके कई महत्वपूर्ण निर्णय दिया। ओखला से पहुंचे मुकेश पोद्दार ने स्कोरर के रूप में अहम भूमिका निभाई। इस अवसर पर दास गार्डन से नील कमल पोद्दार, ख्याला से अनिल पोद्दार, विकास नगर से संजीत पोद्दार, नोएडा से कुंदन पोद्दार, द्वारका मोड़ से पोद्दार नवीन निश्चल सहित काफी गणमान्य और पोद्दार समाज के लोग शामिल हुए।

चाय बनाने वाले फ्लास्क वाली मशीन से निकला 34.67 लाख का सोना

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

नई दिल्ली, । कस्टम विभाग की टीम ने इंदिरा गांधी इंटरनेशनल (आईजीआई) एयरपोर्ट पर सोने की तस्करी के एक मामले का खुलासा करते हुए 467 ग्राम सोना बरामद किया है। जिसे चाय बनाने वाले मशीन में छुपाकर लाया गया था। इस मामले में पुलिस ने उप्र के रहने वाले एक हवाई यात्री को पकड़ा है। आरोपित रियाद की इंटरनेशनल फ्लाइट से आईजीआई एयरपोर्ट दिल्ली पहुंचा था। लेकिन यहां ग्रीन चैनल पार करने के बाद ही कस्टम की टीम ने उसे पकड़ लिया। कस्टम प्रवक्ता के अनुसार जब उस हवाई यात्री के लगेज की एक्स-रे मशीन में जांच की गई तो संदिग्ध नजर आया। सामान की जांच की गई तो सिल्वर कोटेड मैटेलिक ग्लास के अंदर से येलो रंग का पीस बरामद किया गया। उसके अंदर 24 कैरेट के 467 ग्राम गोल्ड बरामद किया गया। जिसकी कीमत 34 लाख 67 हजार रुपए बताई जा रही है। आगे की छानबीन कस्टम की टीम कर रही है।

दिल्ली : महिला सम्मान योजना, संजीवनी योजना के लिए पंजीकरण शुरू

नई दिल्ली,। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को ह्यमहिला सम्मान योजना और संजीवनी योजना का शुभारंभ किया। साथ ही साथ इनके लिए पंजीकरण शुरू हो गया है और इसका कार्ड भी मिल गया है। महिला सम्मान योजना में दिल्ली की हर महिला को हर महीने 2,100 रुपये मिलेंगे। ह्यसंजीवनी योजना के तहत दिल्ली के बुजुर्गों को सभी निजी और सरकारी अस्पतालों में मुफ्त इलाज मिलेगा और इसके लिए कोई सीमा नहीं होगी। अरविंद केजरीवाल ने इस मौके पर कहा, मैंने पहले भी अपनी गारंटियां पूरी की हैं और इन्हें भी पूरी करूंगा। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि यह पीला कार्ड महिलाओं के लिए हैं जिनसे उन्हें ह्यमहिला सम्मान योजना के तहत 2,100 रुपये मिलेंगे। भाजपा झूठ बोल रही है, बहका रही है। जब मैंने 2015 में कहा था कि हमारी सरकार आएगी तो बिजली मुफ्त करूंगा तो भाजपा वाले उस वक्त भी यही बातें बोलते थे और मैंने बिजली मुफ्त करके दिखाई। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि उन्होंने पानी और बसों में महिलाओं का किराया भी मुफ्त करके दिखाया। इसी तरह वह महिलाओं को 2,100 रुपये भी देंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए कहीं से भी बजट लाएं, यह उनकी जिम्मेदारी है अरविंद केजरीवाल ने चुनाव से पहले ह्यमहिला सम्मान योजनाह्व का लाभ मिलने की संभावना से इनकार किया। उन्होंने कहा कि बीजेपी के पास चुनाव लड़ने के लिए कोई एजेंडा नहीं है, कोई प्लानिंग नहीं है। वे दिल्ली के लोगों को बताएं कि पांच साल में दिल्ली के लिए बीजेपी वालों ने क्या किया है। उन्होंने कहा, दिल्ली में दो सरकारें हैं। आधी सरकार आम आदमी पार्टा की है। आधी सरकार बीजेपी की है। आम आदमी पार्टी की सरकार ने बिजली, पानी, महिलाओं का सफर, सड़कें, सीवर का काफी काम किया है। लेकिन भाजपा ने क्या काम किया। पूरी दिल्ली की कानून-व्यवस्था चरमराई हुई है, गैंगस्टर खुलेआम घूम रहे हैं, गोलियां चल रही हैं।

दिल्ली के अंदर एक ही काम दिया था वह भी नहीं किया।

आप संयोजक ने कहा कि भाजपा के सांसदों ने कोई काम नहीं किया।

अब चुनाव से पहले कभी चार्जशीट निकालते हैं, कभी मुझे गालियां देते हैं ।

इनका एक ही मेनिफेस्टो है झ केजरीवाल को गाली देना। उन्होंने सवाल किया कि क्या गालियों से दिल्ली का विकास हो सकता है।

उन्होंने लोगों से कहा, आज मैं आपसे वोट मांगने आया हूं।

अपने काम के नाम पर मांग रहा हूं कि पांच साल में मैंने क्या काम किए।

मैं यह गिना रहा हूं कि अगले पांच साल में क्या काम करूंगा।

इनके पास न सीएम का चेहरा है, न दिल्ली के लिए कोई एजेंडा है।

हरियाणा से लाई गई शराब सुल्तानपुरी में हुई जब्त

बाहरी जिला स्पेशल स्टाफ ने 1584 क्वार्टर बरामद किया

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

बाहरी जिला के स्पेशल स्टाफ की पुलिस टीम ने शराब तस्करी के एक मामले का खुलासा करते हुए एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके पास से 1584 क्वार्टर अवैध शराब का बरामद किया और तस्करी में इस्तेमाल एक कार को भी पुलिस ने जप्त किया है। गिरफ्तार किए गए आरोपों की पहचान नीरज उर्फ आशु के रूप में हुई है। यह रोहिणी इलाके का रहने वाला है। डीसीपी आउटर सचिन शर्मा ने बताया कि एसीपी ऑपरेशन नरेंद्र खत्री की देखरेख में इंस्पेक्टर रोहित, सब इंस्पेक्टर विपिन कुमार, हेड कांस्टेबल बीरबल, विकास, कांस्टेबल संदीप और अभिषेक की टीम ने इस शराब तस्कर के बारे में जानकारी इकट्ठा किया था। उसके बाद सुल्तानपुरी के हरी एंक्लेव में ट्रैप लगाकर एक कार को जांच के लिए रोका। जब उसकी तलाशी ली गई तो उसके अंदर से 33 कार्टून शराब के बरामद किए गए। जिसमें से 1584 क्वार्टर शराब भरकर ले गए थे। आरोपी के खिलाफ सुल्तानपुरी थाना में दिल्ली एक्साइज एक्ट के तहत मामला दर्ज करके उसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

दीपावली की रात चाकू से गोदकर किया सनसनीखेज मर्डर

52 दिन की लुका छिपी के बाद क्राइम ब्रांच ने दबोचा

नई दिल्ली, प्रातः किरण संवाददाता

उत्तम नगर में दीपावली की आधी रात हुए सनसनीखेज मर्डर के मामले में वांटेड क्रिमिनल को क्राइम ब्रांच की टीम ने आखिरकार 52 दिन बाद गिरफ्तार कर लिया है। हत्या की वारदात 31 अक्टूबर की देर रात डेढ़ बजे के आसपास हुई थी। उस समय से यह फरार चल रहा था। पुलिस के अनुसार यह हिस्ट्री सीटर बदमाश है। पहले से चार मामलों में शामिल रहा है। उत्तम नगर में हुई हत्या के मामले में यह मास्टर माइंड था। जिसकी तलाश लोकल पुलिस लगभग पौने दो महीने से कर रही थी। डीसीपी क्राइम सतीश कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि गिरफ्तार बदमाश की पहचान अंशु गुप्ता के रूप में हुई है। इसने अपने साथियों के साथ मिलकर 31 अक्टूबर को दिवाली की आधी रात हत्या की वारदात को अंजाम दिया था। जब गगन ओबेरॉय नाम का शख्स अपने साथियों के साथ मिलकर दिवाली सेलिब्रेशन कर रहा था। इस दौरान अंशु गुप्ता भी अपने साथियों के साथ वहां पहुंचा और वहां पर किसी बात को लेकर उनमें बहस हुई। रात 1:30 बजे के आसपास अंशु गुप्ता अपने साथियों के साथ हस्तसाल रोड पर गगन ओबेरॉय पर शार्प चाकू से जानलेवा हमला कर दिया। जिसमें गगन ओबेरॉय बुरी तरह घायल हो गया। सभी हमलावर वहां से फरार हो गए। गगन को तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उसकी मौत हो गई। उस मामले में लोकल पुलिस ने प्रदीप उर्फ मोनू नाग को गिरफ्तार कर लिया, लेकिन मास्टरमाइंड अंशु गुप्ता फरार चल रहा था। लगातार अपना ठिकाना बदल रहा था। फरारी के दौरान जब इसका पैसा खत्म हुआ तो वह फिर मजबूरी में वापस द्वारका इलाके में पहुंचा। लेकिन क्राइम ब्रांच की टीम अलर्ट थी। एसीपी नरेश कुमार की देखरेख में इंस्पेक्टर गुलशन यादव, सब इंस्पेक्टर रंधावा, चेतन, सहायक सब इंस्पेक्टर महेश त्यागी, हेड कांस्टेबल अरविंद और राधेश्याम की टीम ने सेक्टर 14 द्वारका के हीरोज मॉल के पास ट्रैप लगाकर इस आरोपी को धर दबोचा। पुलिस को पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह 2020 में बिंदापुर थाना इलाके में हत्या के प्रयास के मामले में भी शामिल रहा है। इसके अलावा यह आर्म्स एक्ट के मामले में भी इंवॉल्व था। इसकी गिरफ्तारी के लिए गैर जमानती वारंट भी कोर्ट के द्वारा जारी था।

20 एकड़ में फैली ब्लू बर्ड झील में बेहद कम हुआ पानी, सैकड़ों मछलियों की मौत

प्रात: किरण संवाददाता

मंडराया खतरा

हिसार। नेशनल हाईवे पर मौजूद शहर की ब्लू बर्ड झील धीरे-धीरे सूख रही है। पानी तेजी से कम होने के कारण सोमवार को उसमें मछलियां मरी हुई मिलीं। ठंड भी एक कारण बताया जा रहा है। ठंड से बचने के लिए मछलियां पानी के नीचे जाती हैं, मगर यहां पानी कम होने से वह बच नहीं पाईं। झील में मछलियों के लिए पांच से छह फीट पानी होना चाहिए मगर अभी ढाई से तीन फीट ही पानी है। झील में तेजी से पानी सूखने का बड़ा कारण एयरपोर्ट के पास से निकल रही राणा माइनर से पानी की सप्लाई बंद होना है। सालों से बंद इस पानी की सप्लाई को दोबारा सही से शुरू नहीं किया जा सका। झील में जलघर की एक लाइन से पानी देने का दावा किया गया है, मगर उसकी सप्लाई बहुत कम है।

पानी सप्लाई बंद होने से झील पर

सरकार की तरफ से नेशनल हाईवे-9 पर ब्लू बर्ड का 52 एकड़ में निर्माण किया गया था। उसमें 20 एकड़ में झील बनाई गई। उस झील में पहले पानी पूरा भरा रहता था। मगर पिछले कुछ सालों में पानी धीरे-धीरे कम हो रहा है। पिछले तीन साल से एयरपोर्ट निर्माण के बाद पानी सप्लाई बंद होने से झील पर खतरा मंडरा गया है।

पानी की निकासी बंद होने के बाद झील में स्काडा की लाइन और ट्यूबवेल का पानी डाला जा रहा था, मगर यह पानी काफी कम था। झील को भरने में दिक्कत आ रही थी। उस पानी के नाले से भी पानी चोरी के आरोप लग रहे हैं।

1995 में बना था ब्लू बर्ड

सरकार की तरफ से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1995 में 52 एकड़ में ब्लू बर्ड को स्थापित किया गया है। इसमें झील, काम्पलेक्स, जंगल एरिया सहित अनेक जगह छोड़ी गई। यहां पर आस पास के लोग घूमने भी आते है। इसके अलावा झील में नौकाविहार भी होता है।

35 लाख में तीन साल का ठेका

झील में मछली पानी के लिए साढ़े 35 लाख रुपये में तीन साल का ठेका लिया गया है। इसमें गोल्डन, रोहू, कतला, मराठी प्रजाति की मछलियों का पालन होता है। इसको ठेकेदार की तरफ से दिल्ली मंडी में बेचा जाता है। ठेकेदार के अनुसार मछली पालन में पांच से छह फीट पानी होना चाहिए। सिंचाई विभाग की तरफ से झील के लिए अब अलग से एक लाइन बिछाई जाएगी। इस पर 98 लाख रुपये खर्च होंगे। टेंडर किया जा चुका हैं। विभागों से एनओसी भी अभी लेनी बाकी है।

- एसएस कुहाड़, एसडीओ, सिंचाई विभाग।

विधायक आकाश सक्सेना ने किया रामलीला मंच का शिलान्यास

प्रात: किरण संवाददाता

मसवासी। नगर विधानसभा विधायक आकाश कुमार सक्सेना उर्फ हनी ने नगर पंचायत मसवासी मैं मोहल्ला चाऊपुरा में रामलीला ग्राउंड में मंच व स्थल एवं साप्ताहिक बाजार में स्ट्रीट वेंडर हेतू शैड के निर्माण कार्य का ईट रखकर शिलान्यास किया। शिलान्यास कार्यक्रम में बोलते हुए रामपुर शहर विधायक आकाश सक्सेना ने कहा कि आज मोदी जी एवं योगी जी के कार्यकाल में देश दिन दुना रात चौगुनी तरक्की कर रहा है उनका आदेश हमारे लिए पत्थर की लकीर है । उन्होंने कहा कि आज कल वही चुनाव जीतता है जिसका जनता से पारिवारिक रिश्ता होता है आजम खान जब आता था तब यह कहता था कि मैंने स्वार टांडा में ये कर दिया, मैंने वह कर दिया पैसा किसी के बाप का नहीं है पैसा जनता का है। मेरे पिता शिव बहादुर सक्सेना ने अपने कार्यकाल में स्वार टांडा विधानसभा में प्रत्येक गांव में सड़क बनवाई खूब विकास कराया जिसके बोर्ड अभी तक अनेक गांवों में लगे हुए हैं लेकिन विपक्ष द्वारा उन गांवो की तरफ कोई विकास नहीं किया गया आपको अपनी ताकत को पहचानना होगा उन्होंने कहा कि मेरा कार्यालय हर समय हर किसी के लिए खुला हुआ है जिसे तुरंत निस्तारण होगा। नगर पंचायत अध्यक्ष दिनेश गोयल ने कहा कि नगर में सभी वार्डों में विकास कार्य कराए जाएंगे। इस मौके पर नगर पंचायत मसवासी अध्यक्ष दिनेश कुमार गोयल ,पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष रघुवीर सिंह आर्य, सतनाम सिंह ढिल्लों, संसार सिंह, दिनेश चंद शर्मा, संजीव कुमार वर्मा, राजकुमार चौहान, अधिशासी अधिकारी मनोज कुमार मिश्रा, लेखा लिपिक अमित चंद्रा, रामपाल सिंह चौहान, राजू सैनी, जितेंद्र चंद्रा, कुलदीप मौर्य, परमिंदर मौर्य, बृजनंदन सागर, अनिल दिवाकर, महेश भारद्वाज ,संतोष मौर्य, विकास देवल आदि काफी संख्या में लोग रहे।

ग्रामीण विकास मंत्रालय प्रशिक्षण अनुभाग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित नव गठित महिला स्वयं सहायता समूहों के पदाधिकारियों का आवासीय प्रशिक्षण शुरू

प्रात: किरण संवाददाता

आसफपुर - बीते सोमवार को स्थानीय क्षेत्रीय ग्राम्य विकास प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य अनुज कुमार श्रीवास्तव व प्रसार कार्यक्रम अधिकारी संदीप कुमार अवस्थी के निर्देशन में ग्रामीण विकास मंत्रालय प्रशिक्षण अनुभाग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित महिला स्वयं सहायता समूहों के पदाधिकारियों/ सक्रिय सदस्यों का आवासीय प्रशिक्षण शुरू किया गया ।

इस कार्यक्रम समूह से संबंधित पंचशील एवं समूह के पदाधिकारियों के कार्य व आवश्यक दायित्वों के मामले में विस्तृत चर्चा की जा रही है

इसी क्रम में विद्युत सखियों को बिजली बिल की रसीद निकालने , विद्युत बिल में संशोधन करवाने व बिल जमा करने से लेकर विद्युत संबंधित आवश्यक जानकारी दी जा रही है। इस कार्यक्रम में डॉक्टर राजकिशोर सिंह, बी एम एम शशि शर्मा , राधेश्याम पाल, ममता, हेमलता के अलावा प्रेमसागर यादव, अमित कुमार, आकाश कुमार, रामगोपाल कश्यप आदि सहयोग कर रहे हैं ।

संबंधित विभागीय जानकारों के मुताबिक विद्युत सखी का प्रशिक्षण प्राप्त विद्युत सखियां ग्राम स्तर पर बिजली का बिल जमा करने , रसीद निकलकर देने जैसे अनेक कार्य करेंगी जिसका पारिश्रमिक विद्युत सखियों के बैंक खातों में सरकार भेजने का कार्य करेगी जिससे प्रशिक्षण प्राप्त महिला विद्युत सखियों की आय बढ़ेगी व उनकी आजीविका में आशाजनक सुधार होगा ।

इस प्रशिक्षण कार्यकम में बदायूं जिले के विकास खंड इस्लामनगर, आसफपुर व उसावां क्षेत्र की विनीता, नीरज देवी, मिथिलेश व तस्लीम सहित अनेक महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जा रहा है । यह जानकारी संस्थान के प्राचार्य अनुज कुमार श्रीवास्तव ने दी ।

अखिल भारतीय मौर्य महासभा की बैठक में एकजुट रहने की अपील

प्रात: किरण संवाददाता

बिलासपुर। बिलासपुर विधानसभा के ग्राम मनोना गांव में प्रधान रोहतास मौर्य द्वारा अखिल भारतीय मौर्य महासभा की एक विशाल वैठक का आयोजन किया कार्यक्रम में चंद्रगुप्त मौर्य तथा सम्राट अशोक मौर्य महान के चित्रों पर माल्यार्पण करके पुष्पांजलि दी गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय मौर्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजय मौर्य ने सभी समाज से एकजुट रहने की अपील की और कहा कि हमें आज के युग के हिसाब से आगे बढ़ना होगा हमें एकजुटता के साथ आगे चलना होगा तभी हमारे समाज की तरक्की संभव है। यशपाल मौर्य एडवोकेट प्रदेश अध्यक्ष मौर्य सभा चेतन मौर्य जिला अध्यक्ष भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा ने समाज के लोगों से नशा से मुक्त रहने की अपील की । नगर पंचायत मसवासी के निवर्तमान अध्यक्ष हरिओम मोर्य ने कहा कि समाज को आज एकजुट रहना अति आवश्यक है और युवाओं की राजनीति में भी भागीदारी बहुत जरूरी है जिससे अपने समाज का उत्थान कर सके।राजेश कुमार मौर्य टऊसाहब, मौर्य महासभा जिला प्रभारी अजय मौर्य एडवोकेट जिला अध्यक्ष मौर्य महासभा, राम अवतार मौर्य शीशगढ़, प्रताप सिंह मौर्य एडवोकेट, मदनलाल मौर्य, ओमप्रकाश राणा, अतर सिंह मौर्य, सुनील मौर्या, डॉ रामबाबू मौर्य, रामचरण मौर्य प्रधान, रामावतार मौर्या पूर्व प्रधान, प्रेम मौर्य गोविंद राम मौर्य पूर्व प्रधान ,सुभाष चंद्र मौर्य ,पूर्व प्रधान एवं जनपद एवं आसपास के जनपदों के समाज के सभी गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बाबरपुर विधानसभा में कौन होगा बीजेपी उम्मीदवार?

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली विधानसभा के चुनाव फरवरी में होने हैं, सभी पार्टियों ने अपनी रणनीति बनानी शुरू कर ही दी हैं बात बाबरपुर विधानसभा की करें तो यें सीट कुछ खास हो जाती हैं, क्योंकि यहाँ से आप पार्टी के गोपाल राय विधायक होने के साथ दिल्ली सरकार के मंत्री भी है, भाजपा की ओर से नरेश गौड़, चुनाव लड़ते रहे हैं कुछ संभावित चेहरे हैं, जिन पर पार्टी दाँव खेल सकती जैसे सुभाष मोहल्ला मंडल अध्यक्ष योगेश पाराशर, देवेश भारद्वाज, निगम पार्षद सत्या शर्मा कों पार्टी मौका दें सकती हैं ऐसा कयास लगाया जा रहा हैं की भाजपा ब्राह्मण चेहरे को बाबरपुर विधानसभा में उतार सकती है, अब यें तस्वीर तभी साफ होगी जब भाजपा की सूची जारी होगी हालांकि पोस्टरबाजी ने तो माहौल अभी से बना रखा हैं

गुरुग्राम: एरोबिक्स नेशनल जिम्नास्टिक चैंपियनशिप के लिए हरियाणा की टीम चयनित

- सभी आयु वर्ग में 25 लडके-लड़कियों का किया गया चयन
- 10 जनवरी से 14 जनवरी 2025 तक जम्मू में होगी चैंपियनशिप

प्रात: किरण संवाददाता

गुरुग्राम। हरियाणा जिम्नास्टिक संगठन के द्वारा एरोबिक्स नेशनल जिम्नास्टिक चैंपियनशिप के लिए लडके-लड़कियों का ट्रायल करके टीम का चयन किया गया। ट्रायल के लिए हरियाणा स्टाइल प्रतियोगिता में हरियाणा के विभिन्न जिलों के लगभग 50 लडकों व लड़कियों ने हिस्सा लिया। द स्पोर्ट्स प्लैनेट्स जिम्नास्टिक एकेडमी सेक्टर-66 में हुए ट्रायल के दौरान 25 लडके-लड़कियों की टीम चयनित की गई।

यह ट्रायल प्रतियोगिता हरियाणा जिम्नास्टिक संगठन के अध्यक्ष सूरजपाल अम्मू के दिशा-निर्देश अनुसार, हरियाणा जिम्नास्टिक के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व उपनिदेशक खेल परसराम की देख-रेख में संपन्न हुई। हरियाणा जिम्नास्टिक संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुकेश शर्मा विधायक द्वारा सभी चयनित खिलाडिों को शुभकामनाएं दी गई। मुकेश शर्मा द्वारा खिलाड़ियों को यह भी आश्वासन दिया गया कि राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा के जिम्नास्टिक खिलाड़ियों द्वारा मेडल जीतने पर उन्हें सम्मानित किया जाएगा। चैंपियनशिप के लिए ट्रायल प्रतियोगिता जिम्नास्टिक के अनुभवी जजों के द्वारा करवाई गई। इसमें मुख्य तौर पर अंतरराष्ट्रीय एरोबिक्स जिम्नास्टिक के जज अनूप गौरांग, और एरोबिक जज प्रियंका, नरेंद्र, शिवानी व अभिषेक शामिल रहे। इस अवसर पर हरियाणा जिम्नास्टिक के कई प्रशिक्षक व ऑफिशल्स देवेंद्र सिंह, सविता लंबा, सपना अदलखा, बलराम, आकाश चौधरी, मोहित, कपिल आदि मौजूद रहे उपस्थित रहे।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवाओं की होगी बड़ी भूमिका: राव इंद्रजीत सिंह

- सीआरपीएफ परिसर में नवचयनित युवाओं को सौंपे गए नियुक्ति पत्र
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 71 हजार 556 युवाओं को जारी किए अपाइंटमेंट लैटर

प्रात: किरण संवाददाता

गुरुग्राम। केंद्रीय योजना, सांख्यिकी, कार्यक्रम कार्यान्वयन एवं संस्कृति राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने कहा कि आजादी के 100 साल पूरे होने की वेला में वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में युवा पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। युवाओं को शिक्षित व कुशल बनाकर उन्हें योग्यता के आधार पर रोजगार एवं स्वरोजगार प्रदान करने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं। केंद्रीय मंत्री राव सोमवार को कादरपुर स्थित सीआरपीएफ परिसर के आडिटोरियम सेंटर में नवचयनित युवाओं को नियुक्ति पत्र दिए जाने के लिए आयोजित रोजगार मेला कार्यक्रम में बोल रहे थे।

वर्चुअली माध्यम से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सीआरपीएफ, आईटीबीपी, बैंक, पोस्टल सर्विस, आयकर, सीमा सुरक्षा बल आदि 45 विभिन्न केंद्रों में नियुक्त हुए देश के 71 हजार 556 युवक-युवतियों को उनके अपाइंटमेंट लैटर जारी किए। प्रधानमंत्री ने भी उपस्थित युवाओं को वीसी के जरिए संबोधित किया तथा उन्हें अपनी शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत आर्थिक विकास की ओर तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। आज भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी आर्थिक व्यवस्था वाला देश बन चुका है। अगले तीन-चार सालों में इसके तीसरे पायदान पर पहुंचने की उम्मीद है। राष्ट्र निर्माण के इस दौर में देश को युवा पीढ़ी से काफी उम्मीदें हैं। हमारे युवा अपने लक्ष्य को अथक परिश्रम व लगन से यूं ही हासिल करते रहें तो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में इनकी सेवाओं का बड़ा योगदान होगा। उन्होंने बताया कि ब्रिटिश काल में लार्ड मैकाले ने शिक्षा का अंग्रेजीकरण कर दिया था। आज हमारे युवा अपने देश की 13 मातृभाषाओं में परीक्षाएं दे सकते हैं।

कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि युवाओं को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने के लिए एक करोड़ शिक्षित युवक-युवतियों को 500 निजी बड़ी कंपनियों में अप्रेंटिस के तौर पर काम करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। इस दौरान उन्हें प्रति माह पारिश्रमिक दिया जाएगा। प्रधानमंत्री का सपना है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार तथा स्वरोजगार के लिए युवाओं को व्यापक अवसर दिए जाएं। केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह ने 84 युवाओं को इस अवसर पर नियुक्ति पत्र प्रदान किए। सीआरपीएफ के कमांडेंट आशीष कुमार झा ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कमांडेंट विजय सिंह खटाना, डिप्टी कमांडेंट अमर कुमार, रणजीत सिंह, एलडीएम अशोक कुमार सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

कौशल बढ़ाकर नौकरियां देने वाले युवा तैयार कर रही है सरकार : राव नरबीर सिंह

गुरुग्राम। हरियाणा के उद्योग एवं वाणिज्य, पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने सोमवार को मानेसर निगम क्षेत्र के गांव कांकरौला, बास कुसला, बास हरिया व ढाणा में अपने धन्यवादी दौरे में जनसमस्याओं की सुनवाई की। उनके निवारण के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

राव नरबीर सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के प्रत्येक परिवार में एक व्यक्ति को रोजगार का अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से हरियाणा कौशल विकास मिशन के तहत युवाओं को कौशल प्रदान किया जा रहा है। इसके लिए हरियाणा कौशल विकास मिशन के माध्यम से विशिष्ट प्रशिक्षण और पाठ्यक्रम भी चलाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी क्षेत्र में नौकरियां सीमित हैं। ऐसे में शत-प्रतिशत युवाओं को नौकरी देना सरकार के लिए मुश्किल काम है। इसलिए सरकार ने बीड़ा उठाया है कि युवाओं को कौशल विकास व गुणवत्तापरक शिक्षा देकर इतना सशक्त बनाया जाए कि वे नौकरी मांगने वाले की अपेक्षा नौकरी देने वाले बनें।

उद्योग मंत्री ने कहा कि आजकल इंडस्ट्रीज को ऐसे युवाओं की आवश्यकता है, जो नवीनतम तकनीक के अनुसार उद्योगों की मांगों को पूरा कर सकें। ऐसे में युवाओं को उनके घर के पास ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए सरकार निरन्तर औद्योगीकरण को भी बढ़ावा दे रही है।

मंत्री ने ग्रामीणों से अतिक्रमण हटाने का किया आह्वान

राव नरबीर सिंह ने इस दौरान गांवों में बढ़ते अतिक्रमण पर चिंता जताते हुए ग्रामीणों से स्वयं ही इस दिशा में सार्थक प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम एक बढ़ता हुआ जिला व शहर है। जिसमें आबादी भी निरन्तर बढ़ रही है। ऐसे में इसे एक बेहतर शहर बनाए रखने के लिए थोड़े प्रयास जनता को भी करने होंगे। उन्होंने विशेषकर औधोगिक क्षेत्रों के नजदीक लगते गांवों में जल्द से जल्द अतिक्रमण हटाकर एक बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करने का आह्वान भी किया। पर्यावरण मंत्री ने इस दौरान ग्रामीणों से यह भी आह्वान किया कि वे रायशुमारी के साथ गांव में पॉलीथीन के इस्तेमाल पर भी प्रतिबंध लगाएं।

सफाई कर्मचारियों की मांगों पर विचार किया जाएगा: कृष्ण कुमार

राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के चेयरमैन ने गुरुग्राम में सुनी सफाई कर्मियों की समस्याएं

गुरुग्राम । हरियाणा राज्य सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष इंजी. कृष्ण कुमार ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी तथा नगर निकाय विभाग के उच्चाधिकारियों के साथ विचार-विमर्श कर सफाई कर्मचारी संगठनों की ओर से दिए गए सुझावों को लागू करने का प्रयास किया जाएगा। सफाई कर्मियों के प्रति राज्य सरकार का सकारात्मक रूख है। इसी उद्देश्य से उनकी भलाई के लिए यह कमीशन बनाया गया है।

वे सोमवार को यहां विश्राम गृह में में सफाई कर्मचारियों की समस्याएं सुन रहे थे। उन्होंने कहा कि आयोग की ओर से सफाई कर्मचारियों के पंजीकृत संगठनों का एक डाटाबेस तैयार किया जाएगा। जिससे कि रजिस्टर्ड संगठनों के साथ ही आयोग की बात हो सके। उन्होंने स्पष्ट किया कि राज्य सफाई कर्मचारी आयोग पंजीकृत संगठनों की ओर से दी गई मांगों पर ही गंभीरता से विचार करेगा। जिससे कि सही मायने में सफाई कर्मचारियों को सरकार से सीधा लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि आयोग की पहल पर प्रदेश में यूनिवर्सिटी, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, पंचायत विभाग आदि में काम कर रहे सफाई कर्मचारियों को हरियाणा कौशल रोजगार निगम में शामिल कर उनके मसलों का सुलझा लिया गया है। अब केवल शहरी निकाय विभाग है, जिसके कुछ मामले बचे हुए हैं। इनका भी सरकार व अधिकारियों से मिलकर जल्दी समाधान करवा दिया जाएगा।

बैठक में गुरुग्राम व मानेसर नगर निगम के सफाई कर्मचारी संगठनों के प्रतिनिधियों ने बताया कि दोनों निगमों जरूरत से बहुत कम सफाई कर्मचारी लगाए गए हैं, जिस कारण सफाई व्यवस्था में सुधार नहीं हो रहा है। रोजगार नहीं मिलने के कारण ठेके से हटाए गए सफाई कर्मचारी भी परेशान हैं। उन्होंने बताया कि जिन एजेंसियो ने सफाई का पहले ठेका लिया था, उन्होंने भी कर्मचारियों के बकाया वेतन का अभी तक भुगतान नहीं किया। इसी प्रकर सफाई कर्मियों के लिए एक सुदृढ़ बीमा पॉलिसी होनी चाहिए। चेयरमैन कृष्ण कुमार ने कहा कि इन मांगों पर विन्रमतापूर्वक विचार किया जाएगा।

गुरुग्राम: प्रतिबंधित सिगरेट खरीदने/बेचने की आरोपी महिला काबू

आरोपी महिला के कब्जा से 26 पैकेट प्रतिबंधित सिगरेट बरामद

गुरुग्राम। पुलिस थाना सेक्टर 29 द्वारा एक महिला को मचान आहता सेक्टर-29 के नजदीक एक खोखे पर प्रतिबंधित ई-सिगरेट व विदेशी सिगरेट रखने/बेचते काबू किया। आरोपी महिला की पहचान नीतू छीकारा निवासी सिविल लाइन, गुरुग्राम के रूप में हुई। पुलिस टीम द्वारा आरोपी महिला के कब्जा से 9 डिब्बी अवैध ई-सिगरेट व 17 डिब्बी अवैध विदेशी सिगरेट बरामद करने पर इसके खिलाफ थाना सेक्टर-29 गुरुग्राम में सिगरेट व तंबाकू प्रोडक्ट एक्ट की सम्बन्धित धाराओं के तहत अभियोग अंकित किया गया।

पूर्व प्रधानमंत्री की जयंती पर किसान दिवस का आयोजन, सम्मानित हुए किसान

चौधरी सहाब ने अपने जीवन में किसानों को उनका हक दिलाने का काम किया: ढिल्लो

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। कलेक्ट्रेट परिसर में जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स की अध्यक्षता में विशिष्ट अतिथि एमएलसी हरिसिंह ढिल्लों की उपस्थिति में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की जयंती के रूप में किसान सम्मान दिवस का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम एमएलसी द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह की चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्जवलित कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस अवसर पर नेशनल मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन अन्तर्गत प्रसार सुधार योजना (आत्मा) के अन्तर्गत जनपद स्तरीय कृषक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम भी आयोजित किया जिसमें कृषि, पशुपालन, मत्स्य आदि से संबंधित जो कृषक भाई अच्छी उपज पैदा कर रहे हैं उनको प्रमाण पत्र देकर शॉल उड़ाकर सम्मानित किया गया। श्री ढिल्लों ने कहा पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का जीवन समाज सेवा में न्योछावर रहा। हमें चौधरी साहब के बताए रास्ते पर चलना है। उन्होंने उपस्थित सभी कृषक भाइयों से अनुरोध किया कि विभिन्न द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई है उनका अच्छे से अवलोकन करें और जाकर आसपास के लोगों को बताये। उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि अपनी खान-पान की चीजे गन्ना, सब्जी, फल आदि को कुछ क्षेत्र में जैविक खेती के माध्यम से करें ताकि बीमारियों से बचा जा सके और केमिकल चीजों का बहिष्कार करें। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह को सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब उनके द्वारा बताएं रास्ते पर चले और बच्चों को अच्छे संस्कार दें, जीवन में ईमानदारी लायें और अच्छा वातावरण बनाये। उन्होनें कहा कि चौधरी सहाब किसानो और गरीबों के मसीहा थे और हमेशा उनकी उन्नति के लिए संघर्ष करते रहे। उन्होने कहा कि बिना चौ0 साहब की नीतियों को लागू किये देश को तरक्की के रास्ते पर आगे नही ले जाया जा सकता। उन्होने अपना जीवन किसानो को उनके अधिकार दिलाने में न्योछावर कर दिया। कहा देश की समृद्धि तभी संभव है जब किसान खुशहाल होगा और चौ0 साहब यह बात अच्छी तरह जानते थे। उन्होनें कहा कि चौधरी साहब एक बहुत ही ईमानदार व्यक्ति थे और हमेशा देश के हित में ही उन्होने काम किया। चौ0 साहब ने किसानो के लिए जीवन समर्पण किया था और इसी लिए आज वह किसानो के मसीहा के रूप में जाने जाते है। जिलाधिकारी ने सर्वप्रथम चौधरी चरण सिंह की जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी और उन्होंने कहा कि देश की आत्मा गांव से होती है विकास का बीज भी गांव से होता है, शहर का विकास भी गांव से होता है इसलिए आपसे अनुरोध है कि आधुनिकता के साथ परंपरागत खेती कर करें जिससे शरीर तो स्वस्थ होगा ही और उपज भी बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि चौधरी चरण सिंह की दूरदर्शिता को लेकर चलें ,उनके दूरदर्शिता को लेकर किसान समृद्ध होगा और वह अपनी दूरदर्शिता के कारण मृदा को केमिकल से बचा पाएगा। उन्होंने कहा अपनी आने वाली पीढियां के जीवन के संरक्षण के लिए ऑर्गेनिक चीजों का इस्तेमाल कर खेती करें। इस अवसर पर जिला उद्यान अधिकारी, मुख्य मत्स्य अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, डीडी कृषि आदि सहित अन्य अधिकारियों ने अपने विभागों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से किसान भाइयों को अवगत कराया। उपनिदेशक कृषि द्वारा किसान भाइयों को यदि किसी प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि योजना में कोई समस्या आती है तो वह व्हाट्सएप नंबर 7839882775 पर प्रेषित करें उनकी समस्या का समाधान घर बैठे किया जाएगा उन्हें कार्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। उन्होंने सभी किसान भाइयों से फॉर्मर रजिस्ट्री के बारे में जानकारी दी और कहा सभी फार्मर रजिस्ट्री बनवा ले जो किसी भी जन सेवा केंद्र या अपने द्वारा बनाई जा सकती है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अश्विनी कुमार मिश्र, जिला विकास अधिकारी आदि सहित जनपद स्तरीय अधिकारी एवं कर्मचारियों सहित जनपद के किसान भाई उपस्थित रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी पर जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

सुशासन के लिए योजना का लाभ पात्र अन्तिम व्यक्ति को प्रदान किया जाए

प्रात: किरण संवाददाता

अमरोहा। जिलाधिकारी निधि गुप्ता वत्स की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में भारत रत्न श्रद्धेय स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेई के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जनपद में चल रहे सुशासन सप्ताह 19 से 24 दिसंबर तक के संबंध में जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जिलाधिकारी ने सभी विभागों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की एक-एक कर जानकारी प्राप्त की। उपायुक्त उद्योग से प्लेज पार्क योजना, बीएसए ने निपुण भारत योजना, जिला विद्यालय निरीक्षक द्वारा स्मार्ट क्लास के संचालन, कृषि विभाग द्वारा सम्मान निधि योजना के अंतर्गत किसी भी कृषक को प्रधानमंत्री सम्मान निधि योजना से कोई समस्या है तो उसका निस्तारण करने हेतु व्हाट्सएप नंबर पर जारी कर शिकायत की सुनवाई, जिला प्रोबेशन अधिकारी द्वारा बाल विवाह रोकने व गरीब बच्चों की पढ़ाई की आर्थिक सहायता आदि की जानकारी दी। आगे कहा कि शासन के निर्देश पर सुशासन सप्ताह मनाया जा रहा है इसलिए प्रत्येक विभाग द्वारा गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हो इसके लिए विशेष ध्यान दिया जाए। उन्होंने कहा हमारा प्रयास अपने विभाग के संचालित योजनाओं को अच्छी प्रकार लागू करना है जिसका लाभ पात्र व्यक्ति को मिले। उन्होंने कहा यदि हमें देश को बढ़ाना है तो सर्वप्रथम स्वास्थ्य रोजगार और शिक्षा पर जोर देना होगा यही प्रमुख रूप से सुशासन है। सुशासन के लिए योजना का लाभ पात्र अन्तिम व्यक्ति को प्रदान किया जाए। उन्होनें कहा कि विभागों द्वारा जो योजनायें संचालित है वह कहीं न कहीं एक दूसरे विभागों से जुड़ती है इसलिए आपस में समन्वय स्थापित कर सहयोग के साथ योजनाओं को संचालित करें। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि सुशासन सप्ताह के अंतर्गत सभी विभागों द्वारा किये जाने वाले कार्यों को ट्विटर आदि के माध्यम से भी प्रचारित किया जाए।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अश्वनी कुमार मिश्र, अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) माया शंकर, पी0डी0-डी0आर0डी0ए0 अमरेंद्र प्रताप सिंह, जिला विकास अधिकारी जिला विद्यालय निरीक्षक,जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी, मत्स्य अधिकारी आदि सहित सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहें।

विचार मंथन

सम्पादकीय

गिग अर्थव्यवस्था की चुनौतियां

हाल ही में प्रकाशित फोरम फॉर प्रोग्रेसिव गिग वर्कर्स के द्वारा आयोजित एक वेबिनार में भारत की गिग अर्थव्यवस्था पर श्वेतपत्र प्रकाशित किया गया है। इसमें जहां भारत में तेजी से बढ़ती हुई गिग अर्थव्यवस्था में तेजी से बढ़ती हुई नौकरियों और चुनौतियों का उल्लेख किया गया है, वहीं कहा गया है कि भारत में गिग अर्थव्यवस्था इस वर्ष 2024 तक 17 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढकर 455 अरब डॉलर के स्तर तक पहुंचने की उम्मीद है। श्वेत पत्र के अनुसार भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में गिग अर्थव्यवस्था का योगदान वर्ष 2030 तक 1.25 प्रतिशत के स्तर पर होगा। गौरतलब है कि देश में सरकारी क्षेत्र की नौकरियों में कमी आ रही है, लेकिन गिग अर्थव्यवस्था में रोजगार के मौके छलांगे लगाकर बढ़ रहे हैं। गिग अर्थव्यवस्था का मतलब है अनुबंध आधारित या अस्थायी रोजगार (गिग वर्क) वाली अर्थव्यवस्था। गिग अर्थव्यवस्था के तहत गिग वर्कर प्रोजेक्ट दर प्रोजेक्ट आधार पर काम करते हैं और अपनी सेवाएं देते हैं। व्यापक तौर पर कोविड-19 के बाद डिजिटलीकरण के प्रसार ने गिग अर्थव्यवस्था को अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया है। जहां शहरी क्षेत्रों में गिग वर्कर को अभी तक कंस्ट्रक्शन, मैन्यूफैक्चरिंग, डिलिवरीज जैसे श्रम आधारित और कम योग्यता आधारित कार्यों से जोडकर देखा जाता रहा है, वहीं अब गिग वर्किंग के मौके व्हाइट कॉलर जॉब यानी ऐसे कामों में भी बढ़ रहे हैं, जहां उच्च स्तर के कौशल और शिक्षा की जरूरत होती है। उच्च स्तर के कौशल और शैक्षणिक योग्यता के साथ काम के ऐसे मौके ई-कॉमर्स, फिनटेक, हेल्थटेक, लॉजिस्टिक्स, आतिथ्य, बैंकिंग, वित्तीय सेवा और बीमा क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रहे हैं। खास बात यह है कि गिग अर्थव्यवस्था के तहत अब महिलाएं भी पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ावा मिल रहा है। महिलाओं की भागीदारी गिग अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में दिख रही है। चाहे मार्केटिंग हो या फाइनेंस, महिलाएं किसी से पीछे नहीं हैं। इसके साथ ही महिलाएं इस समय फ्रीलांसिंग में भी सबसे ज्यादा दिलचस्पी दिखा रही हैं। उल्लेखनीय है कि गिग अर्थव्यवस्था में रोजगार के मौके बढे के संबंध में नीति आयोग के आंकड़े भी महत्वपूर्ण हैं। नीति आयोग के मुताबिक देश में इस समय 77 लाख गिग कर्मी हैं। ऐसे कर्मियों की संख्या तेजी से बढे की उम्मीद जताई जा रही है। इसका कारण यह है कि गिग कर्मियों की व्यवस्था फिलहाल केवल शहरी क्षेत्र में ही है और मुख्य रूप से ये सेवा क्षेत्र में सक्रिय हैं। मगर अब इनका दायरा बढ़ेगा तो गिग कर्मियों की संख्या में भी बढ़ोतरी होगी। नीति आयोग के आकलन के अनुसार भारत में गिग वर्कर्स की संख्या 2030 तक बढकर 2.3 करोड़ के लगभग हो जाएगी। देश में टियर-2 और टियर-3 शहरों में गिग अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। खासतौर से मुंबई, दिल्ली, पुणे, बेंगलूरु, हैदराबाद, कोलकाता, लखनऊ, इंदौर और चेन्नई सहित देश के छोटे-बड़े शहरों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष गिग नौकरियां निर्मित होते हुए दिखाई दे रही हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इन दिनों देश की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और रोजगार से संबंधित विषयों पर प्रकाशित हो रही विभिन्न रिपोर्टों में कहा जा रहा है कि देश में गिग अर्थव्यवस्था के कारण विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारी की दर में तेजी से कमी आ रही है और रोजगार के नए मौके बढ़ रहे हैं। चूंकि गिग कर्मचारी अक्सर संगठित और असंगठित श्रम के बीच ग्रे जोन में आते हैं, जिससे लाभ और संसाधन प्रभावित होते हैं, इसलिए बड़ी प्लेटफॉर्म कंपनियां तेजी से गिग श्रमिकों के लिए बेहतर कामकाजी परिस्थितियों को प्राथमिकता दे रही हैं।

समृद्ध किसान, समृद्ध भारत

एमएस स्वामीनाथन ने कहा था : ह्यअगर कृषि गलत हो गई, तो किसी और चीज को सही होने का मौका नहीं मिलेगा। ह्न किसान देश की पूंजी हैं। देश के घरेलू उत्पाद की वृद्धि में कृषि महत्वपूर्ण रोल अदा करती है। यदि किसान धनी हैं तो समूचा देश धनी है। भारत की अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है। इसलिए कृषि की भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुआयामी भूमिका है। प्राथमिक क्षेत्र, जिसमें कृषि आती है, द्वितीय एवं तृतीय क्षेत्र के लिए नींव है। कृषि ही सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ाती है। भारत कृषि प्रधान देश है। यहां किसानों को अन्नदाता और धरती पुत्र कहा जाता है। किसान मौसम की परवाह किए बिना तपती धूप, बारिश और कडकड़ाती ठंड में भी दिन-रात खेतों में काम करके इस देश की अर्थव्यवस्था के विकास और प्रगति में अपना अद्वितीय योगदान देते हैं। उनको अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी भी कहते हैं। हमारे देश में 60-70 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं। सकल घरेलू उत्पादन में कृषि का 20.2 प्रतिशत योगदान है। देश के कार्यबल में 47 प्रतिशित कृषि और किसानों का योगदान है। किसानों और कृषि की अहमियत समझते हुए किसानों के हित के लिए पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह ने बहुत काम किए। उन्हीं के समय किसान सशक्त हुए हैं। उन्होंने ऋण मोचन विधेयक व भूमि जोत अधिनियम तथा अन्य किसान हित के बहुत से कार्य करवा कर किसानों को राहत प्रदान की। इसलिए प्रतिवर्ष 23 दिसंबर के दिन भारतवर्ष में राष्ट्रीय किसान दिवस मनाया जाता है। इस दिन को किसानों के हिमायती और उनको सशक्त बनाने वाले पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। हर वर्ष नए थीम को घोषित कर उस पर काम किया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि के योगदान को देखते हुए ही अन्नदाताओं को सम्मान देने के लिए 2001 से प्रतिवर्ष देश भर में 23 दिसंबर को राष्ट्रीय किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन किसानों तथा कृषि से संबंधित विषयों पर विभिन्न कार्यक्रमों, वाद-विवाद, सेमिनारों, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, चचाओं, कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों, निबंध लेखन प्रतियोगिताओं और समारोहों का आयोजन किया जाता है। सरकार कृषि और किसानों के लिए बहुत सी स्कीमों को ला रही है, परंतु फिर भी किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। किसानों को उनके उत्पादन का बहुत कम हिस्सा प्राप्त होता है। भारतीय रिजर्व बैंक के एक अध्ययन के अनुसार किसान भारत में फलों और सब्जियों में एक-तिहाई विक्रय मूल्य प्राप्त करते हैं। थोक और परचून विक्रेता दो-तिहाई हिस्सा ले जाते हैं। किसानों का हिस्सा टमाटर, प्याज और आलू पर 33, 36 और 37 प्रतिशत क्रमशः रह जाता है। बहुत बार तो किसान लागत के बराबर मूल्य न मिलने पर अपनी फसलों को सडकों पर फैंक देते हैं। यह सब कुशल आपूर्ति श्रृंखला एवं विपणन प्रणाली के न होने, फसलों की नाशवान प्रवृत्ति, भंडारण सुविधाओं की कमी तथा बहुत संख्या में बिचौलियों के होने के कारण है। इसलिए भारत में किसान बार-बार धरना-प्रदर्शन तथा आत्महत्याएं कर रहे हैं। भारत में 2014 से 2022 तक 100473 किसानों ने आत्महत्या की है। 4 दिसंबर 2023 को राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार साल 2022 में 11290 किसानों ने आत्महत्या की थी जो 2021 से 3.7 प्रतिशत ज्यादा हैं। 2021 वर्ष में 10281 आत्महत्या के केस थे। 2022 के आंकड़ों के अनुसार हर घंटे में एक किसान आत्महत्या करता है। महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा किसान आत्महत्या करते हैं। आत्महत्या के मुख्य कारण हैं- सूखा, असामयिक बारिशों से खड़ी फसलों का बर्बाद होना, चारों ओर बढ़ती कीमतें एवं सरकारी नीतियां, उच्च ऋण बोझ, सार्वजनिक मानसिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत और मानसिक मुद्दे आदि। इसलिए यह भी आवश्यक है कि इस दिन किसानों के स्वास्थ्य, आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए किसानों के आत्महत्या करने के कारणों का पता लगा कर, उन पर कार्य करना चाहिए। भारत को समृद्ध बनाना है तो किसानों और कृषि मजदूरों को समृद्ध करना होगा। इसके लिए जो स्कीमें वर्तमान में किसानों/कृषि क्षेत्र के लिए चल रही हैं, उनमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ये किसानों तक पहुंचनी भी चाहिए। अगर इनमें रिसाव है तो उसे रोकना चाहिए। इसके अतिरिक्त बहुत से फैसले लेने तथा उनका दायरा बढ़ाने की आवश्यकता है जिनमें सभी फसलों, सब्जियों, फलों पर गारंटीकृत न्यूनतम सर्मथन मूल्य, ऋण माफी, भूमि सुधार, कम दरों पर उत्तम किस्म के बीज, खाद, कीटनाशक देना, सभी फसलों, सब्जियों व फलों को बीमा योजना के अंतर्गत लाया जाए, ताकि प्राकृतिक आपदा, अन्य कारणों से हुए नुकसान की किसानों को भरपाई हो सके। दूध आदि का भी सर्मथन मूल्य घोषित हो। ग्रामीण इलाकों में सहकारी समितियों के गठन पर जोर दिया जाए तथा इनकी कार्यप्रणाली पारदर्शी की जाए। दूध प्रसंस्करण तथा दूध उत्पाद प्लांट सहकारी समितियों द्वारा स्थापित किए जाएं, जलवायु परिवर्तन तथा भूजलस्तर जो गिर रहा है।

संसद के कलुषित परिवेश का जिम्मेवार कौन?

जरा सोचिए कि छह करोड़ रुपए से क्या-क्या हो सकता है? हजारों गांवों की कि स्मत संसद की एक दिन की कार्यवाही पर होने वाले खर्च से बदल सकती है। लाखों गरीब लड़कियों की शादी हो सकती है। लघु और कुटीर उद्योगों से हजारों नौजवानों की कि स्मत संवर सकती है। लेकिन सांसद यह सब नहीं सोचते। विकास की योजनाएं भले न बनें, व्यक्तिगत हित जरूर सुधरने चाहिए। क्या सांसद देश से ऊपर हो गए हैं? एक बात और सारे सांसद हंगामेबाज हों, ऐसी बात नहीं हैं। जो कामकाज को लेकर गंभीर हैं, वे कुछ नहीं कर पाते। सवाल है कि सांसद हर बार माहौल क्यों नहीं बनाते? क्या सांसद केवल हंगामा करने के लिए ही पहुंचते हैं?

प्रियंका सौरभ
(लेखिका, स्वतंत्र टिप्पणीकार)

पिछले कुछ दिनों से संसद में जो कुछ हो रहा है, उससे देश निराश है। संसद चलाकर ही सरकार विपक्ष के सवालों के जवाब सही ढंग से दे सकती है। हंगामे के माहौल में सांसदों को अपनी बात रखने का मौका ही नहीं मिलता। कोई बच्चा भी समझ सकता है वेल में जाकर नारेबाजी और हंगामा कर सदन की कार्यवाही रोकने से कैसे विरोध जताया जा सकता है। अच्छी बात तो तब कही जाएगी, जब आप अपने सवाल साफ-साफ रखें और सरकार साफ-साफ जवाब दे पाए। लेकिन इससे भी अधिक चिंता का विषय यह है कि संसद की कार्रवाई में बाधा अपवाद की बजाय नियम बन गया है और हमारे राजनेताओं को इस पर कोई पछतावा नहीं होता है। पिछले वर्षों में यह गिरावट बड़ी तेजी से आई है। सांसद एक-दूसरे पर चिल्लाते हैं, विधायी कागजों को छीनकर फाड़ देते हैं, छोटे से मुद्दे पर सदन के बीचों-बीच आ जाते हैं। पिछले वर्षों में ज्यादातर विधेयकों को बिना चर्चा के ही पारित किया गया है। यह संसदीय प्रणाली का दुरुपयोग है। अब विपक्षी पार्टियों और कुछ सांसदों ने संसद की दुर्गति कर रखी है। दोनों सदनों में निजी एजेंडों को लेकर अनुत्पादक हंगामा कर कार्यवाही ठप करा देना आम बात है। संसद में शोर-शराबा, वेल में जाकर नारेबाजी करना, एक-दूसरे पर निजी कटाक्ष करना यहां तक कि कई बार हाथापाई पर उतारू हो जाना आज संसद की आम तस्वीर है। आखिर सियासी पार्टियों और सांसदों का बर्ताव इतना अराजक क्यों हो गया है? क्या आज पार्टियों के निहित स्वार्थों ने संसद को मजाक बनाकर रख दिया है। सांसदों के रवैये को देखते हुए लगता नहीं है कि उसकी मंशा देश के विकास की योजनाएं बनने देने की है। ऐसा लग रहा है कि सांसदों ने पूरे संसदीय लोकतंत्र को बंधक बना लिया है। क्योंकि लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही आजकल टीवी पर लाइव दिखाई जाती है, लिहाजा देश का आम आदमी भी वह सब कुछ देखता है, जो संसद में रोज हो रहा है। आखिर सांसद लोगों के सामने अपनी क्या छवि पेश कर रहे हैं? जरा सोचिए कि देश के लोगों के मन में आपकी क्या छवि बनती जा रही है? यह सच है कि इस गिरावट का कारण यह है कि राजनीति आज संख्या का खेल बन गई है जिसके चलते क्षेत्रीय क्षत्रप अपनी मनमर्जी कराने के लिए दबाव डालते हैं। वे न केवल दादागिरी की राजनीति में विश्वास करते हैं अपितु सफल संसद सत्र के पैमाने को ह्यजिसकी लाठी, उसकी भैंसह्न भी बनाते हैं। आज विषय-वस्तु की बजाय आकार महत्वपूर्ण बन गया है जिसके चलते संसद में गली-मोहल्लों के झगड़ों जैसे दृश्य देखने को मिलते हैं। इसलिए इस गिरती राजनीतिक संस्कृति और नैतिक मूल्यों में संसदीय कार्रवाई में राजनीति को प्रभावित करने वाली विषय सामग्री नहीं मिलती है। कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि संसद अब महज एक स्कोरिंग क्लब बन कर रह गई है। बहुतों को पता होगा कि संसद की एक मिनट की कार्यवाही पर ढाई लाख रुपए खर्च हो जाते हैं। इस तरह एक दिन की सामान्य कार्यवाही पर औसतन छह करोड़ रुपए का खर्च आता है। जिस दिन कार्यवाही लंबी चलती है, उस दिन खर्च और बढ़ जाता है। जरा सोचिए कि यह पैसा आता कहां से है। जाहिर है कि देश के आम लोगों की जेब से ही आता है। लोकतंत्र में इससे बड़ा और क्या मजाक होगा कि संसद की कार्यवाही लगातार ठप रहे या फिर दिन भर रह-रह कर हंगामा होता रहे, फिर भी एक दिन में छह करोड़ रुपए खर्च हो जाएं। जरा सोचिए कि छह करोड़ रुपए से क्या-क्या हो सकता है? हजारों गांवों की कि स्मत संसद की एक दिन की कार्यवाही पर होने वाले खर्च से बदल सकती है। लाखों गरीब लड़कियों की शादी हो सकती है। लघु और कुटीर उद्योगों से हजारों नौजवानों की कि स्मत संवर सकती है। लेकिन सांसद यह सब नहीं सोचते। विकास की योजनाएं भले न बनें, व्यक्तिगत हित जरूर सुधरने चाहिए। क्या सांसद देश से ऊपर हो गए हैं? एक बात और सारे सांसद हंगामेबाज हों, ऐसी बात नहीं हैं। जो कामकाज को लेकर गंभीर हैं, वे कुछ नहीं कर पाते। सवाल है कि सांसद हर बार माहौल क्यों नहीं बनाते? क्या सांसद केवल हंगामा करने के लिए ही पहुंचते हैं? सांसदों ने लोकसभा को पंगु बना कर रख दिया है। हकीकत यह है कि लोकतंत्र का लोक यानी देश की जनता लोकसभा का चुनाव सीधे तौर पर करती है। ऐसे में अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए सदन को लोक के सदन यानी लोकसभा की गरिमा का सम्मान करना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि लोकसभा में हुए हर काम में अड़ंगा डाल दिया जाए। लोकसभा में तय दिनों में सभी सांसदों को तीन-तीन मिनट ही सही, अपने चुनाव क्षेत्र के बारे में बोलने दिया जाए। बार-बार हंगामा करने वाले सांसदों को चिन्हित किया जाए और उनकी सूची प्रचारित कराई जाए। ऐसे नियम बनाए जाएं कि वेल में आने या पर्चा लहराने या दूसरा किसी भी कि स्म का हंगामा करने वाले सांसद के खिलाफ खुद-ब-खुद कोई तय कार्यवाही हो जाए। कुछ सांसद वॉकआउट करने के बाद दोबारा सदन में क्यों आ जाते हैं? केवल दिखावा करने के लिए ऐसा करते हैं, उन्हें देश के विकास से कोई लेना-देना नहीं है। वे संसद में कुछ कर नहीं पा रहे हैं और उधर उनके लोकसभा क्षेत्र की जनता त्रस्त, क्योंकि वे उनकी समस्याएं सुलझा ही नहीं पा रहे हैं, क्योंकि संसद में केवल हंगामा हो रहा है। इसलिए संसद को अखाड़ा बनने से रोकें। नेतृत्व को भी अपनी बात समझाएं, उनके हर गलत-सही आदेश का आंख मूंदकर पालन न करें। लोकतंत्र के पवित्र मंदिर की गरिमा बचाए रखना सांसदों का प्रथम काम है। संसद को महत्वहीन बनाने के खतरनाक आयामों को शायद ये लोग नहीं समझते हैं। हमारी संसद हमारे राष्ट्र की आधारशिला है जो जनता का प्रतिनिधित्व करती है और जिससे अपेक्षा की जाती है कि वह हमारे राष्ट्रीय हितों पर संप्रभु निगरानी रखे। सरकार संसद के प्रति उत्तरदायी है और सरकार का अस्तित्व उस पर लोकसभा के विश्वास पर निर्भर करता है। अतः समय आ गया है कि हमारे सभी सांसद इस बात पर ध्यान दें कि संसदीय लोकतंत्र को कैसे मजबूत किया जा सकता है। अन्यथा जनता ही उसका उपहास करने लगेगी। हमारे सांसदों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि वे किस तरह की विरासत छोड़ कर जा रहे हैं। क्या वे संसद को इसके पतन के भार के नीचे दबने देंगे? आज जो हो रहा है, वो हम देख ही रहे हैं। उम्मीद है कि देश के सांसदों को, सांसद चलाने वालों को इस बात का भान जल्द हो कि देश का नागरिक उन्हें कितनी उम्मीद के साथ देखता है। साथ ही उन्हें कई मौकों पर उदाहरण की तरह रखता है।

भारत, वीटो और भारत की चेतावनी

सवाल ये है कि क्या जयशंकर इतना नहीं जानते की वीटो का इस्तेमाल किसी से पूछकर नहीं किया जाता। जिसके पास वीटो पावर है वो इसका इस्तेमाल करता ही है। 1970 से लेकर अब तक अमेरिका 82 बार वीटो पावर का इस्तेमाल कर चुका है, रूस ने सबसे ज्यादा 294 बार वीटो पावर का इस्तेमाल किया है। रूस के राजदूत व्यचेस्लाव मोलोतोव को तो दुनिया मिस्टर वीटो के नाम से ही पुकारने लगी थी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद विश्व आवश्यक बल प्रयोग करने का अधिकार भी रखती वीटो का इस्तेमाल किया था

राकेश अचल
(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार है)

भारत के पास वीटो पावर नहीं है फिर भी भारत अब पहले वाला भारत नहीं है। भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत कभी भी दूसरों को अपने फैसलों पर ह्यवीटोह्न लगाने की अनुमति नहीं देगा और वह किसी डर की परवाह किए बिना राष्ट्रीय हित और वैश्विक भलाई के लिए जो भी सही होगा वह करेगा.। एस जयशंकर ने भले ही किसी का नाम न लिया हो, लेकिन उनका इशारा सीधे तौर पर चीन की ओर था. दरअसल, यूएन में चीन भारत से जुड़े प्रस्ताव वर वीटो का इस्तेमाल कर अड़ंगा लगाता रहा है।

सबसे पहले तो ये जान लीजिये कि ये वीटो पावर है क्या बला? दरअसल संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य देशो को मिला हुआ विशेषाधिकार ही वीटो पॉवर ह्न कहलाता हैं. जिन देशों के पास यह विशेषाधिकार होता हैं वो परिषद् में प्रस्तावित किसी भी प्रस्ताव को रोक सकते हैं या उसे नकार सकते हैं, भले ही उसके पक्ष में कितने भी वोट पड़े हों। किसी प्रस्ताव को पारित करने के लिए परिषद् के सारे स्थायी सदस्यों का वोट और 4 अस्थाई सदस्यों का वोट मिलना जरूरी होता हैं. सुरक्षा परिषद् के पाँच स्थायी सदस्य जिन्हें वीटो पॉवर ह्न प्राप्त हैं उनमें महाबली अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन शामिल है। भारत को अभी तक ये विशेषाधिकार नहीं मिला है।

भारत की विदेश नीति में इस समय स्पष्टता का अभाव है। भारत कभी अमेरिका के साथ खड़ा दिखाई देता है तो कभी रूस के साथ। भारत ने अपने पारंरिक विरोधी चीन के साथ भी रिश्ते सुधरने के प्रयास भी किये हैं लेकिन उसे हमेशा खतरा बना रहता है की यदि संयुक्त राष्ट्र में भारत के खिलाफ कोई मामला गया तो चीन उस पर अपने वीटो का इस्तेमाल कर सकता है।

भारत के खिलाफ अभी हालाँकि कोई प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में नहीं है लेकिन ऐसे तमाम मामले हैं जो वहां उठाये जा सकते हैं, इसीलिए शायद विदेशमंत्री जयशंकर ने अपनी और से कहा कि ह्लस्वतंत्रता को कभी भी तटस्थता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए. हम ह्यसंगतह्न होने के किसी डर की परवाह किए बिना अपने राष्ट्रीय हित और वैश्विक भलाई के लिए जो भी सही होगा, वह करेंगे। भारत कभी भी दूसरों को अपने फैसलों पर वीटो लगाने की अनुमति नहीं दे सकता। ह्व जयशंकर ने कहा कि भारत आज एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है.। एक तरफ, पिछले दशक ने दिखाया है कि उसके पास क्षमताएं, आत्मविश्वास और सबसे महत्वपूर्ण बात, व्यापक मोर्चों पर विकास को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता ह।

सवाल ये है कि क्या जयशंकर इतना नहीं जानते की वीटो का इस्तेमाल किसी से पूछकर नहीं किया जाता। जिसके पास वीटो पावर है वो इसका इस्तेमाल करता ही है। 1970 से लेकर अब तक अमेरिका 82 बार वीटो पावर का इस्तेमाल कर चुका है, क्या उसने किसी से पूछकर इस विशेषाधिकार का इस्तेमाल किया? रूस ने ही भारत के पक्ष में 4 बार अपने वीटो पावर का इस्तेमाल किया। रूस ने सबसे ज्यादा 294 बार वीटो पावर का इस्तेमाल किया है। रूस के राजदूत व्यचेस्लाव मोलोतोव को तो दुनिया मिस्टर वीटो के नाम से ही पुकारने लगी थी। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद विश्व शांति के लिए प्रतिबंधों के साथ ही आवश्यक बल प्रयोग करने का अधिकार भी रखती है। रूस ने 1957, 1961, 1962 और 1971 में भारत के पक्ष में अपने वीटो का इस्तेमाल किया था

विश्व गुरु बनने का प्रयास कर रहे भारत को अभी तक संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थाई सदस्यता और वीटो पावर नहीं मिली है, जबकि भारत आबादी के लिहाज से अब दुनिया का नंबर वन देश है, लेकिन न कांग्रेस और न भाजपा की सरकारें वीटो पावर हासिल करने में कामयाब हो पायीं। भूटान और पुर्तगाल ने भारत के पक्ष में आवाज उठाई है। भारत कि पड़ौसी देश पाकिस्तान, बांग्लादेश म्यांमार, श्रीलंका यहाँ तक की मालदीव से भारत की अनबन है अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस पहले ही भारत का समर्थन कर चुके हैं. हालाँकि चीन, भारत की स्थायी सदस्यता में सबसे बड़ी बाधा बन रहा है। जब तक चीन नहीं मानता तब तक भारत को वीटो पर नहीं मिल सकती और बिना वीटो पावर के भारत बिना सुदर्शन चक्रधारी विष्णु जैसा है। भारत 2021 में सुरक्षा परिषद का अस्थाई सदस्य बन चुका है लेकिन उसे अभी तक स्थाई सदस्यता नहीं दी गयी है। परिषद में 9 और देश अस्थाई सदस्य हैं।

भारत ने वीटो के बारे में अचानक जो कुछ कहा है उससे ये आशंका होने लगी है कि संयुक्त राष्ट सुरक्षा परिषद में कोई न कोई प्रस्ताव भारत के खिलाफ आने वाला है, यदि ऐसा नहीं है तो विदेशमंत्री को वीटो पावर के बारे में जिक्र करने की क्या जरूरत थी? संसद में तो इस बारे में कोई जिक्र हुआ नही। देश के आम चुनावों में किसी दल ने भारत को वीटो दिलाने की बात अपने चुनाव घोषणा पत्र में की नहीं। फिर अचानक ये वीटो राग कहाँ से श्रुरू हो गया? लगता है की सरकार देश के अंदरूनी मुद्दों से जनता का ध्यान बंटाने के लिए वीटो-वीटो गा उठी है। भारत को विश्वगुरु बनने की सनक छोड़कर वीटो हासिल करने कि लिए काम करना चाहिए।

पत्रकारिता के अपराधीकरण का दौर

कुमार कृष्णन

राजनीति का अपराधीकरण और अपराध का राजनीतिकरण इस देश में विमर्श का बड़ा मुद्दा रहा है लेकिन पत्रकारिता के अपराधीकरण पर कभी कोई चर्चा नहीं होती। हां, शोर तब मचता है जब कोई पत्रकार वसूली या भयादोहन करते, अपराधियों या पुलिस के साथ मिलकर अपहरण, फिरौती या रंगदारी जैसे संगीन जुर्म मे पकड़ा अथवा शामिल पाया जाता है। पत्रकारिता में आला दर्ज के ब्लैकमेलर, बदमाश, लफूआ व पत्रकारिता के नाम पर ठेकेदारी करने वालों लूटेरों की फौज आ गई है जो गांधी, अम्बेडकर, माखनलाल जी की इस पवित्र पत्रकारिता का भी नाश करने में लगे हैं। मुझे याद है कि एक प्रतिष्ठित अखबार के कार्यलय में अचानक एक कट्टर ईमानदार भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी आक्रोशित मुद्रा में प्रधान संपादक के कार्यालय में घुस गए उक्त आक्रोशित भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी ने कड़े शब्दों में उनके अखबार में लिखित समाचार का खंडन किया और संपादक ने शांत मुद्रा में उनकी बातों को सुना क्योंकि उन्हें सच्चाई मालूम हो गई थी। अब सवाल उठता है कि राज्य में कितने ऐसे अधिकारी हैं, जो संपादक के कार्यालय में जाकर अपना आक्रोश प्रकट कर सकें और यहीं सवाल कितने पत्रकारों से भी हे की क्या आप में इतनी दम है कि एक ईमानदार अधिकारी के आक्रोश को झेल लें, उत्तर नहीं है। ये बाते लिखने का मतलब क्या है? आज का अधिकारी और आज का पत्रकार, दोनों समझ गये हैं कि दोनों क्या है? दोनों भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। दोनों एक दूसरे के पोषक हो गये हैं? बिहार में मुंगेर जिले के पत्रकार खतरनाक अपराधियों से सुपारी लेकर हत्याकांड को अंजाम दे रहे हैं। इसका खुलासा मुंगेर के पुलिस अधीक्षक सैयद इमरान मसूद ने किया है कि मनजीत मंडल और उसके वाहन चालक चंदन मंडल की हत्या में जिन चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है, उसमें एक पत्रकार को भी गिरफ्तार कर लिया गया है। गिरफ्तार किए गए पत्रकार हैं अभिषेक कुमार, पिता गुणानंद ठाकुर, सकिन जगन्नाथ टोला, गांव फरदा, थाना सफियासराय, जिला मुंगेर। हाल में ही जिला प्रशासन ने एक पखवारा पूर्व मैराथन दौड़ के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भागीदारी के लिए उसे अन्य पत्रकारों का साथ सम्मानित भी किया था। जिन अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया है उसमें यह सफियासराय थाना क्षेत्र के जगन्नाथ टोला फरदा ग्राम निवासी अमरजीत उर्फ डेविड, पिता अशोक सिंह और सन्नी उर्फ भानु, पिता प्रमोद कुमार और मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के नया टोला मुबारकचक गांव निवासी नवीन तांती उर्फ लुला, पिता प्रेम प्रकाश गांधी। पुलिस अधीक्षक ने कहा है कि सभी गिरफ्तार चारों अभियुक्तों ने पुलिस के समक्ष स्वीकार किया है कि दोहरे हत्याकांड को अंजाम देने के लिए उन लोगों ने खतरनाक अपराधी पवन मंडल से पांच पांच लाख रुपए की सुपारी ली थी। इस सनसनीखेज दोहरे हत्याकांड में अभी दोनों शूटर फरार चल रहे हैं जिनकी तलाश पुलिस कर रही है। विदित है कि 13 जुलाई 2024 को दिनदहाड़े मुंगेर भागलपुर सड़क मार्ग में मुफस्सिल थाना क्षेत्र के संगीता लाइन होटल के पास मनजीत मंडल और उसके चालक चंदन मंडल की हत्या गोलियों से अपराधियों ने भून कर कर दी थी। मंजीत मंडल को यह पता नहीं था कि उसका दोस्त ही उसके हत्या की पटकथा लिख देगा। उसने अपने खास दोस्त पत्रकार अभिषेक कुमार को कुख्यात पवन से मिलाया था जिसने पवन के इशारे पर पैसे के लिए अपने ही दोस्त मंजीत के हत्या की पूरी पटकथा तैयार कर दिया। यह किसी ओर ने नहीं, बल्कि गिरफ्तार अभिषेक ने पुलिस को दिये अपने स्वीकारोक्ति बयान में बताया है। अभिषेक ने अपने स्वीकारोक्ति बयान में बताया कि वर्ष 2021 में पवन मंडल की बहन रूबी कुमारी की शादी हुई थी। उस समय मंजीत और पवन में गहरी दोस्ती थी। मंजीत ने ही पवन मंडल के बहन की शादी का कार्ड अभिषेक को देकर शादी में आमंत्रित किया था। इस शादी में अभिषेक ने मंजीत के साथ भाग लिया था जहां उसकी पहचान पवन मंडल से हुई थी। जिसके बाद धीरे-धीरे पवन और अभिषेक के बीच दोस्ती गहरी हो गयी। इसी बीच जमीन कारोबार में हिस्सेदारी और रूपयों के लैन-देन को लेकर पवन और मंजीत की दोस्ती में दरार हो गया। पवन ने अभिषेक को अपने पक्ष में लेकर मंजीत की हत्या करने के लिए तैयार किया क्योंकि अभिषेक दोनों का दोस्त बना हुआ था। जिसका फायदा उठा कर अभिषेक ने मंजित मंडल हत्याकांड की पूरी पटकथा लिख दी। जब मंजीत मंडल हत्याकांड की पूरी पटकथा तैयार हो गयी तो उसे पूरा करने के लिए रूपयो की जरूरत हुई। अभिषेक ने अपने स्वीकारोक्ति बयान में बताया है कि पवन मंडल का भाई सुधीर मंडल उर्फ सुब्बा ने 5 लाख रूपया अभिषेक को दिया। 5 लाख की रकम गिरफ्तार मुफस्सिल थाना क्षेत्र के नयाटोला मुबारकचक निवासी नवीन तांती उर्फ लुल्हा को दिया गया था। अभिषेक ने अपनी स्वीकारोक्ति बयान में बताया कि पवन मंडल किसी कांड में पुलिस की गिरफ्तारी से बचने के लिए फरार हो गया। जिसके बाद पवन मंडल से उसकी बहन रूबी उसका बात कराती थी।

किसानों की समृद्धि के लिये लगातार हो रहे हैं काम : योगी

किसानों के लिए 2014 से जो प्रयास प्रारंभ हुआ, दुनिया उसे मॉडल के रूप में ले रही है

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि देश की समृद्धि के लिये अन्नदाता किसान को समृद्ध हो जरुरी है और इसे ध्यान में रखते हुये डबल इंजन की सरकार लगातार काम कर रही है।

पूर्व प्रधानमंत्री और किसानो के मसीहा माने जाने वाले चौधरी चरण सिंह की जयंती पर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये श्री योगी ने कहा चौधरी साहब कहा करते थे कि किसान गरीब होगा तो भारत अमीर नहीं हो सकता। भारत को समृद्ध बनाने के लिए अन्नदाता किसान को समृद्ध बनाना पड़ेगा। इसे ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार द्वारा किसानों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य हो रहे हैं। किसानों के लिए 2014 से जो प्रयास प्रारंभ हुआ, दुनिया उसे मॉडल के रूप में ले रही है। मुख्यमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती किसान सम्मान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होने विधानसभा स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद मुख्यमंत्री कृषक उपहार योजना के अंतर्गत 11कृषकों को ट्रैक्टर की चाबी दी और हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होने कहा कि आजादी के बाद किसानों के मुद्दों को लेकर चौधरी चरण सिंह का कांग्रेस के साथ मतभेद हुआ था, लेकिन श्री मोदी ने पहली बार किसानों को भारत के राजनीतिक एजेंडे व सरकार की प्राथमिकता का कार्य किया स्वॉयल हेल्थ कार्ड, उन्नत किस्म के बीज उपलब्ध कराने, खेती को तकनीक से जोड़ने, कृषक दुर्घटना बीमा योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि सिंचाई योजना, किसान सम्मान निधि आदि योजनाओं से किसानों की उन्नति के लिए कार्य किए जा रहे हैं। श्री योगी ने कहा कि 2014 में पीएम ने कहा था कि हमें किसानों की आमदनी को दोगुना करना है। प्रदेश में 1996 से 2017 तक (22 वर्ष) में कुल 95 हजार करोड़ रुपये गन्ना किसानों के खाते में गया था, लेकिन 2017 से अब तक 2 लाख 61 हजार करोड़ की राशि डीबीटी के माध्यम से भेजा गया है। पीएम मोदी का जोर है कि लागत को कम करना व उत्पादन को बढ़ाना है और इसी के माध्यम से किसान को समृद्ध व खुशहाल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने साढ़े सात वर्ष में 23 लाख हेक्टेयर भूमि को अतिरिक्त सिंचाई की सुविधा दी। 14 लाख निजी नलकूपों को प्रदेश सरकार द्वारा फ्री में विद्युत उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके एवज में दो से ढाई हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष सरकार अपने पास से पैसा दे रही है। पहले से लगे ट्यूबवेल को सोलर पैनल से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। किसान अपनी आमदनी बढ़ा सकें, इसके लिए भी केंद्र व प्रदेश सरकार की तरफ से कई पहल की गई है। श्री योगी ने सम्मानित होने वाले किसानों के कार्यों की तारीफ की और कहा कि इन किसानों का पुरुषार्थ प्रेरणादायी है। खेती घाटे का सौदा नहीं है, बल्कि ईमानदारी से कार्य करने पर इसके सुखद परिणाम आएंगे। सीएम ने एक हेक्टेयर में उच्चतम फसल उगाने वाले सफल किसानों की कहानी बताई। गोरखपुर के किसान श्याम दुलारे यादव ने एक हेक्टेयर खेती में 79 कुंतल गेहूं, रायबरेली के फूलचंद ने 44.12 कुंतल का उत्पादन किया है। जालौन के हेमंत कुमार ने 45 कुंतल मटर, सिंगार सिंह (पीलीभीत) ने 28.40 कुंतल, राजीव कुमार (औरैया) ने 44.40 कुंतल सरसो, नंदलाल (पीलीभीत) ने 90.20 कुंतल धान, श्रीरामबचन (बहराइच) ने एक हेक्टेयर में 80.64 कुंतल मक्का, श्रीरामलगन (आजमगढ़) ने 28.40 कुंतल उड़द, मथुरा के महेश चंद ने 32.20 कुंतल उत्पादन किया है। चरण सिंह (फिरोजाबाद) ने 13 कुंतल तिल, काशी प्रसाद (जालौन) ने 13 कुंतल का उत्पादन किया है। उन्होने उद्यमिता की तरफ कदम बढ़ाने वाले किसानों को बधाई दी और कृषि विभाग से कहा कि इनकी पद्धति को कृषि विज्ञान केंद्रों तक पहुंचाइए। इनके कार्यों को जानने का अवसर अन्य किसानों को मिलना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमें लागत को कम करने के लिए विषमुक्त खेती की तरफ जाने की आवश्यकता है। धरती को मां कहते हैं, लेकिन इसकी सेहत का ख्याल नहीं रख पा रहे हैं। हमें इसके लिए तकनीक अपनानी चाहिए, प्रशिक्षण व जानकारी लेनी चाहिए। प्रदेश में लगभग सवा लाख एकड़ क्षेत्रफल में प्राकृतिक खेती हो रही है। इसे बढ़ाने की आवश्यकता है, जिससे भावी पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल व सुरक्षित कर पाएंगे। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, जलशक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, मत्स्य मंत्री डॉ. संजय निषाद, सहकारिता मंत्री जेपीएस राठौर, कृषि राज्यमंत्री बलदेव सिंह औलख, महापौर सुषमा खर्कवाल, विधायक नीरज बोरा, ओपी श्रीवास्तव, अमरेश कुमार, जय देवी, देवेंद्र निम, विधान परिषद सदस्य रामचंद्र प्रधान, गो सेवा आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता आदि मौजूद रहे।

लखनऊ : बैंक में चोरी का एक आरोपी मुठभेड़ में गिरफ्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में इंडियन ओवरसीज बैंक में चोरी के मामले में एक बदमाश सोमवार को पुलिस मुठभेड़ में पकड़ा गया। हालांकि उसके दूसरा साथी मौके से फरार हो गए। डीसीपी पूर्वी शशांक सिंह ने सोमवार को बताया कि थाना चिनहट के पास लौलई में रविवार की घटना के बाद पुलिस नियमित जांच कर रही थी। एक मुखबिर की सूचना पर दो संदिग्ध गाड़ियों को रोककर पूछताछ की गई। इसी दौरान गाड़ी के अंदर से एक व्यक्ति ने पुलिस पर फायरिंग कर दी और खेतों की तरफ भागने लगा। उसके दूसरे साथी भाग गए। पुलिस की जवाबी फायरिंग में गोली उस व्यक्ति के पैर में गोली लगी। उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

गिरफ्तार आरोपी की पहचान अरविंद कुमार के रूप में हुई है। वह बिहार के मुंगेर जिले के सीताकुंडीय जनपद का रहने वाला है। उसके पास से रविवार की घटना से जुड़े कुछ सामान बरामद हुए हैं। अब भी पुलिस द्वारा व्यापक चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि घटना के दूसरे संदिग्धों को भी शीघ्र गिरफ्तार किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के मटियारी चौराहा पुलिस चौकी से मात्र 100 मीटर की दूरी पर इंडियन ओवरसीज बैंक की दीवार में सेंध लगाकर अंदर घुसे बदमाश चार घंटे तक लगातार लॉकर काटते रहे और किसी को इसकी भनक तक नहीं लगी। गश्त करने वाली पुलिस भी घटना से अनभिज्ञ रही। बदमाश कई लॉकर काटकर उसमें रखा सामान लेकर चंपत हो गए। बदमाश बैंक के पीछे स्थित खाली प्लॉट से दाखिल हुए थे, जिसकी दीवार टूटी थी। चोरी गए सामान का सटीक आकलन तो अब तक नहीं हो सका है।

योगी आदित्यनाथ समेत कई नेताओं ने चौधरी चरण सिंह को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत कई नेताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। चौधरी चरण सिंह का जन्म 1902 में उत्तर प्रदेश के हापुड़ में हुआ था। उनके जन्मदिन को किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। वह जुलाई 1979 से जनवरी 1980 तक देश के प्रधानमंत्री थे। पूर्व प्रधानमंत्री सिंह का निधन 1987 में हुआ। योगी ने सोमवार को यहां किसान सम्मान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि चौधरी चरण सिंह का जन्म दिवस उत्तर प्रदेश में 2002 से किसान सम्मान दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा, चौधरी साहब कहा करते थे कि किसान गरीब होगा तो भारत अमीर नहीं हो सकता। भारत को समृद्ध बनाने के लिए अन्नदाता किसान को समृद्ध बनाना होगा। योगी ने कहा कि इसी बात को ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार किसानों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने विधानसभा स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद उन्होंने कृषक उपहार योजना के अंतर्गत 11 कृषकों को ट्रैक्टर की चाबी दी और उन्हें हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आजादी के बाद किसानों के मुद्दों को लेकर चौधरी चरण सिंह जी का कांग्रेस के साथ मतभेद हुआ था, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने पहली बार किसानों को भारत के राजनीतिक एजेंडे व सरकार की प्राथमिकता बनाने का कार्य किया। उन्होंने कहा, 2014 में मोदी ने कहा था कि हमें किसानों की आमदनी को दोगुना करना है। प्रदेश में 1996 से 2017 तक कुल 95 हजार करोड़ रुपये गन्ना किसानों के खाते में गए थे लेकिन 2017 से अब तक दो लाख 61 हजार करोड़ की राशि डीबीटी के माध्यम से भेजी गई है।

योगी ने कहा, प्रधानमंत्री मोदी का जोर लागत को कम करने एवं उत्पादन को बढ़ाने पर जोर है और इसी के माध्यम से किसानों को समृद्ध व खुशहाल किया जा सकता है।उन्होंने किसानों के लिए शुरू की गई योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि ह्यडबल इंजन सरकार ने साढ़े सात वर्ष में 23 लाख हेक्टेयर भूमि में अतिरिक्त सिंचाई की सुविधा दी और 14 लाख निजी नलकूपों को निशुल्क विद्युत उपलब्ध कराई जा रही है।

इसके पहले योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, गांव, गरीब एवं वंचितों के उत्थान और किसान-कल्याण हेतु आजीवन समर्पित रहे पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह जी की जयंती पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! योगी ने कहा, प्रदेशवासियों एवं अन्नदाता किसानों को किसान दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं! राज्य के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने एक्स पर लिखा, किसानों के सशक्तीकरण के प्रतीक, सादगी की प्रतिमूर्ति, भारत रत्न चौधरी चरण सिंह जी की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन ! उन्होंने कहा, आपकी नीतियों और नेतृत्व ने भारतीय कृषि को नई दिशा दी और किसानों को सशक्त बनाया। सभी किसान भाइयों को राष्ट्रीय किसान दिवस की शुभकामनाएं ! राज्य के उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के एक्स पर किए एक पोस्ट को साझा किया जिसमें कहा गया, गरीबों और किसानों के सच्चे हितैषी पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह जी को उनकी जयंती पर विनम्र श्रद्धांजलि। राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण और सेवा भाव हर किसी को प्रेरित करता रहेगा। भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष चौधरी भूपेंद्र सिंह ने भी चौधरी चरण सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि देश की खुशहाली का रास्ता गावों और खेतों से होकर गुजरता है। उन्होंने कहा, किसानों के मसीहा, देश के पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न से अलंकृत चौधरी चरण सिंह जी की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। प्रदेश के सभी अन्नदाता किसान भाइयों को राष्ट्रीय किसान दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

संक्षिप्त खबरें

ये लोग खोदते-खोदते एक दिन अपनी सरकार खोद देंगे : अखिलेश का भाजपा पर निशाना

इटावा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के इटावा में भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने हर जगह मंदिर या अन्य जगह खुदाई पर तंज कसते हुए कहा कि भाजपा के लोग एक दिन खोदते-खोदते अपनी सरकार खोद देंगे। सपा मुखिया ने यहां पत्रकारों से बातचीत में संभल में मंदिर मिलने पर कहा, ये ऐसे ही खोदते रहेंगे और खोदते-खोदते एक दिन अपनी सरकार को खोद देंगे। ये मठ विधान पर चलने वाले लोग हैं। सरकार हटेगी तभी आवारा पशु हट पाएंगे। वन नेशन-वन इलेक्शन वाले अपना राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं चुन पाए।

उन्होंने बाराबंकी के सपा विधायक द्वारा भाजपा को हिन्दू आतंकवादी कहे जाने वाले बयान पर कहा कि जो लोग नफरत फैलाते हैं, लोगों को मारते हैं, सड़क पर नंगा कर देते हैं, उन्हें क्या कहा जाए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के बयान को राजनीति से प्रेरित बताते हुए उन्होंने कहा कि यह भाजपा की अंडरग्राउंड विचारधारा है। उन्होंने कहा कि अगर मोहन भागवत मुख्यमंत्री को एक फोन कर दें तो सारे सर्वे और सारे विवाद बंद हो जाएंगे। ये बयान राजनीतिक लाभ के लिए दिए जा रहे हैं। उन्होंने बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर पर की गई टिप्पणी पर भी भाजपा को घेरा है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब पूजनीय हैं। भाजपा के सभी नेताओं को माफी मांगनी चाहिए। प्रदेश में सारे गलत काम, जमीन पर कब्जे भाजपा के लोग कर रहे हैं। जगह-जगह लूट और डकैती हो रही है। यह सरकार संविधान के रास्ते पर नहीं चल रही। बैंक के लॉकर लूटे जा रहे हैं।

झूमते हुए नागा साधुओं के साथ देखने को मिला पंचदशनाम आवाहन अखाड़े की पेशवाई में भव्य

महाकुंभ नगर। प्रयागराज में साल 2025 में 13 जनवरी से 25 जनवरी तक चलने वाले महाकुंभ में अखाड़ों की अहम भूमिका है। मेला क्षेत्र में शिविर लगाने से पहले सभी 13 अखाड़ों की तरफ से धर्म ध्वजा की स्थापना की जा रही है। इसके साथ ही भव्य छावनी प्रवेश के साथ अखाड़ों के लिए कुंभ की औपचारिक शुरूआत हो रही है। कुंभ मेले में भागीदारी के लिए अखाड़ों की पेशवाई की भव्यता लोगों को मुग्ध कर रही है। एक अलग ही आध्यात्मिक अनुभूति के दर्शन हो रहे हैं। ऐसे में नैनी के मडौका आश्रम से पंचदशनाम आवाहन अखाड़े की पेशवाई के दौरान भव्य नजारा देखने के लिए मिला। पंचदशनाम आवाहन अखाड़े की पेशवाई पूरी तैयारी और सनातन की भव्यता को प्रदर्शित करते हुए निकली। जहां बैंड बाजों और डीजे के साथ भक्ति रस से सराबोर माहौल के बीच साधु-संत पेशवाई में शामिल हुए। पंचदशनाम आवाहन अखाड़ा ने त्रिवेणी मार्ग से प्रवेश किया। इस दौरान बग्गी और घोड़ों पर सवार संत और उनके अनुयायियों ने यात्रा की शोभा को बढ़ाया। इसके बाद वह नया रीवा मार्ग से लेप्रोसी मिशन चौराहा होते हुए नया यमुना पुल से त्रिवेणी मार्ग के जरिए फोर्ट रोड चौराहा, त्रिवेणी मार्ग से अखाड़ा शिविर पहुंचें। इसके साथ ही अखाड़े का शिविर प्रवेश सम्पन्न हुआ। इस मौके पर संतों का स्वागत लोगों ने भी फूल माला से किया। रास्ते में पुष्पवर्षा करके लोगों ने संतों का स्वागत करते हुए उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान नागा साधु भी झूमते हुए नजर आए जो ढोल-नगाड़ों के साथ फूल-मालाओं से लदकर आगे बढ़ रहे थे।

राहुल गांधी के परभणी दौरे पर मायावती का तंज, कहा- केवल बुरे वक्त में याद आते हैं दलित-पिछड़े

प्रात : किरण संवाददाता

लखनऊ। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के महाराष्ट्र के हिंसा प्रभावित परभणी दौरे को लेकर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने निशाना साधा। उन्होंने इसे घड़ियाली आंसू करार देते हुए कहा कि बाबासाहेब के जीते जी और उनके निधन के बाद भी कांग्रेस का उनके व उनके अनुयायियों के प्रति रवैया हमेशा जातिवादी व तिरस्कारी रहा है। उन्होंने कहा कि इनको दलित-पिछड़ों की याद केवल इनके बुरे वक्त में आती है।

बसपा अध्यक्ष मायावती ने सोमवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ह्वभारतीय संविधान के मूल निमार्ता परम पूज्य बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का अनादर/अपमान व उनके करोड़ों अनुयायियों के प्रति हीन भावना का दुखद परिणाम है कि परभणी जैसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुई। साबित है कि कांग्रेस व भाजपा आदि कोई इनका सच्चा हितैषी नहीं सबकी नियत, नीति में खोट है। उन्होंने आगे लिखा, परभणी घटना को लेकर कांग्रेसी नेता का आज का दौरा घड़ियाली आंसू है, क्योंकि बाबा साहेब के रहते हुए व उनके देहांत के बाद भी कांग्रेस का उनके और उनके अनुयायियों के हित व कल्याण के प्रति रवैया हमेशा जातिवादी व तिरस्कारी रहा है। इनको दलित-पिछड़ों की याद केवल इनके बुरे वक्त में आती है।

पूर्व सीएम मायावती ने आगे कहा, ह्व इसी क्रम में केंद्रीय गृहमंत्री से संसद में बाबा साहेब विरोधी टिप्पणी को वापस लेने की मांग को लेकर बीएसपी द्वारा कल देश भर में जिला मुख्यालयों पर शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन को सफल बनाने की सर्व समाज से अपील है। बाबा साहेब के नाम पर छलावा पूर्ण राजनीति करने वालों से सावधानी जरूरी है। उन्होंने आखिरी पोस्ट में लिखा, ह्वबीएसपी का अंबेडकरवादी आत्मसम्मान का मूवमेंट ह्यबहुजन समाजह्न को वोट के माध्यम से शासक वर्ग बनाने का राजनीतिक मिशन है, जबकि दूसरी पार्टियां केवल इनके वोटों के स्वार्थ की खातिर अंबेडकरवादी होने का ढोंग करती रहती हैं। दलित/बहुजन के हितों में इनके मुंह में राम बगल में छुरी जैसा है। गौरतलब है कि महाराष्ट्र के परभणी में 10 दिसंबर की शाम को बाबासाहेब अंबेडकर की प्रतिमा के पास संविधान की प्रतिकृति को क्षतिग्रस्त किए जाने के बाद हिंसा भड़क उठी गई थी। राहुल गांधी सोमवार को यहां जा रहे हैं। वह इस दौरान कथित हिंसा में मारे गए सोमनाथ सूर्यवंशी और विजय वाकोडे के परिवार से मिलेंगे।

मास्टर एजाज बने राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के कोर कमेटी प्रभारी

प्रात : किरण संवाददाता

बिजनौर। मास्टर ऐजाज पुत्र मतलूब अहमद निवासी ग्राम फरीदपुर भोगन ज़िला बिजनौर को राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन राष्ट्रीय प्रभारी/कोर कमेटी का अध्यक्ष/युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया गया। राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष एम आर पाशा ने लिखित जानकारी देते हुए बताया कि मास्टर एजाज पुत्र मतलूब अहमद निवासी ग्राम फरीदपुर भोगन जिला बिजनौर को राष्ट्रीय विकलांग एसोसिएशन राष्ट्रीय प्रभारी एवं कोर कमेटी अध्यक्ष तथा युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है। और उनसे आशा व्यक्त की जाती है कि वह संगठन को नए शिखर पर लेकर जाएं और संगठन को मजबूत करें। नवनियुक्त राष्ट्रीय प्रभारी मास्टर एजाज अहमद ने कहा है कि जो मुझे जिम्मेदारी राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के द्वारा दी गई है उसको मैं बखूबी निर्वाह करूंगा तथा संगठन को मजबूत प्रदान करने का काम करूंगा और संगठन को नई बुलंदियों पर लेकर जाऊंगा।

बाबा साहब के सम्मान में 24 दिसंबर को मार्च निकालेगी कांग्रेस: ओमकार कटारिया

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी अमरोहा के संयुक्त तत्वाधान में नगर पंचायत सैद नगली में कांग्रेस पार्टी के कार्यवाहक जिला अध्यक्ष ओमकार कटारिया के आवास पर प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कार्यवाहक जिला अध्यक्ष ओमकार कटारिया ने कहा की आगामी 24 दिसंबर को बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के सम्मान में कांग्रेस पार्टी पूरे भारत एवं उत्तर प्रदेश में सहित अमरोहा शहर में स्थित अंबेडकर पार्क से गांधी मूर्ति तक मार्च निकाला जाएगा यह मार्च सुबह 11:00 बजे से आरंभ होगा बाबा साहब के सम्मान के लिए जनपद अमरोहा में सभी लोग आगे आए और इस मार्च का हिस्सा बने यह मार्च सामान्य मार्च नहीं है एक महापुरुष के सम्मान के लिए मार्च है जिसने भारत को संविधान दिया हमें समानता का अधिकार दिया यह मार्च दलितों पिछड़ों गरीबों शोषितों वंचितों को हक और सम्मान दिलाने वाले इन वर्गों के मसीहा बाबा साहब के सम्मान के लिए है और कहा की दिनांक 17 दिसंबर को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने भारत रत्न प्राप्त बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के बारे में राज्यसभा में बेहद आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणी की है यह टिप्पणियां न केवल भारत के महानतम नेताओं में से एक आदित्य विरासत का अपमान है बल्कि उन करोड़ों भारतीयों का भी घोर अपमान है जो उन्हें भारतीय संविधान के निमार्ता और सामाजिक न्याय के प्रेरणा स्त्रोत के रूप में पूजते हैं एक संवैधानिक पदाधिकारी द्वारा इस तरह के बयान बेहद अपमानजनक है जो हमारे गणतंत्र की नीम को कमजोर करने का एक खतरनाक प्रयास है बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर की समानता न्याय और हमारे संविधान में निहित लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रतीक हैं उनके नाम को कलंकित करने का कोई भी प्रयास इन मूल्यों का अपमान है और हमारे राष्ट्र की सामाजिक सद्भाव के लिए खतरा है मोदी जी की सरकार और बीजेपी बाबा साहब के संविधान को बदलना चाहती है बाबा साहब का अपमान कर रही है जो हम भारत के लोग और कांग्रेस के लोग किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेंगे बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के खिलाफ इस तरह की अपमानजनक टिप्पणी उनकी मानसिकता को दशार्ती है यह मनुवादी लोग किसी भी कीमत पर नहीं चाहते कि हम दलित वर्ग और ओबीसी वर्ग के लोग संवैधानिक पदों पर पहुंचे यह लगातार षड्यंत्र रच रहे हैं बाबा साहब के संविधान को बदलने का पर कांग्रेस पार्टी और हमारे नेता आदरणीय जननायक आदरणीय श्री राहुल गांधी जी और पूरी कांग्रेस पार्टी संविधान की रक्षा के लिए संकल्पित है हम बाबा साहब के अपमान पर चुप नहीं बैठेंगे सड़क से लेकर सदन तक संघर्ष करेंगे। इस मौके पर जिला अध्यक्ष ओमकार सिंह कटारिया जिला सचिव हरस्वरूप प्रधान जी ब्लॉक अध्यक्ष हरिओम पुष्कर जिला सचिव मनोज कटारिया नगर अध्यक्ष राजपाल सैनी सोशल मीडिया के जिला अध्यक्ष अफसर अली सैफी आदि मौजूद रहे।

गोरखपुर के विकास की ब्रांडिंग का अवसर होगा खिचड़ी मेला : सीएम योगी

प्रात : किरण संवाददाता

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि मकर संक्रांति से महाशिवरात्रि तक चलने वाला खिचड़ी मेला गोरखपुर के विकास की ब्रांडिंग का भी महत्वपूर्ण अवसर होगा। प्रशासन का प्रयास होना चाहिए कि मेले में जो भी श्रद्धालु आएं वह गोरखपुर के प्रति अविस्मरणीय सकारात्मक छवि अपने मन में संजो कर जाएं। उन्होंने निर्देशित किया कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा और सहूलियत को लेकर जिन भी विभागों को जिम्मेदार दी गई है, वे अपनी सभी तैयारियां हरहाल में 25 दिसंबर तक पूरी कर लें।

सीएम योगी रविवार शाम, गोरखनाथ मंदिर में मकर संक्रांति पर लगने वाले विश्व प्रसिद्ध पारंपरिक खिचड़ी मेले की तैयारियों की समीक्षा कर रहे थे। गोरखनाथ मंदिर के सभाकक्ष में अधिकारियों के साथ हुई बैठक में विभिन्न विभागों की तरफ से खिचड़ी मेला को लेकर की जा रही तैयारियों की जानकारी लेने के बाद कहा कि उन्होंने कहा कि खिचड़ी मेले से न सिर्फ पूर्वी उत्तर प्रदेश वरन बिहार, नेपाल से लगायत देश-दुनिया के सनातन मतावलंबियों की आस्था जुड़ी है। इसके दृष्टिगत मेले में सभी बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था की जाए जिससे मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा उपलब्ध कराई जा सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गोरखपुर में आए सकारात्मक बदलाव की ब्रांडिंग खिचड़ी मेले भी दिखनी चाहिए। इसके लिए सुरक्षा और सभी सुविधाओं पर पूरा ध्यान होना चाहिए। पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था, यातायात प्रबंधन के अलावा श्रद्धालुओं के आवागमन के लिए सुदृढ़ सड़कों, शौचालय, साफ सफाई, अलाव, लंगर आदि की भी व्यवस्था में कोई कोताही नहीं होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने खिचड़ी मेला को प्लास्टिक फ्री इवेंट बनाने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि मेला परिसर में कई जगहों पर जूता चप्पल रखने के भी इंतजाम होने चाहिए।

उन्होंने कहा कि यह भी ध्यान रखा जाए कि खिचड़ी मेले में आने वाला कोई भी श्रद्धालु खुले में न सोये, उसे निकट के रैन बसेरों में सम्मानपूर्वक आवासित कराया जाए। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सभी रैन बसेरों में पर्याप्त बिस्तर, कंबल तथा सफाई आदि की व्यवस्था बेहतर हो। इसके साथ ही मेले में लग रहे झूलों की सुरक्षा की समय रहते परख कर ली जाए। पुलिस को सुरक्षा और सतर्कता पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि मेले के समय वाहन पार्किंग स्थल में खड़े हों, वाहन स्टैण्ड पर प्रकाश एंव साफ सफाई की व्यवस्था हो। सीएम योगी ने कहा कि खिचड़ी मेला के लिए श्रद्धालुओं को गांव-गांव तक परिवहन की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। परिवहन विभाग इसके लिए रोडवेज बसों के पर्याप्त इंतजाम सुनिश्चित करे। साथ ही रेलवे प्रशासन अलग अलग स्टेशनों से मेला स्पेशल ट्रेनों का संचलन कराएगा। गोरखपुर स्टेशन व बस स्टेशन से इलेक्ट्रिक सिटी बसों की सुविधा उपलब्ध कराई जाए। इन सुविधाओं की जानकारी भी अभी से लोगों को दी जाए। सीएम योगी ने कहा कि स्वास्थ्य विभाग को मेला के दौरान विशेष तौर पर अलर्ट रहना होगा। मेला परिसर में हेल्थ कैम्प भी लगाया जाए।

गोरखपुर में डबल डेकर बस चलाने पर हो विचार : मुख्यमंत्री

खिचड़ी मेले की तैयारियों की समीक्षा करने के साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर में जारी विकास परियोजनाओं की प्रगति भी जानी और स्मार्ट सिटी बनाने की दिशा में किए जाने वाले अन्य संभावित कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि गोरखपुर में डबल डेकर बसों के चलाने की संभावना पर भी विचार किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने शहर में पार्किंग की समस्या के समाधान के लिए जीडीए, नगर निगम, प्रशासन और पुलिस को समन्वित कार्ययोजना बनाने के लिए निर्देशित करते हुए कहा कि जहां भी पार्किंग की जरूरत है वहां पार्किंग बनाएं और जहां मल्टीलेवल पार्किंग की जरूरत हो, उसके लिए जमीन चिन्हित करें।

उन्होंने कहा कि यह भी सुनिश्चित किया जाए कि नाबालिकों के हाथ में वाहनों की कमान न हो। मुख्यमंत्री ने फोरेस्ट्ररी यूनिवर्सिटी की प्रक्रियात्मक प्रगति के साथ जटायु संरक्षण केंद्र के संचालन की भी जानकारी ली। उन्होंने सभी सड़क परियोजनाओं को समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूर्ण करने और सुचारू विद्युत आपूर्ति के भी निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने रोड प्रोजेक्ट की समीक्षा के दौरान कहा कि सड़क के किनारे के नालों को कवर्ड कराएं ताकि उनका इस्तेमाल फुटपाथ के रूप में हो सके। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आगामी 10 से 12 जनवरी तक होने वाले गोरखपुर महोत्सव की तैयारियों की जानकारी भी ली। इस दौरान उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों के सहयोग से ग्राम पंचायत, न्याय पंचायत तथा विकास खण्ड स्तर पर खेल व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन कर इसे गोरखपुर महोत्सव से जोड़ें। साथ ही महोत्सव में गोरखपुर के इतिहास और विकास की प्रदर्शनी भी लगाई जाए।

महाकुंभ के दृष्टिगत बनेंगे तीन अस्थायी रैन बसेरे

समीक्षा बैठक के दौरान नगर आयुक्त ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को बताया कि प्रयागराज महाकुंभ के दृष्टिगत गोरखपुर शहर में 14 स्थायी रैन बेसरों के अलावा तीन नए अस्थायी रैन बसेरे बनाए जाएंगे। ये रैन बसेरे रेलवे और बस स्टेशन के पास होंगे ताकि प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं को विशेष सुविधा उपलब्ध हो। इस पर मुख्यमंत्री ने कहा कि इन रैन बसेरे में सुविधा के साथ सुरक्षा की भी पूरी व्यवस्था हो। पर्याप्त संख्या में महिला पुलिस की ड्यूटी भी रहे।

समीक्षा बैठक में पीडब्ल्यूडी, नगर निगम, पुलिस, बिजली विभाग, स्वास्थ्य विभाग, आपूर्ति विभाग, वन विभाग व वन निगम, पूर्वोत्तर रेलवे, परिवहन और सूचना विभाग ने खिचड़ी मेला को लेकर अपनी तैयारियों से मुख्यमंत्री को अवगत कराया। बैठक में महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, एडीजी जोन डॉ. केएस प्रताप, कमिश्नर अनिल ढींगरा, आईजी आनंद कुलकर्णी, जिलाधिकारी कृष्णा करुणेश, नगर आयुक्त गौरव सिंह सोगरवाल, जीडीए उपाध्यक्ष आनंद वर्द्धन समेत प्रशासन, पुलिस, पीडब्ल्यूडी, बिजली, स्वास्थ्य समेत कई विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

वीर बाल दिवस: बाबा जोरावर सिंह एवं फतेह सिंह के सर्वोच्च बलिदान को नमन

प्रात : किरण संवाददाता

रामपुर। भारतीय जनता पार्टी के जिला कार्यालय पर वीर बाल दिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी कार्यक्रम में बाबा जोरावर सिंह जी व बाबा फतेह सिंह जी के धर्म की रक्षा के लिए उनके सर्वोच्च बलिदान को याद किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधान परिषद के सदस्य गोपाल अंजान उपस्थित रहे, साथी साथ भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए सिख समाज से काफी संख्या में लोग भी पार्टी कार्यालय पर मौजूद रहे।। गोपाल अंजान जी ने सभी को संबोधित करते हुए कबीर बाल दिवस के बारे में विस्तार से अपनी बात सभी के बीच रखी, उन्होंने गुरु गोविंद सिंह जी के पुत्रों के बलिदान को नमन कर और कहा ऐसे वीर सिर्फ हमारी मातृभूमि में ही पैदा हो सकते हैं जो हंसते-हंसते अपना जीवन इस मातृभूमि पर न्योछावर करते हैं हम सबको ऐसे वीर बलिदानियों की गाथाएं अपने बच्चों को बतानी चाहिए कि उनका जानकारी हो कैसे-कैसे वीर हमारे भारत मां की भूमि में जन्मे है।। कार्यक्रम में पिछड़ी आयोग उपाध्यक्ष सूर्य प्रकाश पाल, जिला अध्यक्ष हंसराज पप्पू, पूर्व सासंद घनश्याम सिंह लोधी, बैंक अध्यक्ष मोहनलाल सैनी, वीर खालसा सेवा समिति अध्यक्ष अवतार सिंह, ब्लॉक प्रमुख अर्चना गंगवार, नगर पालिका अध्यक्ष दीक्षा गंगवार, पूर्व जिला अध्यक्ष सुरेश गंगवार, कार्यक्रम संयोजक सतनाम सिंह, जिला मीडिया प्रभारी अर्जुन रस्तोगी, प्रेम शंकर पांडे, संजय पाठक, महा सिंह राजपूत, संजय यादव, ऋषि पांडे, डॉली रंधावा, संजीव कुमार वर्मा, संजय चौधरी, अमृता रंधावा, अनुज सक्सेना, हेमा रानी, दिनेश शर्मा, संदीप सिंह विर्क, कुंवर पल यादव, नवदीप चौधरी, विवेक बिश्नोई, कृष्ण अवतार लोधी, जमना प्रसाद लोधी, मनोज पांडेय, आशु गुप्ता, राम सिंह आदि सम्मानित पार्टी पदाधिकारियों व कार्यकताओं की उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबरें

फरीदाबाद : महिला ने ऑटो में बैठे व्यक्ति को बेहोश कर लूटा

फरीदाबाद, । फरीदाबाद में एक महिला ने ऑटो में बैठे व्यक्ति को बेहोश करके लूट लिया। जब होश आया तो व्यक्ति ने देखा कि वो सड़क किनारे पड़ा है और उसके जेब से मोबाइल, 1100 रुपए नगदी व अन्य सामान गायब है। व्यक्ति का पैर 3 जगह से फ्रैक्चर भी हुआ है, साथ ही उसके शरीर में कई जगह चोट के निशान हैं। फिलहाल घायल व्यक्ति बशीर दीवान को फरीदाबाद के बादशाह खान सिविल अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। बशीर दीवान के मुताबिक वह रविवार को फरीदाबाद-गुरुग्राम टोल के पास एक कबाड़ के गोदाम में अपने बेटे के लिए नौकरी की तलाश में गया था। उसका बेटा जेसीबी चलाता है, लेकिन उसे वहां पर उसके बेटे के लिए काम नहीं मिला, जिसके बाद वह एक ऑटो से फरीदाबाद के तीन नंबर पुलिया के लिए बैठा था। घायल व्यक्ति के मुताबिक जब वह ऑटो में बैठा तो ड्राइवर के अलावा उसमें पीछे सीट पर एक महिला भी बैठी थी। उस ऑटो में उन तीनों के अलावा कोई और नहीं था। पीड़ित व्यक्ति के मुताबिक जैसे ही ऑटो कुछ दूर पहुंचा कि तभी ऑटो में बैठी महिला ने रुमाल निकाला और उसे झाड़ा।

सीआईएसएफ जवान ने टकसाल से चोरी करने वाला ऑपरेटर पकड़ा, पहुंचा जेल

नोएडा, । भारत सरकार का एक टकसाल नोएडा के सेक्टर-1 में है। इस टकसाल में चोरी का एक मामला सामने आया है। सीआईएसएफ के जवान ने चोरी के आरोप में एक ऑपरेटर को रंगे हाथ पकड़ा है। तलाशी लेने पर उसके पास से 20 रुपये के 13 सिक्के (260 रुपये) बरामद हुए हैं। मामले की शिकायत थाना फेज-1 पुलिस से की गई। जिसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। बलिया जिले के गांव फेफना निवासी 35 वर्षीय आनंद कुमार पांडेय करीब 12 साल से टकसाल में ऑपरेटर के पद पर काम कर रहा था। वह अपना काम खत्म कर टकसाल के गेट से बाहर आ रहा था। गेट पर तलाशी के दौरान उसके बैग से 20 रुपये के 13 सिक्के बरामद हुए। पकड़े जाने पर आनंद ने अपनी गलती स्वीकार की और माफी मांगने लगा। टकसाल की सुरक्षा में तैनात सीआईएसएफ के सहायक उपनिरीक्षक हरपाल सिंह ने इसकी सूचना पुलिस को दी।

फरीदाबाद : वाहन चोरी करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

फरीदाबाद, । वाहन चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले गिरोह के तीन आरोपियों को अपराध शाखा सेक्टर-85 की टीम ने गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार पुलिस चौकी सेक्टर-7 में राजेश वासी सेक्टर 28 ने अपनी शिकायत में बताया कि वह अपने ई-रिक्शा को मुजेसर फाटक के पास 13 नवम्बर की रात खड़ा करके घर गया था। वापस आने पर देखा तो ई-रिक्शा नही मिला। जिसका मामला थाना सेक्टर-8 में दर्ज किया गया है। मामले में अपराध शाखा टीम ने कार्यवाही करते हुए आरोपी ईलायस मालिक वासी एक्सटेन्शन पार्ट 2 जैतपुर साउथ दिल्ली को नया पुल पल्ला से गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने मामले में अधिक जानकारी देते हुए बताया कि मामले में पूर्व में दो आरोपी कमल उर्फ खटुल और संतोष को गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपी संतोष को 19 दिसंबर तथा आरोपी कमल को 20 दिसंबर को गिरफ्तार कर पुलिसमैन पर लिया गया था। आरोपी ईलायस मलिक कबाड़ी है। आरोपी कमल से ई रिक्शा बरामद किया गया है। दोनों आरोपियों को पूछताछ के बाद अदालत में पेश कर जेल भेजा गया है। आरोपी से बरामद ई रिक्शा के द्वारा एक कंपनी में लोहा चोरी की वारदात को अंजाम दिया गया था।

गैंगस्टर ऐक्ट में वांछित बदमाश गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा, । सूरजपुर पुलिस ने गैंगस्टर ऐक्ट में वांछित बदमाश को गिरफ्तार किया। आरोपी दिल्ली-एनसीआर में अपने साथियों के साथ मिलकर लूटपाट की वारदात को अंजाम देता था। पुलिस ने एक सप्ताह पूर्व उसके खिलाफ गैंगस्टर ऐक्ट में कार्रवाई की थी। सूरजपुर कोतवाली प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि पकड़े गए बदमाश की पहचान मानव नेगी निवासी अल्मोड़ा उत्तराखंड के रूप में हुई है। वह फिलहाल सुत्याना गांव में रह रहा था। यह बदमाश दिल्ली एनसीआर में अपने साथियों के साथ मिलकर लूटपाट की घटनाओं का अंजाम देता था। पुलिस ने उसके खिलाफ गैंगस्टर ऐक्ट में मुकदमा दर्ज किया था। इसमें यह वांछित चल रहा था। पुलिस इसके गैंग में शामिल फरार बदमाशों की तलाश में जुटी है। पकड़े गए बदमाश के खिलाफ सूरजपुर और बिसरख थाने में चार मुकदमे दर्ज हैं।

किसानों के लिए 2014 से प्रारंभ हुए प्रयास को मॉडल के रूप में ले रही दुनिया: सीएम योगी

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का जन्मदिवस उत्तर प्रदेश में 2002 से ह्यकिसान सम्मान दिवसह्क के रूप में मनाया जाता है। चौधरी साहब कहा करते थे कि किसान गरीब होगा तो भारत अमीर नहीं हो सकता। भारत को समृद्ध बनाने के लिए अन्नदाता किसान को समृद्ध बनाना पड़ेगा। इसे ध्यान में रखकर पीएम मोदी के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार द्वारा किसानों के उत्थान के लिए निरंतर कार्य हो रहे हैं। किसानों के लिए 2014 से जो प्रयास प्रारंभ हुआ, दुनिया उसे मॉडल के रूप में ले रही है। मुख्यमंत्री सोमवार को पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न चौधरी चरण सिंह की 122वीं जयंती किसान सम्मान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने विधानसभा स्थित चौधरी चरण सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद मुख्यमंत्री कृषक उपहार योजना के अंतर्गत 11कृषकों को ट्रैक्टर की चाबी दी और हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। किसानों के मुद्दे पर चौधरी साहब का कांग्रेस से हुआ था मतभेद सीएम ने कहा कि आजादी के बाद किसानों के मुद्दों को लेकर चौधरी चरण सिंह जी का कांग्रेस के साथ मतभेद हुआ था, लेकिन पीएम मोदी ने पहली बार किसानों को भारत के राजनीतिक एजेंडे व सरकार की प्राथमिकताा बनाने का कार्य किया।स्वॉयल हेल्थ कॉर्ड, उन्नत किस्म के बीज उपलब्ध कराने, खेती को तकनीक से जोड़ने, कृषक दुर्घटना बीमा योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि सिंचाई योजना, किसान सम्मान निधि आदि योजनाओं से किसानों की उन्नति के लिए कार्य किए जा रहे हैं। 22 वर्ष में 95 हजार करोड़, साढ़े सात वर्ष में 2.61 लाख करोड़ हुआ गन्ना भुगतान सीएम ने कहा कि 2014 में पीएम ने कहा था कि हमें किसानों की आमदनी को दोगुना करना है। प्रदेश में 1996 से 2017 तक (22 वर्ष) में कुल 95 हजार करोड़ रुपये गन्ना किसानों के खाते में गया था, लेकिन 2017 से अब तक 2 लाख 61 हजार करोड़ की राशि डीबीटी के माध्यम से भेजा गया है। पीएम मोदी का जोर है कि लागत को कम करना व उत्पादन को बढ़ाना है और इसी के माध्यम से किसान को समृद्ध व खुशहाल कर सकते हैं। किसानों की आमदनी बढ़ाने को सरकार ने की पहल्सीएम ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने साढ़े सात वर्ष में 23 लाख हेक्टेयर भूमि को अतिरिक्त सिंचाई की सुविधा दी। 14 लाख निजी नलकूपों को प्रदेश सरकार द्वारा फ्री में विद्युत उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके एवज में दो से ढाई हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष सरकार अपने पास से पैसा दे रही है। पहले से लगे ट्यूबवेल को सोलर पैनल से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। किसान अपनी आमदनी बढ़ा सकें, इसके लिए भी केंद्र व प्रदेश सरकार की तरफ से कई पहल की गई है। सीएम ने की किसानों की तारीफ, बोले- प्रेरणादायी है इनका पुरुषार्थ सीएम ने सम्मानित होने वाले किसानों के कार्यों की तारीफ की। बोले-इन किसानों का पुरुषार्थ प्रेरणादायी है। खेती घाटे का सौदा नहीं है, बल्कि ईमानदारी से कार्य करने पर इसके सुखद परिणाम आएंगे।

तकनीक के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यों की गुणवत्ता में सुधार पर जोर दे रही योगी सरकार

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन के लिए चल रही महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) योजनाओं की सटीक निगरानी सुनिश्चित करने हेतु अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रही है। योगी सरकार के इस प्रयास के तहत एरिया ऑफिसर ऐप की शुरूआत की गई है। इस ऐप के माध्यम से मनरेगा योजनाओं के प्रगतिशील कार्यों की गुणवत्ता और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सीएम योगी के नेतृत्व में प्रदेश न केवल मनरेगा के तहत रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास में आगे है, बल्कि एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम से कार्यों के निरीक्षण में देशभर में अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श मॉडल बन रहा है। एरिया ऑफिसर ऐप के माध्यम से मनरेगा योजनाओं की निगरानी को सशक्त बनाया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से निरीक्षण के दौरान अधिकारी कार्य स्थलों की तस्वीरें और अन्य आवश्यक विवरण तुरंत अपलोड करते हैं। इसके माध्यम से यह सुनिश्चित होता है कि योजनाओं के तहत हो रहे कार्य सही समय पर और निर्धारित मानकों के अनुरूप पूरे हो रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर इस ऐप का उपयोग प्रभावी तरीके से किया जा रहा है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में पारदर्शिता और कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि हो रही है। मनरेगा के अंतर्गत प्रदेश में लाखों मजदूर कार्यरत हैं और यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन का प्रमुख स्रोत है। योजना के तहत विभिन्न प्रकार के विकास कार्य जैसे तालाब निर्माण, सड़क निर्माण और पौधरोपण आदि चल रहे हैं। इन कार्यों की नियमित निगरानी के लिए ह्यएरिया ऑफिसर ऐपह्क एक क्रांतिकारी पहल साबित हो रही है। ग्राम्य विकास विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, उत्तर प्रदेश ने मनरेगा योजनाओं के निरीक्षण के मामले में देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में प्रदेश ने 1.50 लाख से अधिक निरीक्षण कर अपने निर्धारित लक्ष्य को पार किया। वहीं, इस वर्ष अब तक 1.25 लाख निरीक्षण किए जा चुके हैं, जो कि निर्धारित लक्ष्य 99,480 से कहीं अधिक हैं। देशभर में उत्तर प्रदेश मनरेगा निरीक्षण में अग्रणी है। आंध्र प्रदेश दूसरे और बिहार तीसरे स्थान पर हैं। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 99,504 निरीक्षण किए गए थे। वर्ष 2023-24 में 1.50 लाख से ज्यादा निरीक्षण किए गए थे। यह उपलब्धि सरकार के उच्च मानकों और विकास कार्यों की सटीक निगरानी की दिशा में किए गए प्रयासों का परिणाम है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देशन में मनरेगा के तहत सभी कार्य निर्धारित समय पर और उच्च गुणवत्ता के साथ पूरे हों, इसके लिए जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी और खंड विकास अधिकारी नियमित रूप से बाकायदा कार्य स्थलों का दौरा कर योजनाओं की प्रगति का जायजा ले रहे हैं। उनके निरीक्षण के दौरान कार्यस्थलों की तस्वीरें और विवरण ऐप के माध्यम से अपलोड किए जाते हैं, जिससे सरकार को योजनाओं की वास्तविक स्थिति का अपडेट मिलता रहता है।

उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में मिले मंदिर पर हुआ यज्ञ, मुस्लिमों ने की पुष्प वर्षा

मुजफ्फरनगर, । उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले में भी मुस्लिम आबादी के बीच एक शिव मंदिर मिला है, जिसे सोमवार को पूजा-अर्चना और यज्ञ करके जागृत किया गया। इस दौरान मुस्लिम समुदाय के लोगों ने भी यज्ञ में भाग लिया और पुष्प वर्षा भी की। मुजफ्फरनगर के पुलिस के क्षेत्राधिकारी व्योम बिंदल ने बताया कि आज यहां पर पूजा का एक कार्यक्रम रखा गया था जो शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। इसमें पुलिस और स्थानीय लोगों का आपसी सहयोग बड़ा अच्छा रहा। महंत स्वामी यशवीर ने दावा किया कि यह शिव मंदिर उनका है। उन्होंने कहा कि मुजफ्फरनगर जिले में इस स्थान पर पहले हिन्दू रहते थे। वे पलायन कर गए। फिर यहां 35 वर्षों से पूजा बंद हो गई थी। इस मंदिर को हवन के माध्यम से जागृत किया गया है। अब पूजा शुरू रहेगी। उन्होंने कहा, ह्यहां के मुस्लिम समाज के लोग हमारे भाई-बहन हैं। उनके पूर्वज हिंदू ही थे। शिव मंदिर इनके पूर्वजों का था। इसी कारण यह पुष्प वर्षा की गई है। जब इनको कोई जिहादी आकर भड़काते हैं तो ये लोग हिंदुओं पर चाकू-छुरा और गोली बरसा देते हैं।ह्व उन्होंने मुस्लिमों को घर वापसी की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अतिक्रमण हटाने के बाद दो दिन में मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा होगी। स्थानीय निवासी मोहम्मद सलीम ने कहा कि यहां बहुत पुराना और जर्जर मंदिर था जो आबाद हो रहा है। पहले यहां पर आबादी कम थी। यहां पर हिंदू समाज ने इस मंदिर को बनाया। यहां आबादी बढ़ती गई। हिंदू अपनी मर्जी से यहां से गए हैं। अपने धार्मिक स्थल पर अपना काम हो रहा है। फूलों की वर्षा हो रही है। भाईचारा बना है। अच्छी बात है। एक और स्थानीय निवासी ने बताया कि मुजफ्फरनगर के लद्दावाला मोहल्ले में 1970 का प्राचीन महादेव का मंदिर है। यहां पर विभिन्न संगठनों के माध्यम से हवन पूजन हो रही है। प्रशासन का बहुत सहयोग रहा है। मुस्लिमों ने बहुत अच्छी पुष्प वर्षा से स्वागत किया है। यहां पर जो अतिक्रमण है वह हटेगा। उसे फिर सजाया जाएगा। मुजफ्फरनगर के नगर कोतवाली क्षेत्र के मोहनलाल लद्दावाला मोहल्ले में कई साल पहले इस शिव मंदिर की स्थापना की गई थी। उस समय ये क्षेत्र हिंदू बाहुल्य हुआ करते थे। लेकिन धीरे-धीरे मुस्लिम आबादी बढ़ने के बाद हिंदू समाज के लोग यहां से पलायन कर गए और यह मंदिर काफी जीर्ण हो गया।

ये लोग खोदते-खोदते एक दिन अपनी सरकार खोद देंगे : अखिलेश का भाजपा पर निशाना

प्रात: किरण, संवाददाता

इटावा, । समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के इटावा में भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने हर जगह मंदिर या अन्य जगह खुदाई पर तंज कसते हुए कहा कि भाजपा के लोग एक दिन ह्यखोदते-खोदते अपनी सरकार खोद देंगेह्व। सपा मुखिया ने यहां पत्रकारों से बातचीत में संभल में मंदिर मिलने पर कहा, ह्यये ऐसे ही खोदते रहेंगे और खोदते-खोदते एक दिन अपनी सरकार को खोद देंगे। ये मठ विधान पर चलने वाले लोग हैं। सरकार हटेगी तभी आवारा पशु हट पाएंगे। ह्यवन नेशन-वन इलेक्शनह्व वाले अपना राष्ट्रीय अध्यक्ष नहीं चुन पाए।ह्व उन्होंने बाराबंकी के सपा विधायक द्वारा भाजपा को हिन्दू आतंकवादी कहे जाने वाले बयान पर कहा कि जो लोग नफरत फैलाते हैं, लोगों को मारते हैं, सड़क पर नंगा कर देते हैं, उन्हें क्या कहा जाए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के बयान को राजनीति से प्रेरित बताते हुए उन्होंने कहा कि यह भाजपा की अंडरग्राउंड विचारधारा है। उन्होंने कहा कि अगर मोहन भागवत मुख्यमंत्री को एक फोन कर दें तो सारे सर्वे और सारे विवाद बंद हो जाएंगे। ये बयान राजनीतिक लाभ के लिए दिए जा रहे हैं। उन्होंने बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर पर की गई टिप्पणी पर भी भाजपा को घेरा है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब पूजनीय हैं। भाजपा के सभी नेताओं को माफी मांगनी चाहिए। प्रदेश में सारे गलत काम, जमीन पर कब्जे भाजपा के लोग कर रहे हैं। जगह-जगह लूट और डकैती हो रही है। यह सरकार संविधान के रास्ते पर नहीं चल रही। बैंक के लॉकर लूटे जा रहे हैं।

बाबा साहब के नाम पर छलावापूर्ण राजनीति करने वालों से सावधानी जरूरी : मायावती

प्रात: किरण, संवाददाता

लखनऊ, । संसद में बाबा साहब डा. भीमराव आंबेडकर पर केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के बयान को लेकर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) 24 दिसंबर (मंगलवार) को देशव्यापी आंदोलन करने की घोषणा की है। पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने इस शांतिपूर्ण आंदोलन की सफल बनाने सर्वसमाज के लोगों से अपील की है। बसपा प्रमुख ने कहा कि केन्द्रीय गृहमंत्री ने संसद में जिस तरह से बाबा साहब पर विरोधी टिप्पणी की है, उसे वापस लें। लेकिन अभी तक उनकी ओर से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं आयी है। अमित शाह के बयान को वापस लेने की माँग को लेकर बसपा मंगलवार को देश भर में जिला मुख्यालयों पर शान्तिपूर्ण धरना-प्रदर्शन को सफल बनाने की सर्वसमाज से अपील की है। इससे पहले पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने सोमवार को सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा है कि बाबा साहब का जिस तरह से अपमान हुआ है, उससे उनके करोड़ों अनुयाइयों को ठेस पहुंची हैं। इससे यह साबित होता है कि कांग्रेस और भाजपा आदि कोई भी उनका सच्चा हितैषी नहीं। सबकी नीयत, नीति में खोट है। ऐसे में बाबा साहब के नाम पर छलावापूर्ण राजनीति करने वालों से सावधानी जरूरी है। उन्होंने कहा कि इस घटना को लेकर कांग्रेस नेता का आज घड़ियाली आँसू बहा रहे हैं जबकि बाबा साहब के जीते जी और उनके देहान्त के बाद भी कांग्रेस का उनके और उनके अनुयाइयों के हित व कल्याण के प्रति रवैया हमेशा जातिवादी व तिरस्कार पूर्ण रहा है। इनको दलित-पिछड़ों की याद केवल इनके खराब दिनों में ही आती है।

संभल में चौथे दिन भी जारी रहा एएसआई का सर्वे, प्राचीन नैमिषारण्य तीर्थ के कुएं में 20 फुट पर मिला पानी

मुरादाबाद, । उत्तर प्रदेश के संभल जिले में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की चार सदस्यीय टीम का सर्वे लगातार चौथे दिन सोमवार को भी जारी रहा। सर्वे के दौरान संभल के प्राचीन नैमिषारण्य तीर्थ में एक और प्राचीन कुआं सामने आया है, जिसमें करीब 20 फुट पर पानी मिला है। इससे सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि पुराने समय में इस कुएं में 20 फुट नीचे ही पानी था, जबकि वर्तमान में संभल में जल स्तर 100 फुट से ज्यादा नीचे है। अधिकारियों ने बताया कि एएसआई ने शुक्रवार और शनिवार को संभल में छह तीर्थ स्थलों और 19 कुओं का सर्वे किया था। रविवार को चंदौसी तहसील के प्राचीन बावड़ी में खुदाई की, जिसमें प्राचीन बावड़ी मिली। संभल के 19 प्राचीन कुओं और 68 तीर्थों का वर्णन तमाम धर्मग्रंथों में मिलता है। संभल के जिलाधिकारी राजेंद्र पेंसिया ने धर्मग्रंथों में वर्णित इन कुओं सहित तमाम प्राचीन कुओं को खोजकर उन्हें पुनर्जीवित कराने की मुहिम चला रखी है। संभल में 46 साल पुराने मंदिर मिलने के बाद जिलाधिकारी ने जांच के लिए एएसआई को पत्र लिखकर जिले के प्राचीन तीर्थस्थलों और कुओं का निरीक्षण कराने की मांग की थी। एएसआई ने भी संभल में कई तीर्थ स्थलों और मंदिरों के साथ ही प्राचीन कुओं का सर्वे पिछले तीन दिन में किया है। संभल में जल स्तर 100 फुट से ज्यादा नीचे है लेकिन तीर्थ परिसरों में मिल रहे कुओं में पहले 20 फुट नीचे ही पानी हुआ करता था। संभल निवासी 95 वर्षीय मंहत पंडित लाल किशोर शास्त्री ने बताया कि आजादी से पहले संभल में जल स्तर 20 से 25 फुट पर था। जैसे-जैसे आबादी बढ़ती गई, जल स्तर कम होता गया। संभल के प्राचीन नैमिषारण्य तीर्थ पर जल प्रवाहित कूप मिलने की जानकारी पर तमाम श्रद्धालु कूप के दर्शन के लिए पहुंचे। महंत बाल योगी दीनानाथ ने कूप पर पूजा-अर्चना कर प्रसाद वितरित किया। प्राचीन नैमिषारण्य तीर्थ के महंत बाल दीनानाथ ने कहा कि इस तीर्थ पर बाबा क्षेमनाथ की कृपा से भक्तों का कल्याण होता है।

डीसी विक्रम सिंह के मार्गदर्शन में समाधान शिविर आयोजित

फरीदाबाद, । डीसी विक्रम सिंह के मार्गदर्शन में समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे हैं इसी श्रृंखला में सोमवार को एसडीएम फरीदाबाद शिखा ने लघु सचिवालय सभागार में नागरिकों की शिकायतें सुनी। समाधान शिविर में आई शिकायत का प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने के निर्देश दिए गए। शिखा ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश में जनसेवा को समर्पित हो कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि अधिकारी समाधान शिविरों में प्राप्त हो रही शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए यथाशीघ्र निपटारा सुनिश्चित करें। सरकार द्वारा निरंतर समाधान शिविर में प्राप्त हो रही शिकायतों के समाधान की समीक्षा की जा रही है। मुख्यमंत्री कार्यालय एवं मुख्य सचिव कार्यालय द्वारा निरंतर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से समाधान शिविरों की निगरानी की जा रही है। एसडीएम ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा समाधान शिविर के तहत एक छत के नीचे सभी विभागों की शिकायतों का यथासंभव निपटारा करवाया जा रहा है। प्रत्येक कार्य दिवस जिला मुख्यालय के साथ-साथ नगर निगम कार्यालय एवं उपमंडल मुख्यालय पर सुबह 10 से 12 बजे तक समाधान शिविर आयोजित किए जा रहे है। इस अवसर पर संबंधित विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

दो शातिर चोर गिरफ्तार, 7.72 लाख नकद, पांच लाख की ज्वेलरी बरामद

प्रात: किरण, संवाददाता

नोएडा, । उत्तर प्रदेश के नोएडा के बंद घरों में घुसकर चोरी करने वाले एक गैंग का खुलासा करते हुए पुलिस ने दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से सात लाख 72 हजार रुपये नकद और करीब पांच लाख रुपये के सोने-चांदी के जेवरात भी बरामद हुए हैं। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान जितेंद्र और राजेश के रूप में हुई है। वे पहले घरों की रेकी करते थे। इसके बाद मास्टर चाभी से घरों में बंद लॉक खोलकर चोरी की घटना को अंजाम देते थे। पुलिस उनका आपराधिक रिकॉर्ड खंगाल रही है। साथ ही ये किसको माल बेचते थे और कितने लोग इस गिरोह में हैं, इसकी जानकारी जुटाई जा रही है। एडीसीपी हृदेश कठेरिया ने बताया कि नोएडा में 16 दिसंबर को जागृति अपार्टमेंट सेक्टर-71 और 18 दिसंबर को गली नंबर-7 ममूरा सेक्टर-66 में घरों में घुसकर चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज से दोनों बदमाशों की पहचान की गई। इसके बाद सर्विलांस टीम और मुखबिर को एक्टिव किया गया। दोनों बदमाशों को गढ़ गोल चक्कर के पास सर्विस रोड से गिरफ्तार किया गया। एडीसीपी ने बताया कि ये दोनों अपने वाहनों के नंबर प्लेट उतारकर रेकी करते थे। इसके बाद बंद पड़े घरों में मास्टर-की की मदद से ताला खोलकर या तोड़कर घरों से कीमती सामान और पैसा तथा ज्वेलरी आदि चोरी करते थे। चोरी करने के बाद कुछ दूर जाकर अपने वाहन पर नंबर प्लेट लगाकर भाग जाते थे। दोनों बदमाश अपने साथियों के साथ गोपनीय रूप से बंद पड़े मकान में चोरी के जेवरात को तुरंत केमिकल से साफ कर उस पर लगे होलोग्राम को हटा देते थे। इसके बाद उन जेवरात को बेच देते थे। केमिकल से जेवरात को इसलिए साफ किया जाता था ताकि उसकी पहचान न की जा सके। वे दिल्ली, गाजियाबाद और अन्य शहरों में भी बड़ी वारदात को अंजाम दे चुके हैं। उनके पास से पुलिस ने 7,72,000 रुपये नकद, सोने और चांदी के कई गहने, एक चाकू और घटना में इस्तेमाल एक स्कूटी बरामद की है।

पति पर लोहे की रॉड से पीटने का आरोप

नोएडा, । सेक्टर-93 में रहने वाली महिला ने अपने पति पर लोहे की रॉड से पीटने का आरोप लगा मुकदमा दर्ज कराया है। पीड़िता ने अपनी सास पर पति को उकसाने का आरोप लगाया है। पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर मामले की जांच शुरू कर दी है। रजनी ने पुलिस को बताया कि वह 20 दिसंबर की रात घर पर बैठीं थी। इसी दौरान उनका पति विकास कुमार उर्फ विक्की लोहे की रॉड लेकर आया और हमला करना शुरू कर दिया। उनकी सहेली के बचाने पर आरोपी ने दोनों से मारपीट की। रजनी के पिता भी बचाने आए तो आरोपी ने तीनों को लोहे की राड से पीटा। पीड़िता ने बताया कि पति की पिटाई से वह बेहोश हो गईं। पीड़िता ने बताया कि इस षड्यंत्र में उसकी सास भी शामिल है। वह अपने पुत्र विकास कुमार को उकसाकर उनके पास भेजती है। उसी ने लोहे की रॉड लेकर विकास कुमार को भेजा था। पीड़िता ने लोहे की रॉड भी पुलिस को सौंपी है। थाना प्रभारी निरीक्षक का कहना है कि शिकायत के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

युवक व युवती ने की आत्महत्या, तीन लोगों की संदिग्ध मौत

नोएडा, । नोएडा के विभिन्न जगहों पर रहने वाले एक युवती समेत दो लोगों ने मानसिक तनाव की वजह से आत्महत्या कर लिया है। वहीं तीन लोगों की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई है। पाचों मामले की पुलिस जांच कर रही है। जानकारी के अनुसार थाना सेक्टर-113 क्षेत्र के सफार्बाद गांव में रहने वाले सुभाष पुत्र सतीश कुमार उम्र 21 वर्ष ने मानसिक तनाव के चलते अपने घर पर पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है। थाना एक्सप्रेस-वे क्षेत्र में रहने वाली अंकिता कुमारी पुत्री राजकुमार उम्र 24 वर्ष ने मानसिक तनाव के चलते अपने घर पर पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर लिया है। थाना एक्सप्रेस वे क्षेत्र में रहने वाले अजीत सिंह पुत्र देवनारायण सिंह उम्र 31 वर्ष की छत से नीचे गिरने से संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस को शक है कि उसने आत्महत्या किया है। थाना ईकोटेक-तीन क्षेत्र के तुसियाना गांव में रहने वाला एक व्यक्ति अपने घर पर सीढ़ी से नीचे गिर गया। थाना ईकोटेक-3 के प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि टुनटुन पुत्र महेश पासवान उम्र 34 वर्ष अपने घर पर सीढ़ी से नीचे गिर गया। उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां पर उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि उप निरीक्षक दुर्वेश सिंह ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना सूरजपुर के प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि श्याम कुमार पुत्र रामकुमार उम्र 31 वर्ष संदिग्ध परिस्थितियों में नाले में गिर गया। नाले में भरे पानी में डूबने की वजह से उसकी मौत हो गई। उन्होंने बताया कि थाना सूरजपुर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

बेटी को जन्म देने वाली महिला को पति ने दिया तीन तलाक, 17 लोगों के खिलाफ मुकदमा

नोएडा, । ग्रेटर नोएडा के इकोटेक-तीन थाना क्षेत्र के गांव हल्दौनी में रहने वाली एक महिला को उसके पति ने दो बेटियां पैदा होने पर अपनी पत्नी को तीन तलाक दे दिया। इस मामले में महिला ने पति समेत 17 लोगों के खिलाफ नोएडा के सेक्टर-39 स्थित महिला थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई है। घटना की रिपोर्ट दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। पीड़िता ने पति पर तीन तलाक देने और ससुरालियों पर अतिरिक्त दहेज न मिलने पर हत्या के प्रयास का आरोप भी लगाया है। जानकारी के अनुसार इकोटेक-तीन थाना क्षेत्र के गांव हल्दौनी निवासी सहाना खातून ने थाने में दर्ज कराई रिपोर्ट में पुलिस को बताया है कि उनका निकाह 27 नवंबर 2016 को राहुल खान के साथ हुआ था। महिला के पिता ने अपने सामर्थ्य के अनुसार दान-दहेज दिया। आरोप है कि शादी में मिले दहेज से ससुराल पक्ष के लोग खुश नहीं थे। पति राहुल खान और ससुराल पक्ष के लोग आशिक अली, गुलहसन, अरशद, सैफ अली, नईम, मोहिन, मोमीन, वकीला, सितारा, मुनीजा, मुस्कान, गुलिस्ता, कल्लो, इमरान, जीशान और जाकिर द्वारा निकाह के दौरान कम दहेज मिलने का ताना देते है।

विदेशी कंपनी की ईमेल आईडी हैक कर जालसाजों ने 1.55 करोड़ ठगे

नोएडा, । साइबर जालसाजों ने देश की नामी-गिरामी कंपनी यूनाइटेड किंगडम की ईमेल आईडी हैक साइबर जालसाजों ने एक करोड़ 55 लाख रुपये की ठगी कर ली। रकम ट्रांसफर होने के एक महीने बाद जब संबंधित कंपनी को ठगी की जानकारी हुई तो मामले की शिकायत साइबर क्राइम थाने की पुलिस से की गई। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने अज्ञात जालसाजों के खिलाफ जांच शुरू कर दी है। शुरूआती जांच में विदेशी हैकर के ठगी में शामिल होने का इनपुट मिला है। जर्मनी की बारटेक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के प्रतिनिधि संतोष कुमार झा द्वारा शिकायत में बताया गया कि सेक्टर-62 में उनकी कंपनी की शाखा है। उनकी कंपनी देश और विदेश में इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार उत्पादों का कारोबार लंबे समय से कर रही है। भारत में भी इसकी शाखाएं फैली हुई हैं।

जल्द ही टीवी पर वापसी करेंगी दीपिका कक्कड़

दीपिका कक्कड़ टीवी सीरियल 'ससुराल सिमर का' के जरिए दर्शकों के बीच मशहूर हुई थी। इसके अलावा भी उन्होंने कई हिट टीवी सीरियल्स में काम किया। टीवी एक्टर शोएब इब्राहिम से शादी के बाद वह अपनी फैमिली लाइफ में व्यस्त हो गई। उनका एक छोटा बेटा भी है, जिसकी परवरिश में वह अपना पूरा समय देती हैं। लेकिन टीवी सीरियल में काम ना करने के बावजूद भी वह लाइमलाइट में बनी रहती हैं।

दीपिका का व्लॉग चैनल है पॉपुलर

दीपिका टीवी सीरियल में एक्टिव ना होने के बावजूद भी, दर्शकों के बीच अपनी जगह बनाए हुए हैं। दरअसल, वह अपना एक व्लॉग चैनल यूट्यूब पर चलाती हैं। इस चैनल का नाम 'दीपिका की दुनिया' है। इसमें वह अपने हर दिन का हाल दर्शकों के साथ साझा करती हैं। उनके इस चैनल पर लगभग 3 मिलियन फॉलोअर हैं।

हाल ही में अपने व्लॉगिंग चैनल पर ही दीपिका कक्कड़ ने बताया कि वह जल्द ही एक दर्शकों को एक खास प्रोजेक्ट में नजर आएंगी। इसी व्लॉग में वह शूटिंग वाली जगह पर भी नजर आईं। शूटिंग पर उनका बेटा भी साथ में मौजूद था। दीपिका ने कहा कि वह जल्द ही बताएंगी कि किस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन रही हैं।

ट्रोलिंग का भी होती हैं शिकार

दीपिका के यूट्यूब चैनल पर अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है लेकिन उन्हें अकसर ट्रोलिंग का शिकार भी होना पड़ता है। अकसर कुछ सोशल मीडिया यूजर्स दीपिका कक्कड़ और उनके पति शोएब इब्राहिम को उनके रहन-सहन और पहनावे को लेकर ट्रोल कर देते हैं। कई यूजर्स तो दीपिका को इसलिए भी ट्रोल करते हैं कि उन्होंने परिवार की देखभाल के लिए करियर से ब्रेक ले लिया है। इस ट्रोलिंग पर दीपिका भी चुप नहीं रहती हैं, वह बुरी बातें बोलने वाले लोगों को अपने व्लॉगिंग चैनल के जरिए ही मुंहतोड़ जवाब देती हैं।

रूमर्ड बॉयफ्रेंड के साथ छुट्टियां मना रहीं तृप्ति डिमरी?

साल 2024 की सनसनी रही अभिनेत्री तृप्ति डिमरी को अक्सर अपने रुमर्ड बॉयफ्रेंड सैम मर्चेंट के साथ स्पॉट किया जाता है। दोनों कभी लंच डेट पर नजर आते है और कभी बाइक राइड का आनंद उठाते हुए। हाल ही में दोनों ने यूके कॉट्सवोल्ड्स से छुट्टियों की कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर कीं। हालांकि, दोनों ने साथ में तस्वीरें पोस्ट नहीं की, लेकिन तस्वीरें में एक जैसी लोकेशन ने प्रशंसकों को यह अनुमान लगाने पर मजबूर कर दिया कि दोनों साथ में छुट्टियां मना रहे हैं।

छुट्टियों का आनंद लेते नजर आईं तृप्ति

तृप्ति डिमरी ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर कई तस्वीरें साझा की। एक तस्वीर में वह बकरियों को खिलाती हुई नजर आ रही हैं। दूसरी तस्वीर में वह हॉट चॉकलेट का आनंद ले रही हैं। एक अन्य तस्वीर में वह रेस्टोरेंट में पोज दे रही हैं। वहीं, सैम मर्चेंट ने भी अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर उसी तरह की बकरी को खिलाते नजर आ रहे हैं। सैम ने भी उसी टेबल की तस्वीर पोस्ट की, जिस पर तृप्ति ने बैठकर तस्वीर खिंचवाई थी। सैम ने इंस्टाग्राम स्टोरीज पर भी बकरियों को खाना खिलाते हुए अपनी वही तस्वीर शेयर की, जिससे यह अनुमान और भी बढ़ गया कि दोनों साथ में छुट्टियां मना रहे हैं। वहीं, एक अन्य तस्वीर में मर्चेंट को सर्दियों के कपड़े पहने हुए और हाथ में ड्रिंक लिए हुए सेल्फी लेते हुए देखा जा सकता है। दोनों के सोशल मीडिया पर एक जैसी तस्वीरें दिखने से उनके डेटिंग की अफवाहों को जोर मिलता है। हालांकि, दोनों ने अपने डेटिंग की अफवाहों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है।

तृप्ति डिमरी का वर्क फ्रंट

अभिनेत्री के वर्क फ्रंट की बात करें तो साल 2024 उनके लिए एक सफल साल रहा। उनकी आगामी फिल्म विशाल भारद्वाज की 'अर्जुन उस्तरा' है। फिल्म में शाहिद कपूर मुख्य भूमिका में होंगे, जिसकी शूटिंग 6 जनवरी, 2025 से शुरू होने वाली है। इसके अलावा वह धर्मा प्रोडक्शंस की 'धड़क 2' में नजर आएंगी। अभिनेत्री रणबीर कपूर के साथ 'एनिमल पार्क' में दिखाई देंगी।

गर्ल्स विल बी गर्ल्स के मुरीद हुए राजकुमार राव, जमकर की तारीफ

ऋचा चड्ढा और अली फजल द्वारा निर्मित गर्ल्स विल बी गर्ल्स को फैंस के साथ सितारों की भी तारीफें मिल रही हैं। ऋतिक रोशन, प्रियंका चोपड़ा और दीया मिर्जा के बाद अब राजकुमार राव भी इस सूची में शामिल हो गए हैं। राजकुमार राव ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर गर्ल्स विल बी गर्ल्स का पोस्टर शेयर किया और तारीफ की। उन्होंने लिखा- यह एक बहुत ही खूबसूरत, आने वाली उम्र की फिल्म है, जिसे हमारी अपनी ऋचा चड्ढा और अली फजल ने प्रोड्यूस किया है। आप दोनों को बहुत शक्ति मिले, यह फिल्म लंबे समय तक आपके साथ रहेगी, गर्ल्स विल बी गर्ल्स के लिए शुचि तलाती को बधाई। उन्होंने आगे कहा- कनी कुसरुति, प्रीति पाणिग्रही और केसव बिनॉय किरण को आप सभी ने बेहतरीन अभिनय किया है।

पहले एड फिल्म नहीं मिलती थी, अब ऋचा चड्ढा खुद मना करती हैं ब्रॉन्ड को?

हाल ही में ऋचा चड्ढा और अली फजल के प्रोडक्शन हाउस की फिल्म गर्ल्स विल बी गर्ल्स ओटीटी पर रिलीज हुई। इस फिल्म को लेकर ऋचा और अली कई इंटरव्यू दे चुके हैं। हाल ही में मैशबेल इंडिया के एक यूट्यूब शो पर भी दोनों नजर आए। इस दौरान करियर, पर्सनल लाइफ से जुड़ी बातचीत भी ऋचा ने की। इसी इंटरव्यू में उन्होंने बताया कि करियर के शुरुआती दौर में उनको एड फिल्म्स नहीं मिलते थे। लेकिन अब जब एड फिल्म, ब्रॉन्ड्स का प्रमोशन मिलता है तो वह कुछ खास एड, ब्रॉन्ड्स को करने से मना कर देती हैं।

क्यों नहीं करतीं कुछ ब्रॉन्ड्स का प्रमोशन

ऋचा इंटरव्यू में कहती हैं, 'करियर के शुरुआत में तो एड फिल्म, ब्रॉन्ड प्रमोशन कम ही मिलता था, लेकिन अब जब यह सब करने को मिलता है तो मैं ही मना कर देती हूं। दरअसल, मैं फेयरनेस क्रीम जैसे प्रोडक्ट्स को बिल्कुल भी प्रमोट नहीं करती हूं, इसलिए ऐसे एड, ब्रॉन्ड्स को मना कर देती हूं।'

मां बनने की जिम्मेदारी निभा रही हैं

कुछ समय पहले ही ऋचा और अली फजल माता-पिता बने हैं। बेटी की परवरिश करना बिल्कुल भी आसान काम नहीं है, इस बारे में भी दोनों बताते हैं। ऋचा ने भी कुछ दिन पहले एक इंटरव्यू में कहा था कि वह चाहती हैं कि जब बेटी बड़ी हो तो उनके साथ एक दोस्त की तरह रिश्ता रखे।

ऋचा की आने वाली फिल्म

प्रोड्यूसर के तौर पर ऋचा एक्टिव हो चुकी हैं, लेकिन अगले साल वह एक फिल्म में एक्टिंग करती हुई भी नजर आएंगी। फिल्म 'अभी तो पार्टी शुरू हुई है' में ऋचा अलग तरह का किरदार करने वाली हैं। ऋचा चड्ढा ने अपने करियर में अलग तरह के किरदार फिल्मों में किए हैं, फुकरे फिल्म में उनका निभाया भोली पंजाबन का किरदार लोगों को खूब पसंद आया था। आज भी दर्शक उन्हें इसी नाम और किरदार से ज्यादा पहचानते हैं।

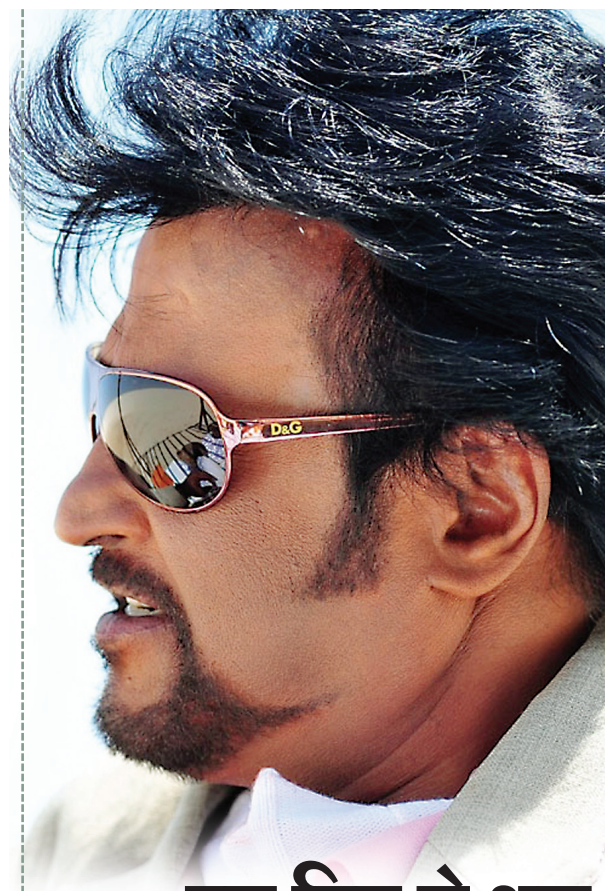

इस दिन से शुरू होगी रजनीकांत की जेलर 2 की शूटिंग

सुपरस्टार रजनीकांत ने 2023 में ब्लॉकबस्टर फिल्म जेलर के लिए फिल्म निर्माता नेल्सन दिलीपकुमार के साथ मिलकर काम किया था। इस फिल्म में दिग्गज अभिनेता ने मुख्य भूमिका निभाई थी, जो तमिल सिनेमा की अब तक की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक बन गई। सुपरस्टार रजनीकांत वर्तमान में लोकेश कनगराज द्वारा निर्देशित अपनी अगली फिल्म कुली पर काम कर रहे हैं, जिसे 2025 में रिलीज किया जाना है। वहीं, अब फिल्म की शूटिंग को लेकर बड़ी जानकारी सामने आई है।

फिल्म की शूटिंग

फिल्म को लेकर ताजा जानकारी सामने आई है कि रजनीकांत अगले साल मार्च में जेलर 2 की शूटिंग शुरू करेंगे। रिपोर्ट्स के अनुसार, रजनीकांत- नेल्सन दिलीपकुमार की फिल्म अगले साल की शुरुआत में फ्लोर पर आएगी। 2023 की ब्लॉकबस्टर जेलर का सीक्वल सुपरस्टार और निर्देशक के बीच दूसरा सहयोग है।

फिल्म में रजनीकांत का किरदार

सीक्वल को लेकर चर्चा काफी समय से चल रही है। जल्द ही आधिकारिक अपडेट मिलने की उम्मीद है। जेलर नाम की पहली फिल्म में रजनीकांत को एक रिटायर्ड पुलिस अधिकारी के रूप में दिखाया गया था, जो शांत जीवन जी रहा था। हालांकि, जब उसके पुलिस अधिकारी बेटे का अपहरण कर लिया जाता है और उसे मृत मान लिया जाता है तो उसकी दुनिया उलट जाती है, जिससे वह उन लोगों के खिलाफ बदला लेने की होड़ में लग जाता है, जिन पर उसे संदेह है।

फिल्म की कहानी और कलाकार

फिल्म बदले की कहानी पर आधारित होने के बावजूद धीरे-धीरे डकैती की कहानी में बदल जाती है, जिसमें सेवानिवृत्त पुलिसकर्मी के शुरुआती दिनों की भी झलक मिलती है। रजनीकांत के अलावा जेलर में विनायकन, राम्या कृष्णन, तमन्ना भाटिया, वसंत रवि, मिर्ना मेनन, योगी बाबू और अन्य कलाकार प्रमुख भूमिकाओं में थे। फिल्म में मोहनलाल, शिव राजकुमार और जैकी श्रॉफ जैसे सितारों की कैमियो भूमिकाएं भी शामिल थीं।

रजनीकांत का वर्कफ्रंट

वहीं, रजनीकांत रजनीकांत को आखिरी बार टीजे ज्ञानवेल द्वारा निर्देशित वेट्टैयन में देखा गया था। फिलहाल रजनीकांत निर्देशक लोकेश कनगराज के साथ कुली फिल्म कर रहे हैं। एक्शन थ्रिलर में प्रभावशाली कलाकारों की टोली है, जिसमें नागार्जुन अक्किनेनी, उपेंद्र, सौबिन शाहिर, श्रुति हासन और अन्य शामिल हैं।

क्या शादी के बाद अभिनय की दुनिया छोड़ देंगी कीर्ति सुरेश? शुरू हुईं ब्रेक लेने की अफवाह

कीर्ति सुरेश इन दिनों खबरों में हैं। दिलचस्प बात है कि इसकी वजह एक तरफ उनकी निजी जिंदगी भी है तो प्रोफेशनल फ्रंट पर भी वे कमाल कर रही हैं। दरअसल, हाल ही में अभिनेत्री ने एंटनी थाटिल से शादी रचाकर नई जिंदगी शुरू की है। इसके साथ-साथ फिल्म बेबी जॉन से वे बॉलीवुड डेब्यू करने जा रही हैं। करियर के उम्दा मोड़ पर अचानक खबरें आ रही हैं कि कीर्ति सुरेश अभिनय की दुनिया को अलविदा कहने वाली हैं।

क्या इंडस्ट्री से जाएंगी दूर?

मीडिया रिपोर्ट्स में ऐसी फवाहें चल रही हैं कि कीर्ति सुरेश फिल्मों से ब्रेक लेने की तैयारी कर रही हैं। अब जबकि वे अपने करियर के शानदार मुकाम पर हैं, साउथ के बाद हिंदी सिनेमा में कदम रख रही हैं तो अचानक उनके ब्रेक लेने की खबरें शुरू हो गई हैं। सोशल मीडिया पर कयास लगाए जा रहे हैं कि क्या आने वाले वक्त में कीर्ति इंडस्ट्री से दूर हो जाएंगी? इस वजह से लगाई जा रहीं अटकलें अभिनेत्री के ब्रेक लेने की अफवाहें इसलिए शुरू हुई हैं क्योंकि उनके पास फिलहाल सिर्फ दो ही फिल्में हैं। एक- रिवॉल्वर रीटा और दूसरी कन्निवेदी। ऐसे में फैंस को लग रहा है कि उन्होंने कोई और फिल्म साइन नहीं की है। ऐसे में अटकलें लग रही हैं कि शादी के बाद वे करियर पर विराम तो नहीं लगा रहीं? अपने करियर को लेकर चल रही अफवाहों पर कीर्ति सुरेश ने अभी तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। बात करें बेबी जॉन की तो इसमें कीर्ति के साथ वरुण धवन नजर आएंगे। फिल्म को एटली प्रोड्यूस कर रहे हैं। यह फिल्म क्रिसमस के अवसर पर 25 दिसंबर 2024 को रिलीज होगी।

अहसास चन्ना नेने बताया क्यों निभाए मेल किरदार

अहसास चन्ना ने हाल ही में मनोरंजन उद्योग में बाल कलाकार के रूप में लड़के की भूमिका निभाने पर अपने विचार साझा किए। अभिनेत्री ने बताया कि यह उन्होंने नहीं चुना था बल्कि परिस्थितियों की वजह से ऐसा हो गया था। अभिनेत्री ने कहा कि लड़के की भूमिका निभाना एक जानबूझकर किया गया विकल्प नहीं था, बल्कि परिस्थितियों का परिणाम था। अभिनेत्री ने बताया कि जब वह चार साल की थी, तब उनकी मां ने उन्हें 'वास्तु शास्त्र' में एक लड़के की भूमिका निभाने के लिए राजी किया। फिल्म हिट होने के बाद उन्हें इंडस्ट्री में पहचान मिली और वह 'कभी अलविदा ना कहना' में नजर आईं। अभिनेत्री ने बताया कि लड़के की भूमिका ने उन्हें कभी प्रभावित नहीं किया, वह जानती थीं कि अभिनय उनके जीवन का एक हिस्सा है। अभिनेत्री स्कूल और काम के बीच में संतुलन बैठाती थीं। हालांकि, कभी 'अलविदा ना कहना' के बाद उनकी मां ने उनसे कहा कि वह अब लड़के की भूमिका निभाना बंद कर दें।

संक्षिप्त खबरें

एलएंडटी को के9 वज्र-टी ऑर्टिलरी प्लेटफॉर्म के लिए बड़ा रक्षा ठेका मिला

नई दिल्ली। अवसंरचना क्षेत्र की प्रमुख कंपनी लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ने सोमवार को कहा कि उसे भारतीय सेना को के9 वज्र-टी ऑर्टिलरी प्लेटफॉर्म की आपूर्ति के लिए रक्षा मंत्रालय से बड़ा ऑर्डर मिला है। कंपनी के परियोजना वर्गीकरण के अनुसार, बड़ा ऑर्डर 5,000 करोड़ रुपये से 10,000 करोड़ रुपये के बीच है। के9 वज्र-टी एक 155 मिमी, 52-कैलिबर ट्रैक वाला स्वचालित आर्टिलरी प्लेटफॉर्म है, जिसे दक्षिण कोरियाई स्वचालित हॉवित्जर के9 थंडर से अनुकूलित किया गया है।एलएंडटी और हनवा एयरोस्पेस द्वारा मिलकर विकसित इस ऑर्टिलरी प्लेटफॉर्म को रेगिस्तान, मैदानी और ऊंचाई वाले क्षेत्रों सहित विभिन्न इलाकों में संचालित किया जा सकता है। इसे भारतीय सेना की जरूरतों के अनुसार अनुकूलित किया गया है। कंपनी ने 2017 में वैश्विक प्रतिस्पर्धी बोली के माध्यम से और सफल क्षेत्र मूल्यांकन के बाद 100 के9 वज्र-टी प्लेटफार्मों की पहली खेप के लिए ठेका हासिल किया था।

2024-25 की पहली छमाही में पश्चिम बंगाल का राजस्व व्यय, पूंजीगत व्यय से अधिकः रिपोर्ट

कोलकाता। रेटिंग एजेंसी केयरएज के अनुसार वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही में पश्चिम बंगाल का राजकोषीय व्यय, उसके पूंजीगत व्यय से अधिक हो गया है। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि इससे राजस्व व्यय और राजकोषीय व्यय के बीच बढ़ते असंतुलन का पता चलता है, जो प्रमुख भारतीय राज्यों में देखे गए व्यापक रुझानों के अनुरूप है। राज्य और केंद्रीय वित्त पर एजेंसी की ताजा रिपोर्ट में कहा गया है कि राज्य ने राजस्व व्यय में सालाना आधार पर 13.5 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की, जबकि इसका पूंजीगत व्यय केवल 7.7 प्रतिशत बढ़ा। केयरएज की रिपोर्ट में कहा गया है, वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही में राज्यों का राजस्व व्यय मजबूत रहा। कुल मिलाकर, हमारे नमूने में शीर्ष 20 राज्यों ने वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही में अपने बजटीय राजस्व व्यय का 41.5 प्रतिशत उपयोग किया, जो वित्त वर्ष 2024 की पहली छमाही में 40 प्रतिशत उपयोग से थोड़ा अधिक है। रिपोर्ट के मुताबिक मुफ्त उपहार, आय सहायता और ऋण माफी जैसे चुनावी वादों को लागू करने के कारण यह वृद्धि हुई।

सेमीकंडक्टर स्टार्टअप माइंडग्रोव टेक्नोलॉजीज ने जुटाए 80 लाख डॉलर

नई दिल्ली। फैबलेस सेमीकंडक्टर डिजाइन स्टार्टअप माइंडग्रोव टेक्नोलॉजिज ने ए श्रृंखला राउंड में 80 लाख डॉलर जुटाए हैं। इस रकम का उपयोग कंपनी अपने कार्यबल का विस्तार करने और अपनी इन हाउस इंजीनियरिंग क्षमताओं को बढ़ाने में करेगी। कंपनी ने यह जानकारी दी है। इस दौर का सह नेतृत्व रॉकेटशिप वीसी और स्पेशियल इन्वेस्ट ने किया। निवेश से कंपनी को अपने पहले चिप के उत्पादन और बिक्री बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। इस साल शुरूआत में मई 2024 में कंपनी ने सिक्योर आईओटी पेश किया था, जो भारत का पहला वाणिज्यिक ग्रेड उच्च प्रदर्शन माइक्रोकंट्रोलर एसओसी (सिस्टम ऑन चिप) और 28 एनएम पर तैयार किया गया। इसे उन इलेक्ट्रानिक डिवाइसेज के लिए डिजाइन किया गया है जो घड़ियां, मीटर, ताले और एक्सेस कंट्रोल यूनिट को स्मार्ट में बदल रही हैं। साथ ही साथ प्रिंटर और प्वाइंट ऑफ सेल (पीओएस) मशीनों जैसी पावर डिवाइसों में यह काम आता है। चिप के अगले साल के मध्य तक बाजार में आने की संभावना है। इसके अलावा, माइंडग्रोव को भारत सरकार की सेमीकंडक्टर डिजाइन से जुड़ी प्रोत्साहन (डीएलआई) योजना के तहत एक नई चिप, विजन एसओसी तैयार करने के लिए भी 15 करोड़ रुपये की मंजूरी मिली है।

सोने की कीमतों में गिरावट, चांदी हुई महंगी

नई दिल्ली। इस सप्ताह के पहले दिन सोमवार को सोने के वायदा कारोबार की शुरूआत में नरमी देखी जा रही है, जबकि चांदी के वायदा भाव तेजी के साथ कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव 75,400 रुपये के करीब, जबकि चांदी के वायदा भाव 88,850 रुपये के करीब कारोबार कर रहे थे। वैश्विक बाजार में सोना के भाव सुस्ती और चांदी के भाव तेजी के साथ कारोबार कर रहे हैं। सोने के वायदा भाव की शुरूआत गिरावट के साथ हुई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क फरबरी कॉन्ट्रेक्ट 21 रुपये की गिरावट के साथ 76,399 रुपये के भाव पर खुला। सोने के वायदा भाव ने इस साल 79,775 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर छू लिया था। चांदी के वायदा भाव की शुरूआत तेज रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क मार्च कॉन्ट्रेक्ट 408 रुपये की तेजी के साथ 88,800 रुपये पर खुला।

शुरूआती कारोबार में शेयर बाजार में तेजी का रुख, सेंसेक्स और निफ्टी उछले

प्रात : किरण/एजेंसी

नईदिल्ली। पिछले सप्ताह लगातार गिरावट का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार में आज सप्ताह के पहले कारोबारी दिन शुरूआती कारोबार के दौरान तेजी का रुख नजर आ रहा है। आज के कारोबार की शुरूआत भी मजबूती के साथ हुई थी। बाजार खुलने के बाद से ही लिवाल और बिकवाल लगातार एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश कर रहे हैं, जिसकी वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों की चाल में उतार चढ़ाव बना हुआ है। पहले एक घंटे का कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.84 प्रतिशत और निफ्टी 0.87 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे।

शुरूआती एक घंटे का कारोबार के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से जेएसडब्ल्यू स्टील, ट्रेंट लिमिटेड, श्रीराम फाइनेंस, एचडीएफसी बैंक और हिंडाल्को इंडस्ट्रीज के शेयर 2.21 प्रतिशत और से लेकर 1.59 प्रतिशत की तेजी के साथ कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर हीरो मोटोकॉर्प, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, अपोलो हॉस्पिटल, एनटीपीसी और डॉ रेड्डीज लेबोरेट्रीज के शेयर 0.96 प्रतिशत से लेकर 0.28 प्रतिशत की गिरावट के साथ कारोबार करते नजर आ रहे थे। अभी तक के कारोबार में स्टॉक मार्केट में 2,056 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही थी। इनमें से 877 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 1,179 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 28 शेयर लिवाली के सपोर्ट से हरे निशान में बने हुए थे। दूसरी ओर 2 शेयर बिकवाली के दबाव में लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 42 शेयर हरे निशान में और 8 शेयर लाल निशान में कारोबार करते नजर आ रहे थे। बीएसई का सेंसेक्स आज 447.05 अंक की तेजी के साथ 78,488.64 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरूआत होते ही तेजड़ियों और मंदड़ियों के बीच एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस सूचकांक की चाल में भी उतार-चढ़ाव होता रहा। खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक उछल कर 78,743.16 अंक के स्तर तक पहुंचा, वही बिकवाली का दबाव बनने पर ये 78,438.67 अंक के स्तर तक गिर भी गया। हालांकि सेंसेक्स में न्यूनतम 400 अंक से अधिक की तेजी हमेशा बनी रही। बाजार में लगातार जारी खरीद बिक्री के बीच पहले 1 घंटे का कारोबार होने के बाद सुबह 10:15 बजे सेंसेक्स 657.15 अंक की तेजी के साथ 78,698.74 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था।

सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 150.70 अंक उछल कर 23,738.20 अंक के स्तर से कारोबार की शुरूआत की। बाजार खुलते ही लिवालों और बिकवालों के बीच एक दूसरे पर हावी होने की कोशिश शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस सूचकांक की चाल भी लगातार ऊपर नीचे होती रही। खरीदारी के सपोर्ट से ये सूचकांक उछल कर 23,806.50 अंक तक पहुंचा। वहीं बिकवाली होने पर इसने 23,701.60 अंक तक गोता भी लगाया। राहत की बात यही रही कि ये सूचकांक लगातार हरे निशान में कारोबार करता रहा। बाजार में लगातार जारी लिवाली और बिकवाली के बीच शुरूआती 1 घंटे का कारोबार होने के बाद सुबह 10:15 बजे निफ्टी 206.20 अंक की मजबूती के साथ 23,793.70 अंक के स्तर पर कारोबार कर रहा था। इसके पहले पिछले सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को सेंसेक्स 1,176.46 अंक यानी 1.49 प्रतिशत की कमजोरी के साथ 78,041.59 अंक के स्तर पर बंद हुआ था। वहीं निफ्टी ने 364.20 अंक यानी 1.52 प्रतिशत की गिरावट के साथ 23,587.50 अंक के स्तर पर शुक्रवार के कारोबार का अंत किया था।

भारत में हर साल खुल रहे 30 मिलियन नए डीमैट खाते, हर 4 में से एक महिला निवेशक

भारतीय स्टेट बैंक के आर्थिक अनुसंधान विभाग की रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2024 में देश में कुल डीमैट खाते 150 मिलियन (जिनमें से 92 मिलियन एनएसई पर यूनिक इंवेस्टर्स हैं) को पार कर गए, जबकि वित्त वर्ष 2014 में यह संख्या मात्र 22 मिलियन थी। एसबीआई के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ. सौम्या कांति घोष ने कहा, इस साल नए डीमैट खातों की संख्या 40 मिलियन का आंकड़ा पार कर सकती है।

प्रात : किरण/एजेंसी

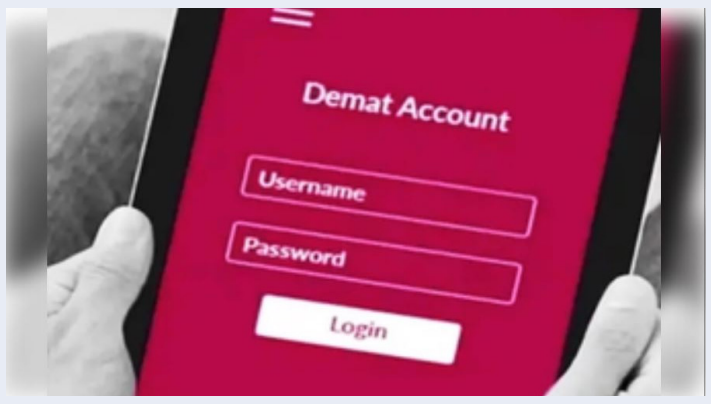

नई दिल्ली। एसबीआई रिसर्च ने सोमवार को कहा कि भारत में 2021 से हर साल कम से कम 30 मिलियन नए डीमैट खाते खुल रहे हैं और लगभग हर चार में से एक अब महिला निवेशक है। यह बचत के वित्तीयकरण के चैनल के रूप में पूंजी बाजार का उपयोग करने के बढ़ते प्रचलन को दशार्ता है। भारतीय स्टेट बैंक के आर्थिक अनुसंधान विभाग की रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2024 में देश में कुल डीमैट खाते 150 मिलियन (जिनमें से 92 मिलियन एनएसई पर यूनिक इंवेस्टर्स हैं) को पार कर गए, जबकि वित्त वर्ष 2014 में यह संख्या मात्र 22 मिलियन थी। एसबीआई के समूह मुख्य आर्थिक सलाहकार डॉ.सौम्या कांति घोष ने कहा, इस साल नए डीमैट खातों की संख्या 40 मिलियन का आंकड़ा पार कर सकती है। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों को छोड़कर, वित्त वर्ष 2022 की तुलना में वित्त वर्ष 2025 में महिलाओं की भागीदारी राष्ट्रीय औसत से अधिक बढ़ी है। वित्त वर्ष 2025 में कुल डीमैट में महिलाओं की हिस्सेदारी के मामले में दिल्ली 29.8 प्रतिशत, महाराष्ट्र 27.7 प्रतिशत, तमिलनाडु 27.5 प्रतिशत के साथ शीर्ष पर है। वहीं, पूरे राष्ट्रीय स्तर पर यह आंकड़ा औसत 23.9 प्रतिशत पर है। वहीं, बिहार 15.4 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश 18.2 प्रतिशत और ओडिशा 19.4 प्रतिशत के साथ इन राज्यों में पंजीकृत निवेशक आधार में महिलाओं की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत से कम है। घटती औसत/मध्यिका आयु और 30 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों की बढ़ती हिस्सेदारी पिछले कुछ वर्षों में बाजारों में युवा निवेशकों की आमद को दशार्ती है, जो तकनीकी प्रगति, कम ट्रेडिंग लागत और सूचना तक बढ़ती पहुंच के कारण संभव हुई है।

रिपोर्ट के अनुसार, बाजार पूंजीकरण में 1 प्रतिशत की वृद्धि से जीडीपी विकास दर में 0.06 प्रतिशत की वृद्धि होती है। वित्त वर्ष 2018 से अब तक पंजीकृत नए एसआईपी में चार गुना वृद्धि हुई है और यह 4.8 करोड़ हो गया है, जिससे कुल एसआईपी योगदान लगभग 2 लाख करोड़ रुपये हो गया है। पिछले 10 वर्षों में पूंजी बाजारों से भारतीय कंपनियों द्वारा जुटाए गए फंड में 10 गुना से अधिक की वृद्धि हुई है, जो वित्त वर्ष 2014 में 12,068 करोड़ रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में अक्टूबर तक 1.21 लाख करोड़ रुपये हो गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि शेयरों और डिबेंचर में परिवारों की बचत वित्त वर्ष 2024 में जीडीपी के 1 प्रतिशत तक बढ़ गई है, जो वित्त वर्ष 2014 में 0.2 प्रतिशत थी और घरेलू वित्तीय बचत में हिस्सेदारी 1 प्रतिशत से बढ़कर 5 प्रतिशत हो गई है। इस बीच वित्त वर्ष 2025 में अक्टूबर तक 302 इश्यू से इक्विटी बाजारों से कुल 1.21 लाख करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई गई। एनएसई बाजार पूंजीकरण वित्त वर्ष 2025 में अब तक वित्त वर्ष 14 की तुलना में 6 गुना से अधिक बढ़कर 441 लाख करोड़ रुपये हो गया है। एसबीआई रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया, इक्विटी कैश सेगमेंट में औसत ट्रेड साइज वित्त वर्ष 2014 के 19,460 रुपये से बढ़कर वित्त वर्ष 2025 में अब तक 30,742 रुपये हो गया है।

पीवीआर आईनॉक्स ने मीडिया कारोबार का पुनर्गठन किया, शालू सभरवाल करेंगी नेतृत्व

प्रात : किरण/एजेंसी

नईदिल्ली। पीवीआर आईनॉक्स लिमिटेड ने सोमवार को अपने 600 करोड़ रुपये के मीडिया कारोबार के पुनर्गठन की घोषणा की। इसके तहत मुख्य बिक्री अधिकारी शालू सभरवाल देश भर में बाजार संपर्क को मजबूत करने और वृद्धि को बढ़ावा देने की पहल का नेतृत्व करेंगी। पीवीआर आईनॉक्स ने बयान में कहा कि सभरवाल उद्योग विशेषज्ञों की एक टीम का लाभ उठाकर मीडिया कारोबार को मजबूत करने के लिए रणनीतिक बदलाव का नेतृत्व करेंगी। वह पूरे भारत में व्यापार विकास की जिम्मेदारी संभालेंगी। पीवीआर आईनॉक्स के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ)-राजस्व और परिचालन गौतम दत्ता ने कहा, उनका (शालू सभरवाल का) व्यापक अनुभव और रणनीतिक नजरिया इस परिवर्तन का नेतृत्व करने के लिए उन्हें आदर्श बनाता है। उद्योग विशेषज्ञों को लाकर, डेटा संचालित निर्णय लेने और प्रायोजन अवसरों जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके, हम पीवीआर आईनॉक्स को मीडिया कारोबार में एक प्रमुख ताकत के रूप में स्थापित कर रहे हैं।

निसान, होंडा के विलय की घोषणा, बनेगी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी वाहन निर्माता कंपनी

प्रात : किरण/एजेंसी

टोक्यो। जापानी वाहन निमार्ता निसान और होंडा ने सोमवार को विलय की घोषणा की, जिसके पूरा होने पर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी वाहन विनिर्माण कंपनी बनेगी। गौरतलब है कि वाहन उद्योग इस समय बड़े बदलावों से गुजर रहा है। एक तरफ यह जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता से दूर जा रहा है, जबकि दूसरी तरफ चीनी प्रतिद्वंद्वियों से तेज प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहा है। दोनों कंपनियों और निसान के गठबंधन के सदस्य मित्सुबिशी मोटर्स के शीर्ष अधिकारियों ने यह घोषणा की। तीनों वाहन विनिमार्ताओं के बाजार पूंजीकरण के आधार पर विलय से 50 अरब डॉलर से अधिक कीमत की एक बड़ी कंपनी बन सकती है। इस विलय के बाद भी टोयोटा, जिसने 2023 में 1.15 करोड़ वाहन बनाए, जापान की अग्रणी वाहन विनिमार्ता बनी रहेगी।

गूगल ने डीओजे के मुकदमे को बताया गलत, कहा- इनोवेशन क्षमता पर होगा असर

प्रात : किरण/एजेंसी

वाशिंगटन। दिग्गज टेक कंपनी गूगल द्वारा सोमवार को यूएस डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस (डीओजे) के मुकदमे और उसके ह्यओवरबोर्ड प्रस्तावह्न की आलोचना की गई है। साथ ही कहा कि कोर्ट में अपील करने से पहले, कंपनी ने अदालत के फैसले में वास्तविक निष्कर्षों के आधार पर अपना स्वयं का रेमेडीज प्रस्ताव दायर कर दिया है।

गूगल में रेगुलेटरी अफेयर्स की वाइस प्रेसिडेंस, ली-ऐन मुलहोलैंड ने कहा कि कंपनी इससे पूरी तरह असहमत है और डीओजे के सर्च वितरण मुकदमे में निर्णय के खिलाफ अपील करेगी। अपने रेमेडीज प्रस्ताव में गूगल ने कहा कि एप्पल और मोजिला जैसी ब्राउजर कंपनियों को अपने यूजर्स के लिए सर्वोत्तम समझे जाने वाले किसी भी सर्च इंजन के साथ डील करने की स्वतंत्रता जारी रहनी चाहिए। मुलहोलैंड ने कंपनी के ब्लॉग पोस्ट में कहा कि कोर्ट ने स्वीकार किया कि ब्राउजर कंपनियां कभी-कभी गूगल की खोज गुणवत्ता का उसके प्रतिद्वंद्वियों के सापेक्ष मूल्यांकन करती हैं और गूगल को बेहतर पाती हैं और मोजिला जैसी कंपनियों इन अनुबंधों से आय आर्जित करती हैं।

इस साल अक्टूबर में यूएस डीओजे और हर अमेरिकी राज्य के अटॉर्नी जनरल (एजी) के साथ-साथ डिस्ट्रिक्ट ऑफ कोलंबिया, गुआम और प्यूर्टो रिको ने गूगल के खिलाफ फेडरल एंटीट्रस्ट मुकदमे में एक रेमेडी फ्रेमवर्क प्रास्तव दायर किया था। डीओजे के प्रस्तावित रेमीडी फ्रेमवर्क का अधिकांश हिस्सा खोज वितरण और राजस्व साझाकरण के लिए बाजार पर गूगल के प्रभावों को टारगेट करता है। गूगल के मुताबिक, डीओजे के प्रस्ताव की सबसे बड़ी समस्या है कि यह अमेरिकी उपभोक्ताओं को नुकसान पहुंचाएगा और अमेरिका के ग्लोबल टेक्नोलॉजी में नेतृत्व को कमजोर करेगा। इस प्रस्ताव के कारण हमें लोगों की निजी सर्च क्वेरी को विदेशी और घरेलू प्रतिद्वंद्वियों के साथ साझा करने की आवश्यकता होगी। इसका हमारी प्रोडक्ट इनोवेशन पर सीधा असर होगा।

प्याज का एक महीने में 50 फीसदी गिरा थोक भाव

प्याज की कीमतें 4000 रुपए प्रति क्विंटल से गिरकर 2000 रुपए प्रति क्विंटल हुई

प्रात : किरण/एजेंसी

नई दिल्ली। देश में पिछले कुछ समय से प्याज के बढ़ते भाव के संकेत के बाद अब इस विषय पर ब्रेक लग गया है। लासलगांव में सबसे बड़ी थोक प्याज मंडी में प्याज की कीमत एक महीने में 50 फीसदी गिर गई है। पिछले महीने तक जहां प्याज की कीमतें 4000 रुपए प्रति क्विंटल थीं, वहीं रविवार को यह 2000 रुपए प्रति क्विंटल हो गई। नई खरीफ फसल की आवक से प्याज का मार्केट में भाव गिर रहा है। व्यापारियों का कहना है कि महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश जैसे प्रमुख प्याज उत्पादक क्षेत्रों में नए प्याज की आवक बढ़ने से रेट और भी गिर सकते हैं। प्याज व्यापारियों का कहना है कि खरीफ फसल का प्याज अधिक नमी के कारण लंबे समय तक भंडारित नहीं किया जा सकता, इसलिए किसान भरपूर उत्पादन के बावजूद इसे खुदाई के साथ ही बाजार में ले जा रहे हैं। अच्छी मानसूनी बारिश ने इस साल प्याज समेत अन्य फसलों जैसे टमाटर और आलू के उत्पादन को बढ़ावा दिया है। खरीफ प्याज का क्षेत्रफल इस साल पिछले वर्ष की तुलना में 27 फीसदी अधिक है। लासलगांव कृषि उत्पाद बाजार समिति के निदेशक ने बताया कि महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे प्रमुख उत्पादक राज्यों में प्याज की बढ़ती आवक से मंडी भाव गिर रहे हैं। इसके बावजूद, सरकार ने प्याज के निर्यात पर 20 फीसदी शुल्क लगाया है। निर्यात शुल्क की कटौती की मांग हो रही है और उम्मीद है कि इससे मांग और कीमतें बढ़ सकती हैं। खरीफ फसल की मजबूत आवक से अगले कुछ हफ्तों में खुदरा कीमतों में और नरमी आने की उम्मीद है।

कार खरीदने के लिए ऑनलाइन माध्यमों की तुलना में परंपरागत डीलरशिप को प्राथमिकता: सर्वेक्षण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत में अधिकांश कार खरीदार अभी भी परंपरागत डीलरशिप के माध्यम से खरीदारी पसंद करते हैं, जबकि डिजिटल मंच भी तेजी से बढ़ रहे हैं। एक सर्वेक्षण में यह निष्कर्ष सामने आया। अर्बन साइंस के इस सर्वेक्षण में अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, चीन, भारत और मैक्सिको के 9,000 से अधिक लोग शामिल हुए। इस वैश्विक अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि ज्यादातर भारतीय खरीदार अभी भी मुख्य रूप से पारंपरिक डीलरशिप के माध्यम से वाहन खरीदना पसंद करते हैं। इसमें विश्वास और संबंध महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 10 में लगभग नौ कार खरीदार परंपरागत डीलरशिप पर जाने के लिए अधिक इच्छुक हैं। उन्हें लगता है कि एक बड़ा वित्तीय निर्णय लेने के लिए यह एक भरोसेमंद तरीका है। सर्वेक्षण के अनुसार डीलरशिप एक ऐसा स्थान देते हैं, जहां विश्वास पैदा होता है, सौदे व्यक्तिगत होते हैं और रिश्ते बनते हैं। डिजिटल मंच एक पूरक भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं और इनमें तेजी से वृद्धि हो रही है। युवा उपभोक्ता शोरूम में जाने से पहले ऑनलाइन जानकारी ले रहे हैं।

सेबी ने वित्तीय गलतबयानी के चलते भारत ग्लोबल डेवलपर्स में कारोबार रोका

प्रात : किरण, एजेंसी

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने सोमवार को वित्तीय गलतबयानी, भ्रामक खुलासे, मूल्य हेरफेर और बढ़े हुए मूल्यों पर शेयर बेचने के चलते भारत ग्लोबल डेवलपर्स लिमिटेड (बीजीडीएल) में कारोबार निलंबित कर दिया। नियामक ने कंपनी, इसके प्रबंध निदेशक अशोक कुमार सेवाडा, सीईओ मोहसिन शेख और निदेशकों झ दिनेश कुमार शर्मा और निराली प्रभाभाई करेथा झ और कई तरजीही शेयरों के आवंटियों को प्रतिभूति बाजार से प्रतिबंधित कर दिया है। इसके अलावा, सेबी ने अपने अंतरिम आदेश में तरजीही आवंटियों द्वारा शेयरों की बिक्री के जरिए कमाए गए 271.6 करोड़ रुपये के अवैध मुनाफे को जब्त कर दिया है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने 16 दिसंबर, 2024 को सोशल मीडिया पोस्ट और एक शिकायत के बाद भारत ग्लोबल डेवलपर्स के खिलाफ जांच शुरू की थी। यह जांच बीजीडीएल के शेयर की कीमत में 105 गुना की नाटकीय वृद्धि के बाद शुरू हुई। कंपनी के शेयर नवंबर 2023 में 16.14 रुपये से बढ़कर नवंबर 2024 में 1,702.95 रुपये पर पहुंच गए थे।

वृद्धि सर्विस की कीमत में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। नई कीमतें 21 दिसंबर को लागू हो गई हैं।

एलन मस्क ने एक्स यूजर्स के लिए भारत और वैश्विक स्तर पर प्रीमियम प्लस सब्सक्रिप्शन की कीमतें बढ़ाई

अब भारत में प्रीमियम प्लस यूजर्स को 1,750 रुपये प्रति माह देने होंगे, पहले इसके लिए 1,300 रुपये देने होते थे। सर्विस की कीमत में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। नई कीमतें 21 दिसंबर को लागू हो गई हैं।

प्रात : किरण, एजेंसी

नई दिल्ली। टेक अरबपति एलन मस्क ने एक्स यूजर्स के लिए भारत और वैश्विक स्तर पर टॉप-टायर सब्सक्रिप्शन सर्विस (प्रीमियम प्लस) की कीमतों में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। कीमतों में यह बढ़ोतरी मौजूदा और नए दोनों तरह के यूजर्स के लिए की गई है। अब भारत में प्रीमियम प्लस यूजर्स को 1,750 रुपये प्रति माह देने होंगे, पहले इसके लिए 1,300 रुपये देने होते थे। सर्विस की कीमत में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है। नई कीमतें 21 दिसंबर को लागू हो गई हैं। इसी तरह देश में सालाना प्रीमियम प्लस यूजर्स को 18,300 रुपये का भुगतान करना होगा, जो कि पहले 13,600 रुपये था। 2022 में टेक अरबपति द्वारा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म (जिसे पहले ट्विटर कहा जाता था) के अधिग्रहण के बाद से यह अब तक सबसे बड़ी मूल्य वृद्धि है। भारत में बेसिक टियर सब्सक्रिप्शन रेट 243 रुपये और प्रीमियम टियर 650 रुपये को लेकर किसी तरह का कोई बदलाव नहीं किया गया है। अमेरिका में प्रीमियम प्लस सर्विस की लागत 16 डॉलर से बढ़कर 22 डॉलर प्रति माह हो गई है। वार्षिक सदस्यता लागत 168 डॉलर से बढ़कर 229 डॉलर हो गई है। कंपनी के अनुसार, प्रीमियम प्लस अब पूरी तरह से विज्ञापन-मुक्त है, जो ब्राउजिंग को बेहतरीन एक्सपीरियंस देता है। कंपनी ने कहा, प्रीमियम प्लस सब्सक्राइबर्स, प्रीमियम से ज्यादा बेहतर सर्विस का एक्सपीरियंस ले सकेंगे। प्लस यूजर्स कई नए फीचर्स जैसे रडार, ग्रोक एआई मॉडल पर हाई लिमिट का इस्तेमाल कर सकेंगे, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि प्लेटफॉर्म पर आपको सबसे बेहतर सर्विस मिल रही है। बढ़ी हुई कीमत हमें प्रीमियम प्लस को समय के साथ और बेहतर बनाने में अधिक निवेश करने की नुमति देती है। कंपनी ने कहा, आपकी प्रीमियम प्लस सब्सक्रिप्शन फीस नई और ज्यादा इक्विटेबल सिस्टम को लेकर योगदान देने में अहम होगी, जहां क्रिएटर की अर्निंग उनके द्वारा एक्स पर लाई गई वैल्यू से जुड़ी होगी।

ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम ने न्यूजीलैंड को 75 रनों से हराया

प्रात: किरण/ एजेंसी

वेलिंगटन। एश्ले गार्डनर (74), फोबे लिचफील्ड (50) रनों की अर्धशतकीय पारी के बाद एनाबेल सदरलैंड, अलाना किंग (तीन-तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम ने सोमवार को तीसरे एकदिवसीय मैच में न्यूजीलैंड को 75 रनों से हरा दिया हैं। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज 2-0 से अपने नाम कर ली। एनाबेल सदरलैंड को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच और प्लेयर ऑफ द सीरीज से नवाजा गया। ऑस्ट्रेलिया के 290 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड के लिए बेला जेम्स और अमेलिया केर की सलामी जोड़ी ने पहले विकेट के लिये 43 रन जोड़े। नौवें ओवर में सदरलैंड ने बेला जेम्स (24) को बोल्ड कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद अमेलिया केर ने सूजी बेट्स के साथ मोर्चा संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिय 63 रनों की साझेदारी हुई। 20वें ओवर में सदरलैंड ने सूजी बेट्स (53)को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। अगले ही ओवर में अमेलिया केर (22) रनआउट होकर पवेलियन लौट गई। इसके बाद कप्तान सोफी डिवाइन (25), ब्रुक हैलीडे (27) रन बनाकर आउट हुई। मैडी ग्रीन 35 गेंदों में (39) रन बनाकर नाबाद रही। न्यूजीलैंड के निचले क्रम का कोई भी बल्लेबाज ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे नहीं टिक सका। न्यूजीलैंड की पूरी टीम 43.3 ओवर में 215 के स्कोर पर सिमट गई। ऑस्ट्रेलिया के लिए एनाबेल सदरलैंड और अलाना किंग ने तीन-तीन विकेट लिये। किम गर्थ और डार्सी ब्राउन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। एलिसा हीली और फोबे लिचफील्ड की ऑस्ट्रेलियाई सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरूआत करते हुए पहले विकेट के लिए 88 रन जोड़े। 15वें ओवर में अमेलिया केर ने हीली (39) को आउट कर न्यूजीलैंड को पहली सफलता दिलाई। फोबे लिचफील्ड (50) को रोजमेरी मैयर ने आउट किया। एलीस पेरी (14), बेथ मूनी (दो), एनाबेल सदरलैंड (42)रन बनाकर आउट हुई। एश्ले गार्डनर ने 62 गेंदों में नौ चौके और एक छक्का लगाते हुए (74) रनों की पारी खेली। ताहलिया मैकग्राथ, किम गार्थ (10-10) रन बनाकर आउट हुई। न्यूजीलैंड के गेंदबाजों ने ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम को 49 ओवर में 290 के स्कोर पर समेट दिया। न्यूजीलैंड की ओर से अमेलिया केर ने चार और रोजमैरी मेयर ने तीन विकेट लिये। सोफी डिवाइन ने दो बल्लेबाजों को आउट किया।

संक्षिप्त खबरें

2025 जूनियर विश्व कप निशानेबाजी की मेजबानी करेगा भारत

नई दिल्ली। साल 2025 में भारत जूनियर विश्व कप निशानेबाजी की मेजबानी करेगा। विश्व कप निशानेबाजी में राइफल, पिस्टल और शॉटगन की प्रतियोगितायें। यह हाल के दिनों में का तीसरा शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) का टूनार्मेंट होगा जो भारत में आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रीय महासंघ के अध्यक्ष कलिकेश नारायण सिंह देव ने कहा, पिछले महीने रोम में आईएसएसएफ की कार्यकारी समिति की एक सार्थक बैठक हुई थी और सभी सदस्य महासंघों के अलावा आईएसएसएफ अध्यक्ष लुसियानो रॉसी ने भारत की शीर्ष अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने और खेल को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में सहायता करने के तरीके की प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा, हमें तब इसकी उम्मीद थी पर अब जब मेजबानी मिलने की आधिकारिक पुष्टि हो गई है तो हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित हैं। वहीं भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ (एनआरएआई) के महासचिव सुल्तान सिंह ने कहा, आईएसएसएफ ने अपने पत्र में हमसे दो संभावित समय की पुष्टि करने का अनुरोध किया है जिसमें एक सितंबर-अक्टूबर में और दूसरा अक्टूबर के अंत तथा नवंबर की शुरूआत के दौरान है।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में शुभमन पर बेहतर प्रदर्शन का दबाव रहेगा

मेलबर्न, 23 दिसंबर (वेब वार्ता)। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज शुभमन गिल की नजरें यहां एमसीजी मैदान पर 26 दिसंबर बॉक्सिंग डे पर शुरू हो रही चौथे क्रिकेट टेस्ट मैच में बेहतर प्रदर्शन पर रहेंगी। शुभमन अब तक इस सीरीज में एक बार भी बड़ा स्कोर नहीं बना पाये हैं। एशियाई देशों के बाहर अब तक उनका रिकार्ड अच्छा नहीं रहा है जिससे भी वह बेहतर करना चाहेंगे। साल 2022 के बाद से ही एशिया के बाहर उनका प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। शुभमन ने साल 2021 ब्रिसबेन टेस्ट के बाद से ही 16 पारियों में 17.80 की औसत से 267 रन बनाए हैं। साल 2021 में गिल ने 146 गेंदों में 91 रन की दमदार पारी खेली थी लेकिन उसके बाद से ही उनका बल्ला खामोश है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ जारी टेस्ट सीरीज में शुभमन तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे हैं लेकिन तीन पारियों में वह उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट गिल ने नहीं खेला था। लेकिन दूसरे टेस्ट में वह अंतिम ग्यारह का हिस्सा थे और सिर्फ 59 रन ही बना सके। पहली पारी में 31 और दूसरी पारी में उन्होंने 28 रन ही बनाए। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। सीरीज के शुरूआती तीन मैच खेले जा चुके हैं। पर्थ में खेला गया पहला टेस्ट भारत ने जीता जबकि उसके बाद एडिलेड टेस्ट में उसे हार झेलनी पड़ी तो गाबा टेस्ट ड्रॉ रहा। वहीं भारतीय बल्लेबाज इस सीरीज में अभी तक विफल रहे हैं। शुभमन की खराब फॉर्म भी टीम के लिए चिंता का विषय बन गई है। आने वाले समय को देखते हुए भारतीय क्रिकेट को शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल जैसे युवा खिलाड़ियों से ही उम्मीदें रहेंगी। शुभमन में सभी को टीम का भविष्य नजर आता है।

तानिया सचदेव ने दिल्ली सरकार पर निशाना साधा

नई दिल्ली। भारत की दिग्गज शतरंज खिलाड़ी तानिया सचदेव ने दिल्ली सरकार द्वारा उनकी उपलब्धियों को मान्यता न दिए जाने पर सोशल मीडिया पर अपनी निराशा व्यक्त की है। सोशल मीडिया पोस्ट में, दिल्ली की इस खिलाड़ी ने अपनी उपलब्धियों को उजागर किया और बताया कि कैसे दिल्ली सरकार उनकी उपलब्धियों को पर्याप्त रूप से मान्यता देने में विफल रही है। साथ ही उन्होंने मुख्यमंत्री आतिशी और आम आदमी पार्टी के सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को टैग किया। तानिया ने एक्स पर पोस्ट किया, मैं 2008 से भारत के लिए खेल रही हूं।

पाकिस्तान ने वर्षा बाधित मैच में दक्षिण अफ्रीका को 36 रनों से हराया

309 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरूआत अच्छी नहीं रही और उसने सात ओवर में 44 रन पर अपने नो विकेट गंवा दिए। कप्तान तेम्बा बवूमा (आठ) और टोनी डीजॉर्जी (26)रन बनाकर आउट हुये। रासी वान दर दुसें (35) और एडन मारक्रम (19) रन बनाकर आउट हुये। द. अफ्रीका की ओर से हेनरिच क्लासेन ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए 29 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। क्लासेन 43 गेंद में 12 चौके और दो छक्के लगाते हुए (81) रन बनाए।

प्रात: किरण/ एजेंसी

जोहान्सबर्ग। सैम अयूब (101) की शतकीय, बाबर आजम (52) और कप्तान मोहम्मद रिजवान (53) की अर्धशतकीय पारियों के बाद सुफियां मकिम की शानदार गेंदबाजी की बदौलत पाकिस्तान ने रविवार को वर्षा बाधित तीसरे एकदिवसीय मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका को डकवर्थ लुइस नियम के आधार पर 36 रनों से हरा दिया। इसी जीत के साथ ही पाकिस्तान ने तीन मैचों की श्रृंखला 3-0 से अपना नाम कर ली। 309 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दक्षिण अफ्रीका की शुरूआत अच्छी नहीं रही और उसने सात ओवर में 44 रन पर अपने नो विकेट गंवा दिए। कप्तान तेम्बा बवूमा (आठ) और टोनी डीजॉर्जी (26)रन बनाकर आउट हुये। रासी वान दर दुसें (35) और एडन मारक्रम (19) रन बनाकर आउट हुये। द. अफ्रीका की ओर से हेनरिच क्लासेन ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए 29 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। क्लासेन 43 गेंद में 12चौके और दो छक्के लगाते हुए (81) रन बनाए। पाकिस्तानी गेंदबाजी आक्रमण के आगे द. अफ्रीका के नियमित अंतराल पर विकेट गिरते रहे। मार्को यानसन (26) और कगिसो रबाड़ा (14) रन बनाकर आउट हुये। कोरिन बोश ने (नाबाद 40) रनों की पारी खेली। द. अफ्रीका 42 ओवर में 271 रन बना सका और उसे डकवर्थ लुइस नियम के आधार पर 36 रनों से हार का सामना करना पड़ा। पाकिस्तान के लिए इस मैच में पर्दापण करने वाले सुफियान मुकीम ने सबसे ज्यादा चार विकेट लिये। शाहीन शाह अफरीदी और नसीम शाह को दो-दो विकेट मिले। मोहम्मद हसनैन और सैम अयूब ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इस मैच में जीत दर्ज करते ही पाकिस्तान ने दक्षिण अफ्रीका को उसी के घर में क्लीन स्वीप करने वाली विश्व की पहली टीम बन गई। पाकिस्तान के सैम अयूब को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए ह्यप्लेयर ऑफ द मैच और ह्यप्लयेर ऑफ सीरीजह्व से नवाजा गया।

इससे पहले कल देर रात पाकिस्तान ने पहले बल्लेबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए 309 रनों का लक्ष्य दिया था। दक्षिण अफ्रीका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बारिश के कारण मैच को 47 ओवर का कर दिया गया था। बल्लेबाजी करने उतरी पाकिस्तान की शुरूआत बेहद खराब रही और उसने पहले ही ओवर में अब्दुल्लाह शफीक (शून्य) का विकेट गवां दिया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये बाबर आजम ने सैम अयूब के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिये 114 रनों की साझेदारी हुई। 23वें ओवर में वेना मफाका ने बाबर आजम (52) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद बल्लेबाजी करने कप्तान ने भी सैम का साथ पकड़ लिया। 35वें ओवर में कॉर्बिन बॉश ने सैम अयूब को आउट कर दक्षिण अफ्रीका को तीसरी सफलता दिलाई। अयूब ने 94 गेंदों में 13 चौके और दो छक्कों की मदद से (101) रनों की पारी खेली। मोहम्मद रिजवान ने 52 गेंदों में पांच चौके एक छक्का लगाते हुए (53)रन बनाये। आगा सलमान ने 33 गेंदों में तीन चौके और दो छक्के लगाते हुए (48) रन बनाये। शाहीन शाह अफरीदी (शून्य) को रबाड़ा ने अपना शिकार बनाया। तय्यब ताहिर (28) और मोहम्मद हसनैन (चार) रन बनाकर आउट हुये। इन दोनों को मार्को यानसन ने आउट किया। नसीम शाह पांच रन बनाकर नाबाद रहे। पाकिस्तान ने निर्धारित 47 ओवरों में नौ विकेट पर 308 रनों का स्कोर खड़ा किया।

दक्षिण अफ्रीका की ओर से कगिसो रबाड़ा ने तीन बल्लेबाजों को आउट किया। ब्योर्न फोर्टेन और मार्को यानसन ने दो- दो विकेट लिये। वेना मफाका और कॉर्बिन बॉश ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

21 मैचों में बेंगलुरू बुल्स की 18वीं हार, तमिल थलाइवाज ने 10 अंक से हराया

प्रात: किरण/ एजेंसी

पुणे। तमिल थलाइवाज ने बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बैडमिंटन हॉल में रविवार को खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 127वें मैच में बेंगलुरू बुल्स को 42-32 के अंतर से हरा दिया। दोनों टीमें प्लेआफ की दौड़ में नहीं हैं, यह सम्मान बचाने की जंग थी, जिसमें थलाइवाज ने बाजी मार ली।

थलाइवाज के लिए हिमांशु ने चार अंक की एक रेड के साथ कुल 13 अंक लिए जबकि मोइन शफागी ने 9 अंक जुटाए। डिफेंस मे आमिरहुसैन बस्तामी ने चार अंक के साथ प्रभावित किया। बुल्स के लिए आज सुशील (15) का दिन रहा जबकि डिफेंस में नितिन ने हाई-5 लगाया। बुल्स का डिफेंस बेहतर खेल रहा था। 3 टेकल प्वाइंट्स के दम पर उसने पांच मिनट के खेल में 4-2 की लीड बना ली। थलाइवाज ने हालांकि जल्द ही स्कोर बराबर कर दिया लेकिन सुशील ने सुपर रेड के साथ स्कोर 7-4 कर थलाइवाज के लिए सुपर टैकल आन कर दिया लेकिन थलाइवाज ने शानदार वापसी के जरिए 10 मिनट की समाप्ति तक स्कोर 7-8 कर दिया।

शफागी ने हालांकि ब्रेक के बाद लकी को आउट कर स्कोर बराबर कर दिया। फिर बुल्स के डिफेंस ने शफागी को लपक स्कोर 10-8 किया लेकिन बस्तामी ने डू ओर डाई रेड पर सुशील का शिकार कर फासला फिर 1 का कर दिया। इसके बाद बुल्स फिर से थलाइवाज को सुपर टैकल सिचुएशन में लाए और अजिंक्य को लपक डिफेंस ने स्कोर 12-12 कर दिया। हाफटाइम से ठीक पहले थलाइवाज ने 14-12 की लीड ले ली लेकिन नितिन ने शफागी को आउट कर स्कोर 14-13 कर दिया। हाफटाइम के बाद थलाइवाज ने लीड 2 की कर ली लेकिन परदीप ने मल्टीप्वाइंटर के साथ फिर स्कोर 15-15 कर दिया। इसके बाद थलाइवाज ने लगातार चार अंक लेकर बुल्स के लिए सुपर टैकल आन कर दिया। शफागी ने डू ओर डाई रेड पर नितिन को आउट किया लेकिन इसी तरह की रेड पर सुशील ने रिवाइवल ले लिया। अगली रेड पर नवीन ने शफागी को सुपर टैकल कर स्कोर 18-20 कर दिया। शफागी की गैरमौजूदगी में हिमांशु ने डू ओर डाई रेड पर अंक लिया। इस बीच रिवाइव होकर आए शफागी ने सुशील को बाहर कर बुल्स को आलआउट की कगार पर ला दिया।

ब्रेक के बाद बस्तामी ने अजिंक्य को लपक बुल्स को आलआउट कर 26-20 की लीड ले ली। आलइन के बाद हिमांशु ने चार अंक की सुपर डुपर रेड के साथ एक पल में बुल्स के लिए सुपर टैकल आन कर दिया। अब थलाइवाज 10 अंक से आगे थे।

बॉक्सिंग डे टेस्ट की पिच बुमराह समेत तेज गेंदबाजों के लिए मददगार होगी : क्यूरेटर

प्रात: किरण/ एजेंसी

मेलबर्न। मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) के क्यूरेटर मैट पेज ने कहा कि गुरुवार से शुरू हो रहे बॉक्सिंग डे टेस्ट के लिए ड्रॉप-इन पिच भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह समेत सभी तेज गेंदबाजों के लिए मददगार होगी। बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी सीरीज में बुमराह सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। सीरीज फिलहाल 1-1 से बराबर है और उन्होंने 10.9 की औसत से 21 विकेट लिए हैं। मुझे लगता है कि अब जब भी तेज गेंदबाज यहां आते हैं तो वे उत्साहित हो जाते हैं। यह हमारे लिए अच्छा है। पेज ने सोमवार को संवाददाताओं से कहा, हम कभी भी पर्थ या ब्रिस्बेन जितने तेज नहीं होंगे, लेकिन पिछले कुछ सालों में हम इसमें कुछ गति लाने में कामयाब रहे हैं, जिससे यह उत्साह पैदा हुआ है। इस पर थोड़ी घास है। अगर आप तेज गेंदबाज हैं और आप इसे देखते हैं, तो आप शायद उत्साहित हो जाते हैं। उन्होंने शनिवार और रविवार को नेट अभ्यास के दौरान भारत को दी गई पिचों की प्रकृति का भी बचाव किया, खासकर इस बात पर कि मेहमान टीम कम उछाल वाली सतहों से खुश नहीं थी। हमारे लिए, तीन दिन पहले, हम यहां टेस्ट मैच की पिचें तैयार करते हैं। अगर टीमें उससे पहले आकर ट्रेनिंग करती हैं, तो उन्हें वही पिचें मिलेंगी जो हमें मिली हैं। आज, हम नई पिचों पर हैं। अगर भारत ने आज सुबह ट्रेनिंग की होती, तो वे उन नई पिचों पर होते। यह हमारे लिए तीन दिन पहले की सामान्य प्रक्रिया है। मैच के पहले दिन के सभी टिकट बिक जाने के कारण, मेलबर्न में तापमान भी 40 डिग्री तक पहुंचने की उम्मीद है। पेज ने कहा कि भीषण गर्मी से इस महत्वपूर्ण मुकाबले के लिए पिच की तैयारी पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि सतह पर छह मिलीमीटर घास छोड़ी जाएगी। इसका मतलब शायद यह है कि अगर तापमान 20 (डिग्री) होता तो यह थोड़ा और तेजी से बढ़ सकता था। हम इसमें थोड़ी और नमी छोड़ते हैं या नहीं, मैं इस समय हां या नहीं कह सकता। हम मौसम पर नजर रखते रहेंगे ह्व और उसी के अनुसार अपनी तैयारी को समायोजित करेंगे। हम पिछले कुछ सालों से बहुत खुश हैं, इसलिए यह हमारे लिए एक बार फिर से शुरू करने जैसा काम है।पेज ने मेलबर्न की पिच की बदलती प्रकृति पर विचार करते हुए अपनी बात समाप्त की, जो पहले ड्रॉ की पेशकश करती थी। सात साल पहले, हम काफी सपाट थे। हमने एक संगठन के रूप में बैठकर कहा कि हम और अधिक रोमांचक प्रतियोगिताएं और अधिक रोमांचक टेस्ट मैच बनाना चाहते हैं, इसलिए हम अब इस पर अधिक घास छोड़ते हैं।

16वीं जीत के साथ सेमीफाइनल में पहुंचे हरियाणा स्टीलर्स

प्रात: किरण/ एजेंसी

पुणे। हरियाणा स्टीलर्स बालेवाड़ी स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के बैडमिंटन हॉल में रविवार को खेले गए प्रो कबड्डी लीग के 11वें सीजन के 128वें मैच में यू मुंबा को 47-30 से हराकर सेमीफाइनल मे पहुंच गई है। दूसरी ओर, प्लेआफ में सीधे प्रवेश के लिए मुंबा को इस मैच से एक अंक लेना था लेकिन इसके लिए उसे अब अगले मैच तक इंतजार करना होगा।

पहले स्थान पर रहते हुए पहला सेमीफाइनल खेलने का हक हासिल करने वाली हरियाणा की जीत में शिवम पटारे (14) के अलावा डिफेंस में राहुल सेतपाल (5) और मोहम्मदरेजा शादलू (5) की अहम भूमिका रही। मुंबा के लिए सतीश ने रेड में नौ जबकि सुनील ने डिफेंस में चार अंक लिए। हरियाणा ने डिफेंस में 8 के मुकाबले 17 अंक की मदद से तीन आलआउट ले अपना वर्चस्व साबित किया। इस अहम मुकाबले में हरियाणा ने तीन मिनट के खेल में 4-2 की लीड बना ली थी और पांचवें मिनट में मुंबा के लिए सुपर टैकल आन कर दिया। शिवम की रेड पर परवेश सेल्फ आउट हुए लेकिन सुनील और लोकेश ने शादलू को सुपर टैकल कर स्कोर 5-6 कर दिया। इसके बाद हालांकि शिवम सुपर टैकल सिचुएशन में दो अंक लेकर लौटे। फिर संजय ने रोहित को लपक मुंबा को आलआउट कर 11-7 की लीड ले ली। 10 मिनट के बाद हरियाणा 12-9 से आगे थे। इसके बाद पांच मिनट के खेल में हरियाणा ने दो के मुकाबले तीन अंक लेकर अपनी लीड बरकरार रखी। फिर हरियाणा ने शिवम को मल्टीप्वाइंटर के साथ लगातार चार अंक लेकर मुंबा को आलआउट की ओर धकेल दिया।

शादलू ने सुनील का शिकार किया और अंतिम खिलाड़ी के तौर पर मंजीत भी आउट हुए। हरियाणा ने अब 23-13 की लीड ले ली। बहरहाल, हरियाणा ने 26-14 की लीड के साथ पाला बदला। हाफटाइम के बाद चार मिनट के खेल में दोनों टीमों को 2-2 अंक मिले। इस कारण हरियाणा की 12 अंक की लीड बरकरार थी। इस बीच सौरव को लपक राहुल ने हाई-5 पूरा किया। जल्द ही हरियाणा ने 13 अंक की लीड ले ली। फिर विनय ने डू ओर डाई रेड पर चार के डिफेंस में अंक लेकर मुंबा को सुपर टैकल सिचुएशन में ला दिया लेकिन सतीश ने मल्टीप्वाइंटर से रिवाइवल दिला दिया। इस बीच विनय ने सुनील को आउट कर मुंबा को आलआउट की ओर धकेल दिया। विनय ने अगली रेड पर परवेश और सतीश का शिकार कर मुंबा को आलआउट कर दिया। अब हरियाणा 37-21 से आगे थे। इसी बीच शिवम ने मल्टीप्वाइंटर के साथ सुपर-10 पूरा किया। सतीश अच्छा कर रहे थे। उन्होंने पहली बार सेतपाल को बाहर किया। पांच मिनट बचे थे और स्कोर 25-40 था। फिर शिवम ने मल्टीप्वाइंटर के साथ हरियाणा की जीत तय कर दी। इसके बाद भी मुंबा का वापसी का प्रयास जारी रहा लेकिन हरियाणा ने उसे कोई मौका नहीं दिया और एक शानदार जीत के साथ 27 दिसंबर को होने वाले पहले सेमीफाइनल का टिकट कटा लिया।

जीत भारत के 314 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरूआत बेहद खराब रही और उसने मात्र 11 के स्कोर अपने चार विकेट गवां दिये।

भारतीय महिला टीम ने वेस्टइंडीज को रिकार्ड 211 रनों से हराया

प्रात: किरण/ एजेंसी

वडोदरा। स्मृति मंधाना (91), हरलीन देओल (44) और प्रतिका रावल (40) की शानदार बल्लेबाजी के बाद रेणुका सिंह (पांच विकेट) की बेहतरीन गेंदबाजी की बदौलत भारतीय महिला टीम ने रविवार को पहले एकदिवसीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को रिकार्ड 211 रनों से हरा दिया। इसी के साथ भारतीय टीम ने सीरीज में 1-0से बढ़त बना ली हैं।

भारत के 314 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज की शुरूआत बेहद खराब रही और उसने मात्र 11 के स्कोर अपने चार विकेट गवां दिये। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे वेस्टइंडीज की कप्तान हेली मैथ्यूज और किआना जोसेफ बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गई। डिएंड्रा डॉटिन (आठ) और रशादा विलियम्स (तीन) रन बनाकर आउट हुई। इसके बाद शमैन कैंपबेल और आलिया ऑलेन ने पारी संभालने का प्रयास किया। 11वें ओवर में रेणुका ने आलिया ऑलेन (13) को आउट कर साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद रेणुका ने शबीका गजनबी (तीन) बोल्ड कर अपना चौथा और भारत के लिए छठा विकेट झटका। जायडा जेम्स (नौ), करिश्मा रामहैरक (11), शमिला कॉनेल (आठ) और शमैन कैंपबेल (21) रन बनाकर आउट हुई। ऐफी फ्लेचर ने टीम के लिए सर्वाधिक (नाबाद 24) रनों की पारी खेली। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण ने वेस्टइंडीज की पूरी टीम को26.2 ओवर में 103 रन पर ढ़ेर कर मुकाबला रिकार्ड 211 रनों से जीत लिया। भारत की ओर रेणुका सिंह ने पांच विकेट लिये। प्रिया मिश्रा को दो विकेट मिले।

तितास साधु और दीप्ति शर्मा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज वेस्टइंडीज ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी स्मृति मंधाना और प्रतिका रावल की भारतीय सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरूआत करते हुए पहले विकेट के लिए 110रनों की साझेदारी की। 24वें ओवर में हेली मैथ्यूज ने प्रतिका रावल (40) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। 32वें ओवर में जायडा जेम्स ने स्मृति मंधाना को आउट कर भारतीय टीम को दूसरा झटका दिया। स्मृति मंधाना अपने शतक के करीब थी। उन्होंने 102 गेंदों में 13 चौके लगाते हुए (91) रनों की पारी खेली। हरलीन देओल ने 50 गेंदों में दो चौके और एक छक्का लगाते हुए (44) रन बनाये।

कप्तान हरमनप्रीत कौर ने 23 गेंदों में तीन चौके और एक छक्के की मदद से (34) रन बनाये। ऋचा घोष 13 गेंदों में (26), जेमिमाह रॉड्रिग्स 19 गेंदों में (31) रन बनाकर आउट हुई। आखिरी ओवरों में जायडा जेम्स ने चार विकेट झटकर भारतीय टीम को बड़ा स्कोर बनाने से रोक दिया। दीप्ति शर्मा 12 गेंदों में (14) रन बनाकर नाबाद रही। भारतीय टीम ने निर्धारित 50 ओवरों में नौ विकेट पर 314 रनों का स्कोर खड़ा किया। वेस्टइंडीज की ओर जायडा जेम्स ने आठ ओवरों में 24 रन देकर पांच विकेट झटके। हेली मैथ्यूज को दो विकेट मिले। डिएंड्रा डॉटिन ने एक बल्लेबाज को आउट किया।

संक्षिप्त खबरें

लाहौर में हाउसिंग कॉलोनी के सशस्त्र गार्ड ने पालतू शेर को मार डाला

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की राजधानी लाहौर में एक प्राइवेट हाउसिंग सोसाइटी के सशस्त्र सुरक्षा गार्ड ने एक शेर को मार डाला। पुलिस और वन्यजीव अधिकारी इस बात की जांच कर रहे हैं कि यह पालतू शेर सड़क पर कैसे पहुंचा। डॉन समाचार पत्र की खबर के अनुसार, पुलिस ने बताया कि शालीमार हाउसिंग सोसाइटी हरबंसपुरा के निवासी अली इमरान ने इस शेर को पाला था। वह शनिवार को अचानक घर से निकलकर सड़क पर पहुंच गया। उसने दहाड़ लगाई तो लोग डरकर इधर-उधर भागने लगे। ग्रीनबेल्ट पर खेल रहे बच्चे भी चिल्लाने लगे। यह देखकर सोसाइटी के एक सशस्त्र सुरक्षा गार्ड ने दहाड़ते हुए शेर पर गोलियां दाग दीं। पालतू शेर मौके पर ढेर हो गया। उल्लेखनीय है कि लाहौर, कराची के बाद पाकिस्तान में दूसरा सबसे बडा आबादी वाला शहर है। इसे पाकिस्तान का दिल भी कहा जाता है।

अमेरिका : लिफ्ट में दरार आने के बाद 174 पर्यटकों को सुरक्षित नीचे उतारा गया

विंटर पार्क (कोलोराडो)। अमेरिकी राज्य कोलोराडो में स्की लिफ्टमें दरार आने के कारण उसमें फंसे 174 लोगों को बचाया गया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि इस बात का पता लगाया जा रहा है कि स्की लिफ्ट में दरार कैसे आई। यह घटना बर्फबारी का आनंद उठाने के लिए स्कीइंग के वास्ते जाने के दौरान हुई। डेनवर से लगभग 113 किलोमीटर पश्चिम में स्थित विंटर पार्क रिजॉर्ट की प्रवक्ता जेन मिलर ने बताया रिजॉर्ट में लिफ्ट शनिवार को दोपहर के बाद अपने आप बंद हो गई। लिफ्ट के एक हिस्से में दरार का पता चला था। उन्होंने बताया कि लिफ्ट में सवार लोगों को लगभग पांच घंटे की मशक्कत के बाद रस्सियों के सहारे नीचे उतारा गया। उन्होंने बताया कि इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। मिलर ने बताया कि रविवार को लिफ्ट के जिस हिस्से में दरार आई थी उसे कर्मचारी बदल रहे हैं।

यूक्रेन संघर्ष को निपटाने के लिए हंगरी ने हरसंभव प्रयास किया: सिज्जार्तो

संयुक्त राष्ट्र। हंगरी के विदेश मंत्री पीटर सिज्जार्तो ने कहा है कि हंगरी ने यूक्रेन संघर्ष को सुलझाने के लिए अपनी शक्ति और इससे भी अधिक से सब कुछ किया है। श्री सिज्जार्तो ने कहा आरआईए नोवोस्ती को, हंगेरियन के रूप में, हम पिछले महीनों से एक शांति मिशन पर हैं। हमने वह किया है जो हम कर सकते थे, हम [अमेरिका] के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति [डोनाल्ड ट्रम्प] से मिले हैं। हमारी रूसी राष्ट्रपति और सरकारी अधिकारियों के साथ फोन पर बातचीत हुई है। उन्होंने कहा, यूक्रेनियन, तुर्की, वेटिकन के साथ, इसलिए हमने वास्तव में वह सब कुछ किया है जो हमारी क्षमता में था, या उससे भी अधिक, उससे भी अधिक।

बंगलादेश अवामी लीग के 167 नेताओं और कार्यकर्ताओं ने जेसोर कोर्ट में किया आत्मसमर्पण

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व सत्तारूढ़ पार्टी अवामी लीग के कुल 167 नेताओं और कार्यकर्ताओं ने हथियारों और विस्फोटकों से जुड़े चार मामलों में जेसोर अदालत में आत्मसमर्पण कर दिया है। मीडिया रिपोर्टों में सोमवार को यह जानकारी दी गयी। न्यायाधीश ने 42 व्यक्तियों को जमानत दे दी, जबकि शेष को जेल भेज दिया गया। ढाका ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, आत्मसमर्पण रविवार को पलाश कुमार और गोलाम किब्रिया की न्यायिक मजिस्ट्रेट अदालत में हुआ। जेसोर में अदालत निरीक्षक रुखसाना खातून ने कहा कि अभयनगर थाने के तहत दो मामलों में 105 व्यक्तियों ने न्यायिक मजिस्ट्रेट पलाश कुमार की अदालत के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इसके अतिरिक्त, केशवपुर थाने के तहत एक मामले में शामिल 42 लोगों ने भी आत्मसमर्पण किया।

जापान के हवाई अड्डे ने ड्रोन अलर्ट के कारण अपना रनवे बंद किया

टोक्यो। जापान के यामागुची प्रान्त में इवाकुनी हवाई अड्डे ने रविवार को अपने हवाई क्षेत्र में कई ड्रोन के संभावित प्रवेश की सूचना के कारण अपना रनवे अस्थायी रूप से बंद कर दिया। इस हवाई अड्डे का उपयोग नागरिक और अमेरिकी सैन्य विमान करते हैं। एनएचके प्रसारक ने यह जानकारी दी। चैनल ने बताया कि स्थानीय समयानुसार कल शाम लगभग सात बजे जापानी परिवहन मंत्रालय को सूचना मिली कि इवाकुनी हवाई अड्डे के हवाई क्षेत्र में कई ड्रोन प्रवेश कर गए हैं। लगभग एक घंटे बाद विमान संचालन फिर से शुरू हुआ।

अमेरिकी एफ/ए-18 लड़ाकू विमान को हमने मार गिराया : हूती ग्रुप

प्रात : किरण/एजेंसी

अदन। यमन के हूती ग्रुप ने एक अमेरिकी एयरक्राफ्ट कैरियर पर आठ क्रूज मिसाइलों और 17 ड्रोनों से हमला करने और एक अमेरिकी लड़ाकू विमान को मार गिराने का दावा किया। हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सरिया ने अल-मसीरा टीवी पर एक बयान में कहा कि ग्रुप ने एयरक्राफ्ट कैरियर यूएसएस हैरी एस. ट्रूमैन और उसके एस्कॉर्ट्स पर सफलतापूर्वक हमला किया, जिससे यमन पर अमेरिका-ब्रिटिश संयुक्त हमले को नाकाम कर दिया गया। बता दें अल-मसीरा टीवी को हूती ग्रुप संचालित करता है। सरिया ने कहा, हमारे बलों ने ऑपरेशन के दौरान एक अमेरिकी एफ/ए-18 लड़ाकू विमान को मार गिराया, क्योंकि उसने हमारी मिसाइलों और ड्रोन को रोकने की कोशिश की थी।

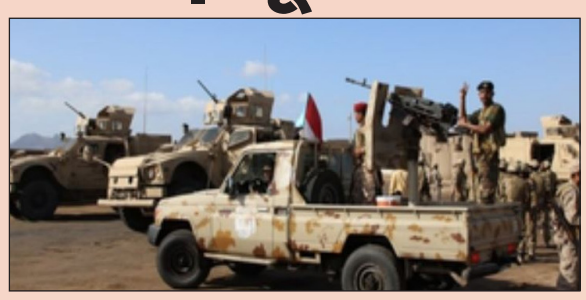

सिन्हुआ समाचार एजेंसी के मुताबिक इससे पहले रविवार को, यूएस सेंट्रल कमांड (सीईएनटीसीओएम) ने एक बयान में कहा कि दो अमेरिकी नौसेना पायलट सुरक्षित रूप से बच गए, जब उनका लड़ाकू जेट लाल सागर के ऊपर गलती से हुई गोलीबारी का निशाना बना। सीईएनटीसीओएम ने कहा, गाइडेड-मिसाइल क्रूजर यूएसएस गेटीसबर्ग, जो यूएसएस हैरी एस. ट्रूमैन कैरियर स्ट्राइक ग्रुप का हिस्सा है, ने गलती से एफ/ए-18 पर गोली चला दी और उसे टक्कर मार दी। सीईएनटीसीओएम के एक अलग बयान के मुताबिक, यह घटना उसी दिन हुई जब अमेरिकी सेना ने सना के भीतर एक मिसाइल भंडारण सुविधा और एक कमांड-एंड-कंट्रोल सुविधा पर हवाई हमले किए। इन साइट्स को कथित तौर पर हूती ग्रुप ऑपरेट कर रहा था। इसके साथ ही लाल सागर के ऊपर कई हूती ड्रोन और एक एंटी शिप क्रूज मिसाइल को मार गिराया। इससे पहले स्थानीय मीडिया ने बताया कि अमेरिकी-ब्रिटिश नौसेना गठबंधन ने यमन के लाल सागर बंदरगाह शहर होदेइदाह में हूती साइट पर एक नया हवाई हमला किया। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, हमले ने होदेइदाह के अल-लुहय्याह क्षेत्र में स्थित साइट को निशाना बनाया। इससे अधिक कोई और विवरण या किसी हताहत की सूचना नहीं दी गई। हूती ग्रुप का यमन के उत्तरी इलाकों के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण कायम है। इसमें सना और रणनीतिक रूप से अहम लाल सागर बंदरगाह होदेइदाह शामिल हैं। नवंबर 2023 से, हूती ग्रुप इजरायली शहरों के खिलाफ रॉकेट और ड्रोन हमले कर रहा है और लाल सागर में इजरायल से जुड़े जहाज को निशाना रहा है। इसका कहना है कि वह यह ऑपरेशन इजरायली हमलों का सामना कर रहे गाजावासियों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए कर रहा है। जवाब में, क्षेत्र में तैनात अमेरिकी नेतृत्व वाली नौसेना गठबंधन सशस्त्र समूह को रोकने के प्रयास में जनवरी से ही हूती ठिकानों पर नियमित हवाई हमले कर कर रहा है।

हूती ग्रुप का अंजाम दूसरे आतंकी समूहों जैसा होगा : पीएम नेतन्याहू

इजरायली पीएम ने इस बात पर जोर दिया कि इजरायल अकेले कार्रवाई नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य राष्ट्र इजरायल के साथ यह विचार साझा करते हैं कि हूती न केवल अंतरराष्ट्रीय शिपिंग के लिए बल्कि वैश्विक व्यवस्था के लिए भी खतरा पैदा कर रहे हैं।

प्रात : किरण/एजेंसी

यरूशलम। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा कि इजरायल यमन में हूती ग्रुप के खिलाफ बलपूर्वक कार्रवाई करेगा। उन्होंने कहा कि हूती ग्रुप का अंजाम दूसरे आतंकी समहूों की तरह होगा। उनका यह बयान हूती ग्रुप की ओर से तेल अवीव क्षेत्र में मिसाइल दागे जाने के एक दिन बाद आया।

नेतन्याहू ने एक वीडियो बयान में कहा, जिस तरह हमने ईरान के (अन्य) सहयोगियों के खिलाफ बलपूर्वक कार्रवाई की, उसी तरह हम हूती ग्रुप के खिलाफ भी कार्रवाई करेंगे। इजरायली पीएम ने इस बात पर जोर दिया कि इजरायल अकेले कार्रवाई नहीं कर रहा है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य राष्ट्र इजरायल के साथ यह विचार साझा करते हैं कि हूती न केवल अंतरराष्ट्रीय शिपिंग के लिए बल्कि वैश्विक व्यवस्था के लिए भी खतरा पैदा कर रहे हैं। नेतन्याहू ने कहा, इसलिए हम ताकत, दृढ़ संकल्प और चतुराई के साथ काम करेंगे। भले ही इसमें समय लगे, लेकिन परिणाम अन्य आतंकवादी समूहों की तरह ही होंगे। ईरान समर्थित हूती ग्रुप ने शनिवार को दक्षिण तेल अवीव के एक खेल के मैदान में बैलिस्टिक मिसाइल दागी थी।, जिसमें 16 लोग घायल हो गए।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के मुताबिक मिसाइल को रोकने की कोशिश नाकाम होने के बाद व्यापक क्षति हुई। इजरायल की मैगन डेविड एडोम रेस्क्यू सर्विस के नवीनतम अपडेट के अनुसार, शुक्रवार और शनिवार की रात को तेल अवीव में एक हूती मिसाइल ने खेल के मैदान और एक इमारत को निशाना बनाया, जिसकी वजह से लोग घायल हुए और इमारत को नुकसान पहुंचा।

हूती हमला गुरुवार को इजरायली हवाई हमलों की एक श्रृंखला के बाद हुआ। इसमें यमन की राजधानी सना के साथ-साथ होदेइदाह, अस-सलिफ और रास इस्सा के बंदरगाहों को निशाना बनाया गया। इजरायली सेना ने कहा कि ये हमले हूती बुनियादी ढांचे को निशाना बनाकर किए गए थे, जिसमें कम से कम नौ लोग मारे गए। हाल के समय में यह दूसरी बार है जब हूती मिसाइल की वजह से आधी रात को देश में सायरन बजा। इससे पहले गुरुवार को दागा गया एक बम इजरायली हवाई क्षेत्र के बाहर आंशिक रूप से बाधित हो गया था और रमत गन शहर में एक खाली स्कूल की इमारत में जा गिरा, जिससे भारी क्षति हुई, लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ।

ट्रंप ने पनामा नहर वापस लेने की धमकी दी, पनामा के राष्ट्रपति ने जताई आपत्ति

प्रात : किरण/एजेंसी

फीनिक्स। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने रविवार को कहा कि उनका प्रशासन पनामा नहर पर नियंत्रण हासिल करने का प्रयास कर सकता है जिसे मेरिका ने मूर्खतापूर्ण तरीके से अपने मध्य अमेरिकी सहयोगी को सौंप दिया था। ट्रंप ने अपनी इस बात के पीछे तर्क दिया कि अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाली इस अहम नहर से गुजरने के लिए जहाजों से बेवजह शुल्क वसूला जाता है। वहीं पनामा के राष्ट्रपति जोस राउल मुलिनो ने इस धारणा को अपने देश की संप्रभुता का अपमान बताते हुए इसे सिरे से खारिज कर दिया। रिपब्लिकन पार्टी के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति ट्रंप ने यह टिप्पणी पांच नवंबर को चुनाव जीतने के बाद अपनी पहली बड़ी रैली में की। एरिजोना में टर्निंग प्वाइंट यूएसए अमेरिकाफेस्ट में समर्थकों को संबोधित करते हुए ट्रंप ने कहा कि उनका प्रशासन अर्थव्यवस्था का तेजी से विकास करेगा, अमेरिकी सीमाओं को सील करेगा और पश्चिम एशिया एवं यूक्रेन में युद्धों को तत्काल बंद कराएगा। ट्रंप ने कहा, मैं गर्व से यह कह सकता हूं कि अमेरिका का स्वर्णिम युग हमारे सामने है। हमारे अंदर अब एक ऐसी भावना है जो कुछ समय पहले तक नहीं थी। ट्रंप ने अपने संबोधन में कहा, हम सभी को एक साथ लाने की कोशिश करना चाहते हैं। हम कोशिश करने जा रहे हैं। हम वास्तव में इसे एक मौका देने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि डेमोक्रेटिक पार्टी के नेताओं ने अपना आत्मविश्वास खो दिया है और चुनाव के बाद भ्रमित हैं लेकिन वे अंततः हमारे पक्ष में आएंगे क्योंकि हम चाहते हैं कि वे हमारे साथ आए। ट्रंप ने इस दौरान अनेक नए एवं पुराने मुद्दों पर अपनी राय रखी। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, हमें पनामा नहर से वंचित किया जा रहा है। साथ ही उन्होंने कहा कि अमेरिका ने मूर्खतापूर्ण तरीके से इसे अपने मध्य अमेरिकी सहयोगी को सौंप दिया था। अमेरिका ने 1900 के दशक की शुरूआत में इस नहर का निर्माण किया था और उसका मकसद अपने तटों के बीच वाणिज्यिक और सैन्य जहाजों के आवागमन को सुविधाजनक बनाना था। वाशिंगटन ने 1977 में राष्ट्रपति जिमी कार्टर द्वारा हस्ताक्षरित एक संधि के तहत 31 दिसंबर 1999 को जलमार्ग का नियंत्रण पनामा को सौंप दिया था। यह नहर जलाशयों पर निर्भर है और 2023 में पड़े सूखे से यह काफी प्रभावित हुई थी, जिसके कारण देश को इससे गुजरने वाले जहाजों की संख्या को सीमित करना पड़ा था। इसके अलावा नौकाओं से लिया जाने वाला शुल्क भी बढ़ा दिया गया था। इस वर्ष के बाद के महीनों में मौसम सामान्य होने के साथ नहर पर पारगमन सामान्य हो गया है लेकिन शुल्क में वृद्धि अगले वर्ष भी कायम रहने की उम्मीद है। पनामा अमेरिका का एक अहम सहयोगी है और नहर इसकी अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। पनामा के राष्ट्रपति ने समय-समय पर अनेक मुद्दों पर ट्रंप का साथ दिया है। ट्रंप ने अपने संबोधन में कहा कि जब उनका दूसरा कार्यकाल शुरू होगा और उस दौरान यदि कुछ सिद्धांतों का पालन नहीं किया गया तो वह पनामा नहर को अमेरिका को पूर्ण रूप से, शीघ्रता से और बिना किसी प्रश्न के वापस करने की मांग करेंगे।

नेपाल-चीन के बीच प्रस्तावित रेलमार्ग पर हलचल तेज

प्रात : किरण/एजेंसी

काठमांडू। नेपाल और चीन के बीच बेल्ट एंड रोड इनिसिएटिव कार्यान्वयन समझौते पर हालिया हस्ताक्षर के बाद दोनों देशों के मध्य रेलमार्ग निर्माण पर हलचल तेज हो गई है। इस समझौते में चीन की सीमा करूंग से काठमांडू को जोड़ने के लिए रेलमार्ग निर्माण की परियोजना को शामिल किया गया है। दोनों देशों के विभिन्न मंत्रालयों से जुड़े उच्चस्तरीय कर्मचारियों की मौजूदगी में हुई चर्चा में रेलवे परियोजना की प्री-फिजिबिलिटी स्टडी के दौरान आने वाली समस्याओं और समाधानों की तलाश की गई। नेपाल परिवहन मंत्रालय के सचिव केशव कुमार शर्मा के नेतृत्व में टीम चीन के शंघाई पहुंची है। शर्मा के साथ इस टीम में परिवहन विभाग के संयुक्त सचिव भीमार्जुन अधिकारी, वन एवं पर्यावरण मंत्रालय, कानून मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के संयुक्त सचिव शामिल हैं। शंघाई में शुक्रवार से शुरू हुई बैठक रविवार तक चली।

चीन की टीम ने बताया कि काठमांडू-केरुंग रेलवे का निर्माण चुनौतीपूर्ण है। इस बैठक में काठमांडू करूंग रेलमार्ग के प्री फिजीबिलिटी अध्ययन में शामिल चीनी राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी चाइना रेलवे फर्स्ट सर्वे एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट के तकनीशियनों ने भी बैठक में हिस्सा लिया। बैठक में सहभागी परिवहन मंत्रालय के संयुक्त सचिव भीमार्जुन अधिकारी ने कहा कि इस पूरे रेलमार्ग पर 98 प्रतिशत हिस्सा पहाड़ी होने के कारण निर्माण लागत काफी महंगी होने वाली है। बैठक में चीनी पक्ष ने बताया कि भौगोलिक परिस्थितियों के कारण करीब 95 फीसदी मार्ग में सिर्फ सुरंगों और पुलों का ही निर्माण होगा। अध्ययन के हिस्से के रूप में वर्तमान में काठमांडू, नुवाकोट और रसुवा में मिट्टी का परीक्षण किया जा रहा है। रेलवे लाइन के संभावित स्थान पर ड्रिलिंग कर भूमिगत मिट्टी निकालने का अध्ययन किया जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि व्यवहार्यता अध्ययन पूरा होने के बाद सभी विषय आ जाएंगे। ड्रिल करने में अभी और समय लगेगा। नेपाल ने चीनी अधिकारियों को सूचित कर दिया है कि अध्ययन के लिए आवश्यक प्रशासनिक सहायता प्रदान की जाएगी। नेपाल की टीम ने रेलवे का अध्ययन कर रहे फर्स्ट सर्वे एंड डिजाइन इंस्टीट्यूट की तकनीकी टीम से अलग से बातचीत की। बताया गया कि अध्ययन दल में शामिल तकनीशियन ने अध्ययन के दौरान आने वाली छोटी-मोटी समस्याओं का मामला उठाया और इसके समाधान के लिए समन्वय स्थापित करने को तैयार हैं।

लिम्पोपो सड़क दुर्घटना में सात लोगों की मौत

प्रात : किरण, एजेंसी

जोहान्सबर्ग। दक्षिण अफ्रीका के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिम्पोपो प्रांत में एक सड़क दुर्घटना में सात लोगों की मौत हो गई और पांच घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। लिम्पोपो प्रांतीय विधानमंडल में परिवहन और सामुदायिक सुरक्षा के कार्यकारी परिषद के सदस्य वायलेट मैथे ने बताया कि यह दुर्घटना रविवार को हुई, जब लिम्पोपो प्रांत के एक गांव गा फाशा के पास एन1 राजमार्ग पर यात्रियों को ले जा रही एक मिनी बस सहित सात कारें आपस में टकरा गईं, जिसके कारण यह त्रासदी हुई। मथे ने बताया कि घायलों को तुरंत अस्पताल ले जाया गया। मैथे ने कहा, हम अपने वाहन चालकों और पैदल चलने वालों से आग्रह करते हैं कि वे त्योहारों के मौसम में वाहन चलाते या सड़कों पर चलते समय अधिक सतर्क रहें। सड़क सुरक्षा हम सभी की जिम्मेदारी है। मथे ने शोक संतप्त परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की और कहा कि दुर्घटना के कारणों की जांच जारी है। इस बीच एक अलग घटना में दक्षिण अफ्रीका के पूर्वी केप प्रांत में आमने-सामने की टक्कर में 12 लोग मारे गए तथा अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने रविवार को पुष्टि की कि दुर्घटना शनिवार को स्थानीय समयानुसार लगभग 8 बजे प्रांत में मभाशे स्थानीय नगर पालिका के एक शहर ड्यूटीवा के पास एन2 रोड पर हुई। प्रांतीय परिवहन विभाग के प्रवक्ता उनाथी बिन्कोसे के अनुसार, दुर्घटना में एक मिनी बस टैक्सी शामिल थी, जिसमें 10 यात्री सवार थे, तथा एक बक्की (दक्षिण अफ्रीकी अंग्रेजी शब्द जिसका अर्थ पिकअप ट्रक होता है) जिसमें चार यात्री सवार थे।

कोलकाता में जन्मे बांग्लादेश के पूर्व अटॉर्नी जनरल आरिफ ढाका में सुपुर्द-ए-खाक

प्रात : किरण, एजेंसी

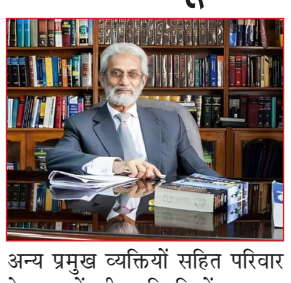

ढाका। बांग्लादेश के पूर्व अटॉर्नी जनरल और अंतरिम सरकार के नागरिक उड्डयन और पर्यटन सलाहकार एएफ हसन आरिफ को आज सुबह 10:30 मीरपुर शहीद बुद्धिजीवियों के कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया। उनका गत दिवस इंतकाल हो गया था। उनके सम्मान में आज बांग्लादेश में एक दिन का राजकीय शोक घोषित किया गया है। ढाका ट्रिब्यून समाचार पत्र के अनुसार, दिवंगत हसन आरिफ को उनके बेटे मुआज आरिफ और अन्य प्रमुख व्यक्तियों सहित परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में दफनाया गया। आरिफ ने 83 वर्ष की आयु में 20 दिसंबर को राजधानी ढाका के लैबैड अस्पताल में अंतिम सांस ली थी। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील एएफ हसन आरिफ का जन्म 1941 में कोलकाता में हुआ था। उन्होंने अपनी माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा कोलकाता के सेंट जेवियर्स कॉलेज से पूरी की। इसके बाद उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री और एलएलबी की उपाधि प्राप्त की। 1967 में कलकत्ता हाई कोर्ट में एक वकील के रूप में नामांकन कराने के बाद वह पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) चले गए। उन्होंने 1970 में ढाका हाई कोर्ट में प्रैक्टिस शुरू की। हसन आरिफ सैन्य तानाशाह एचएम इरशाद के शासन के समय अप्रैल 1982 से अगस्त 1985 तक सहायक अटॉर्नी जनरल के रूप में और अगस्त 1985 से मार्च 1996 तक डिप्टी अटॉर्नी जनरल के रूप में कार्य किया। बाद में उन्होंने अक्टूबर से बीएनपी-जमात-ए-इस्लामी गठबंधन सरकार के दौरान अटॉर्नी जनरल के रूप में कार्य किया। जनवरी 2008 से जनवरी 2009 तक उन्होंने फखरुद्दीन अहमद के नेतृत्व वाली कार्यवाहक सरकार के कानूनी सलाहकार के रूप में कार्य किया।

आह्वान इस साल दुनियाभर के नेताओं ने वैश्विक शासन में बदलाव और सतत कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी समझौते पर हस्ताक्षर किए।

संयुक्त राष्ट्र 2024: वैश्विक संघर्षों के बीच भारत ने संरा में बदलाव का आह्वान किया

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा, यह ज्ञात तथ्य है कि 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए ऐसे समस्या-समाधान तंत्र की आवश्यकता है जो अधिक प्रभावी और समावेशी हो। हम अपनी पुरानी पीढ़ियों के लिए बनाए गए तंत्र से अपनी भावी पीढ़ियों के लिए उपयुक्त भविष्य नहीं बना सकते। सुरक्षा परिषद की स्थायी एवं अस्थायी श्रेणियों में विस्तार समेत इसमें सुधार के लिए वर्षों से किए जा रहे प्रयासों में भारत अग्रणी रहा है।

प्रात : किरण, एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र के अगले साल अपनी 80वीं वर्षगांठ पूरी करने के बीच भारत इस बात पर जोर दे रहा है कि वर्तमान एवं भविष्य की वैश्विक चुनौतियों से निपटने में संगठन की प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए इसमें सुधार करना महत्वपूर्णहै। इस साल दुनियाभर के नेताओं ने वैश्विक शासन में बदलाव और सतत कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वाकांक्षी समझौते पर हस्ताक्षर किए। जब विश्व के नेता सितंबर में महासभा के उच्च स्तरीय 79वें सत्र के लिए संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एकत्र हुए, तो उन्होंने ऐतिहासिक भविष्य की संधि को सर्वसम्मति से अपनाया। इस दस्तावेज में शांति और सुरक्षा, सतत विकास से लेकर जलवायु परिवर्तन, डिजिटल सहयोग, मानवाधिकार, लैंगिक मामलों, युवा एवं भावी पीढ़ियों तथा वैश्विक शासन में परिवर्तन से जुड़े विषयों को शामिल किया गया है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करते हुए कहा, यह ज्ञात तथ्य है कि 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए ऐसे समस्या-समाधान तंत्र की आवश्यकता है जो अधिक प्रभावी और समावेशी हो। हम अपनी पुरानी पीढ़ियों के लिए बनाए गए तंत्र से अपनी भावी पीढ़ियों के लिए उपयुक्त भविष्य नहीं बना सकते। सुरक्षा परिषद की स्थायी एवं अस्थायी श्रेणियों में विस्तार समेत इसमें सुधार के लिए वर्षों से किए जा रहे प्रयासों में भारत अग्रणी रहा है। भारत का कहना है कि 1945 में स्थापित 15 देशों की परिषद 21वीं सदी के उद्देश्यों के लिए उपयुक्त नहीं है और यह समकालीन भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करती। भारत ने इस बात को रेखांकित किया है कि वह परिषद में स्थायी स्थान का सही मायनों में हकदार है।

ध्रुवीकृत सुरक्षा परिषद वर्तमान चुनौतियों से निपटने में विफल रही है तथा परिषद के सदस्य यूक्रेन युद्ध एवं इजराइल-हमास युद्ध जैसे संघर्षों पर विभाजित हैं। गुतारेस ने कहा कि आज जो ज्वलंत मुद्दे हैं, उनमें से कई की कल्पना 1945 में संयुक्त राष्ट्र के बहुपक्षीय ढांचे के निर्माण के समय नहीं की गई थी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र के भविष्य के शिखर सम्मेलन में अपने संबोधन के दौरान कहा, सुधार प्रासंगिकता की कुंजी है। वैश्विक कार्रवाई वैश्विक महत्वाकांक्षा से मेल खानी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र महासभा के मंच से मोदी ने ऐसे समय में परिवर्तन का आह्वान किया, जब दुनिया रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-हमास युद्ध एवं आतंकवाद, जलवायु संकट, आर्थिक असमानता और महिलाओं के अधिकारों पर हमलों समेत कई संघर्षों से जूझ रही है। इन वैश्विक चुनौतियों के बीच भारत ने समाधान तक पहुंचने और संघर्षों को सुलझाने के लिए बातचीत और कूटनीति की लगातार वकालत की है। आतंकवाद 2024 में भी वैश्विक स्तर पर शांति और सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बना रहेगा। सितंबर में महासभा के दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर के संबोधन ने भारत के एक मजबूत रुख को दशार्या। उन्होंने पाकिस्तान को चेतावनी देते हुए कहा कि पड़ोसी देश की सीमा-पार आतंकवाद की नीति कभी सफल नहीं होगी और उसे अपने कृत्यों के परिणामों का निश्चित तौर पर सामना करना होगा। शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने की संयुक्त राष्ट्र की क्षमता जांच के दायरे में है क्योंकि इसकी सुरक्षा परिषद ध्रुवीकरण से जूझ रही है और अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने में विफल रही है।

पाकिस्तान एक जनवरी 2025 से दो साल के कार्यकाल के लिए गैर-स्थायी सदस्य के रूप में सुरक्षा परिषद में शामिल होगा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि पाकिस्तान अपने इस कार्यकाल का उपयोग जम्मू-कश्मीर के मुद्दे को उठाने के लिए करेगा। विश्व निकाय को 2025 में डोनाल्ड ट्रंप की अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में पुनः वापसी के कारण भी अनिश्चितताओं का सामना करना पड़ सकता है। ट्रंप को संयुक्त राष्ट्र की आलोचना करने के लिए जाना जाता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129